www.iu.edu.sa

सऊदी अरब
उच्च शिक्षा मंत्रालय
इस्लामिक विश्वविद्यालय
(मदीना मुनव्वरा)
वैज्ञानिक अनुसंधान संस्था
अनुवाद भाग

ईमान के अरकान

हिन्दी अनुवाद

सईद अहमद हयात मुशर्रफ़ी
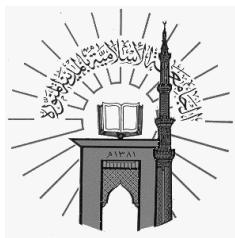
المملكة العربية السعودية
وزارة التعليم العالي
الجامعة الإسلامية بالمدينة المنورة
عمادة البحث العلمي
قسم الترجمة

www.iu.edu.sa

أركان الإيمان

ترجمه باللغة الهندية

سعيد أحمد حياة المشرّفي الهندي

بسم الله الرحمن الرحيم

दौ शब्द

الحمد لله والصلوة والسلام على من لا نبيّ بعده، نبينا محمد بن عبد الله، صلى الله عليه وسلّم، وبعد :

इस्लामी शिक्षाओं के प्रचार और प्रसार का, इस्लाम की हक़ीक़त और वास्तविक्ता को बयान करने, धर्म के अरकान अथवा स्तम्भों को मजबूत और ठोस बनाने, तथा उम्मत को प्रगति के पथ पर लाने में महान् प्रभाव रहा है। यही वह पवित्र लक्ष्य और उद्देश्य है जिस की प्राप्ति के लिये **इस्लामिक विश्वविद्यालय**, निमंत्रण एवं शिक्षा (दावत व तबलीग़) के द्वारा प्रयत्न कर रही है। इसी लक्ष्य की प्राप्ति में भाग लेते हुये, विश्वविद्यालय के «***वैज्ञानिक अनुसंधान संस्था***» ने बहुत सारे बामक़्सद वैज्ञानिक प्रोजेक्ट की तैयारी तथा योजना बनाने का काम आरम्भ किया है।

इसी में से एक काम इस्लाम तथा उसके गुणों के विषय में ठोस अनुसंधान अथवा किताब तैयार करना, और उसका प्रसार करना है। इस का उद्देश्य यह है कि इस्लामी समुदाय और समाज के लोगों को, इस्लाम तथा उसके अक़ीदा और क़ानून (अर्थात आस्था और शास्त्रा) के विषय में सत्य और ठोस जानकारी दी जाये।

(ईमान के अरकान) के बारे में यह किताब भी «संस्था» की वैज्ञानिक योजनाओं का एक अंश है। «संस्था» ने, विश्वविद्यालय के कुछ अध्यापकों से इस विषय में लिखने के लिये अनुरोध किया। फिर जो कुछ उन्होंने लिखा, «संस्था» ने

उसको अपनी «वैज्ञानिक कमेटी» को सोंप दिया। ताकि वह उसका संशोधन करे, और किसी भी प्रकार की कमी को पूरा करके, तथा वैज्ञानिक प्रसंगों को क़ुरआन व हदीस के प्रमाणों और तर्कों से जोड़ कर, उसको उचित रूप में निकाल सके।

इस किताब अथवा अनुसंधान के द्वारा, «संस्था» की यह लालस और आंकांक्षा है कि इस्लामी विश्व के लोग, लाभदायक दीनी व धार्मिक शिक्षा प्राप्त कर सकें। इसी लिये उस ने इसका अनुवाद दुनिया की अनैक भाषाओं में करके प्रसार किया है। और उसको इन्टरनेट (Internet) पर उतारा है।

हमारी अल्लाह तआला से, सऊदी अरब की सरकार के लिये दुआ है कि वह, इस्लाम की सेवा, और उसके प्रचार व प्रसार, तथा उसकी रक्षा करने में, जो महान कोशिश और प्रयत्न कर रही है, इसी प्रकार इस विश्वविद्यालय को उस की तरफ़ से जो सहायता और संरक्षण हासिल और प्राप्त है, उस पर अल्लाह तआला इस सरकार को अच्छा और पूरा पूरा पुण्य और बदला दे।

हम यह भी दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला, लोगों को इस किताब के द्वारा लाभ पहुँचाये। और -अपनी कृपा और अनुकंपा से- «संस्था» के शैष वैज्ञानिक योजनाओं को पूरा करने की तौफ़ीक़ दे!

इसी प्रकार हमारी यह भी दुआ है कि अल्लाह तआला हमें उन चीज़ों के करने की तौफ़ीक़ दे जिनको वह पसँद फ़रमाता, और जिन से प्रसन्न तथा खुश होता है। और हमें **हिदायत** (अर्थात सीधे और सत्य रास्ता) की तरफ़ दावत अथवा निमंत्रण देने वाला, तथा हक़ का सहायक बनाये!

वैज्ञानिक अनुसंधान संस्था

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ईमान के छः अरकान (अर्थातः स्तम्भ) हैं, जो निम्नलिखित हैंः

- अल्लाह तआला पर ईमान लाना।
- अल्लाह तआला के फ़रिश्तों पर ईमान लाना।
- अल्लाह तआला की किताबों पर ईमान लाना।
- अल्लाह तआला के रसूलों पर ईमान लाना।
- आख़िरत (क़्यामत अथवा प्रलय) के दिन पर ईमान लाना।
- अच्छी-बुरी क़िस्मत(भाग्य) पर ईमान लाना।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ وَلَٰكِنَّ ٱلۡبِرَّ مَنۡ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَٱلۡيَوۡمِ ٱلۡأٓخِرِ وَٱلۡمَلَٰٓئِكَةِ وَٱلۡكِتَٰبِ وَٱلنَّبِيِّـۧنَ ﴾ (البقرة ١٧٧)

अनुवादः «लैकिन भलाई यह है कि मनुष्य, अल्लाह पर, आख़िरत (प्रलोक) के दिन पर, फ़रिश्तों पर, (आसमानी) किताबों पर, तथा नबियों पर ईमान रखे।» (बक़रः, आयतः 177)

अल्लाह तआला का और फ़रमान हैः

﴿ ءَامَنَ ٱلرَّسُولُ بِمَآ أُنزِلَ إِلَيۡهِ مِن رَّبِّهِۦ وَٱلۡمُؤۡمِنُونَۚ كُلٌّ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَمَلَٰٓئِكَتِهِۦ وَكُتُبِهِۦ وَرُسُلِهِۦ لَا نُفَرِّقُ بَيۡنَ أَحَدٖ مِّن رُّسُلِهِۦۚ ﴾ (البقرة ٢٨٥)

अनुवादः «रसूल उस चीज़ पर ईमान ले आये जो उनकी ओर अल्लाह तआला की तरफ़ से उतारी गयी, और मुसलमान भी ईमान ले आये। वह सब अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों तथा उसके रसूलों पर ईमान लाये। (वह कहते हैं): हम उसके रसूलों में से किसी के बीच मतभेद नहीं करते।» (बक़रः, आयतः 285)

अल्लाह तआला का और फ़रमान हैः

﴿ إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾ ﴾ (القمر ٤٩)

अनुवादः «हम ने हर चीज़ को एक ख़ास अनुमान के साथ पैदा किया है।» (क़मर, आयतः 49)

और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का फ़रमान हैः

(الإيمان أن تؤمن بالله وملائكته وكتبه ورسله واليوم الآخر وتؤمن با لقدر خيره وشرّه) [رواه مسلم]

अनुवादः (ईमान का अर्थ यह है कि तुम, अल्लाह पर, उसके फ़रिश्तों , उसकी किताबों , उसके रसूलों, आख़िरत (क़्यामत) के दिन तथा अच्छी-बुरी क़िस्मत (भाग्य) पर ईमान रखो।) (सहीह मुस्लिम)

❀ "ईमान" की परिभाषाः

"ईमान", नाम है "ज़बान से कहने, दिल से मानने, और (उसके अनुसार) हाथ-पैर आदि द्वारा से (नैक) काम करने का"।

(ईमान) फ़रमाँबरदारी से बढ़ता और बुराई करने से घटता है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया हैः

﴿ إِنَّمَا ٱلۡمُؤۡمِنُونَ ٱلَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ ٱللَّهُ وَجِلَتۡ قُلُوبُهُمۡ وَإِذَا تُلِيَتۡ عَلَيۡهِمۡ ءَايَٰتُهُۥ زَادَتۡهُمۡ إِيمَٰنٗا وَعَلَىٰ رَبِّهِمۡ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٢﴾ ٱلَّذِينَ يُقِيمُونَ ٱلصَّلَوٰةَ وَمِمَّا رَزَقۡنَٰهُمۡ يُنفِقُونَ ﴿٣﴾ أُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡمُؤۡمِنُونَ حَقّٗاۚ لَّهُمۡ دَرَجَٰتٌ عِندَ رَبِّهِمۡ وَمَغۡفِرَةٞ وَرِزۡقٞ كَرِيمٞ ﴿٤﴾

(الأنفال ٢- ٤)

अनुवादः «बस ईमान वाले ही ऐसे होते हैं कि, जब अल्लाह तआला का बयान (वर्णन) होता है, तो उनके दिल डर से काँप जाते हैं। और जब उसकी आयतें उन पर पढ़ी जाती हैं, तो यह उनके ईमान को बढ़ा देती हैं। और वह केवल अपने रब (पालनहार) पर ही भरोसा करते हैं। वह नमाज़ पढ़ते हैं। और हमारी दी हुई रोज़ी में से ख़र्च करते हैं। यही लोग सच्चे मुमिन हैं। उनके लिये उनके रब के पास बड़े मर्तबे और बख़्शिश तथा सम्मान की रोज़ी है।» (अनफाल, आयातः 2-4)

अल्लाह तआला का और फ़रमान हैः

﴿ وَمَن يَكۡفُرۡ بِٱللَّهِ وَمَلَٰٓئِكَتِهِۦ وَكُتُبِهِۦ وَرُسُلِهِۦ وَٱلۡيَوۡمِ ٱلۡأٓخِرِ فَقَدۡ ضَلَّ ضَلَٰلَۢا بَعِيدًا ﴿١٣٦﴾ ﴾ (النساء ١٣٦)

अनुवादः «और जो व्यक्ति अल्लाह तआला, उसके फ़रिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों को न माने तो वह बहुत बड़ा गुमराह आदमी है।» (निसा, आयतः 136)

ईमान, ज़बान के द्वारा भी होता है। जैसेः जिक्र करना, दुआ करना, अच्छी बातों का हुक्म, तथा बुरी बातों से रोकना, और कुरआन पढ़ना आदि०००।

और **ईमान** दिल के द्वारा भी होता है, जैसेः अल्लाह तआला का अपनी **[उलूहिय्यत]** (माबूद होने) और **[रुबूबिय्यत]** (पालनहार होने) तथा अपने नाम और सिफ़ात (गुण तथा विशेषता) में अकेले होने का यक़ीन और विश्वास रखना। और इसी प्रकार इस बात का विश्वास रखना कि इबादत और उपासना तथा वह नीति और उद्देश्य जो इस में आते हैं, वह केवल अल्लाह के लिये वाजिब हैं।

इसी प्रकार ईमान के अन्दर दिल के कार्य भी दाख़िल हैं। जैसेः अल्लाह की मुहब्बत, उस से ख़ौफ़ तथा डर, तौबा और भरोसा आदि...।

इसी तरह उस में जवारिह (यानी इंद्रियाँ, अर्थातः हाथ-पैर, आँख, ज़बान...आदि) के कार्य भी दाख़िल हैं। जैसेः नमाज़, रोज़ा (वृत), हज्ज, ज़कात एवं अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना, तथा ज्ञान प्राप्त करना इत्यादि।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ ءَايَـٰتُهُۥ زَادَتْهُمْ إِيمَـٰنًا ﴾ (الأنفال ٢)

अनुवादः «जब उन पर अल्लाह की आयतें पढ़ी जाती हैं, तो वह उनके ईमान को और बढ़ा देती हैं।» (अनफाल, आयतः 2)

अल्लाह तआला का और फ़रमान हैः

﴿ هُوَ ٱلَّذِىٓ أَنزَلَ ٱلسَّكِينَةَ فِى قُلُوبِ ٱلْمُؤْمِنِينَ لِيَزْدَادُوٓا۟ إِيمَـٰنًا مَّعَ إِيمَـٰنِهِمْ ﴾ (الفتح: الآية ٤)

अनुवादः «वही है जिस ने मुसलमानों के दिल में शांती डाली, ताकि वह अपने ईमान में और बढ़ जायें।» (फतह, आयतः 4)

जैसे-जैसे बन्दे की फ़रमाँबरदारियाँ बढ़ती हैं, वैसे-वैसे उसका ईमान भी बढ़ता है। और जैसे- जैसे उसकी

नाफ़रमानियाँ बढ़ती हैं, वैसे-वैसे उसका ईमान भी कम होता चला जाता है।

इसी प्रकार ईमान पर बुरे काम भी प्रभाव डालते हैं। अगर वह बुरा काम "महा शिर्क" या "महा कुफ्र" है तो वह ईमान को जड़ से ही तोड़ फेंकता है। और अगर उस से कम बुरा काम है तो वह उसी हिसाब से ईमान पर प्रभाव डालता है। अथवा ईमान को कमज़ोर, और उसके रौशन चैहरे को गदला कर देता है। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَغۡفِرُ أَن يُشۡرَكَ بِهِۦ وَيَغۡفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَآءُۚ ﴾

(النساء: الآية ٤٨)

अनुवादः «अल्लाह तआला शिर्क को क्षमा नहीं कर सकता, उसके अतिरिक्त (गुनाहों) को, जिसके लिये चाहे बख़्श सकता है।» (निसा, आयतः 48)

अल्लाह तआला का और फ़रमान हैः

﴿ يَحۡلِفُونَ بِٱللَّهِ مَا قَالُواْ وَلَقَدۡ قَالُواْ كَلِمَةَ ٱلۡكُفۡرِ وَكَفَرُواْ بَعۡدَ إِسۡلَٰمِهِمۡ ﴾ (التوبة: الآية ٧٤)

अनुवादः «यह अल्लाह की क़सम (सौगन्ध) खाकर कहते हैं, कि उन्होंने नहीं कहा, हालाँकि उन्होंने कुफ्र वाली बात कही है, और इस्लाम ले आने के बाद वह दौबारा काफ़िर हो चुके हैं।» (तौबः, आयतः 74)

और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का फ़रमान हैः

(لا يزني الزاني حين يزني وهو مؤمن، ولا يسرق السّارق حين يسرق وهو مؤمن، ولا يشرب الخمر حين يشربها وهو مؤمن) [متفق عليه]

अनुवादः (जब ज़िनाकार (बलात्कार करने वाला) ज़िना करता है तो वह मुमिन नहीं होता, और जब चौर चौरी करता है, तो वह मुमिन नहीं होता, इसी प्रकार जब शराबी शराब पीता है तो वह मुमिन नहीं रहता।) (बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़)

ईमान का पहला रुक्न

अल्लाह तआला पर ईमान

(1)

अल्लाह तआला पर ईमान की हक़ीक़तः

अल्लाह तआला पर ईमान निम्नलिखित चीज़ों से सिद्ध होता हैः

❀ पहली चीज़ः

यह अक़ीदा (विश्वास) रखना कि इस जहाँ का एक ही रब है। केवल उसी ने इस को पैदा किया, वही इस का मालिक है, वही इस को चलाता है। रोज़ी देना, कुदरत रखना, करना, जिलाना, मारना, लाभ अथवा हानि (नुक़्सान) पहुँचाना, सब उसी के हाथ में है। उसके सिवाय कोई हक़ीक़ी पालनहार नहीं। वही अकेला जो काम, अथवा निर्णय (फैसला) करना चाहता है, करता है। जिसको चाहता है मान (इज़्ज़त) देता है, और जिसको चाहता है, अपमान कर देता है। ज़मीन व आकाशों की बादशाहत उसी के हाथ में है। वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है, और हर चीज़ को जानता है। वह हर चीज़ से बेनियाज़ है। सारा काज उसी का है। उसी के हाथ में सारी ख़ैर-भलाई है। उसके कामों में कोई शरीक नहीं। और उसके इरादे (निश्चय) पर कोई ग़ालिब नहीं आ सकता। फ़रिश्तों, जिन्न और इन्सानों समैत सारी मख़्लूक़ (सृष्टि) उसकी गुलाम (दास) है। वह सब, अल्लाह के आधीन हैं। सब पर उसकी कुदरत और इरादा तथा इच्छा चलती है।

अल्लाह तआला के कार्य अनगिनत हैं। यह सारी विशेषतायें केवल अल्लाह का हक़ हैं। उसके अतिरिक्त कोई भी उनमें, उसका साझी नहीं है। और इन विशेषताओं में से, अल्लाह तआला के अलावा किसी अन्य के लिये, किसी एक विशेषता को भी साबित अथवा निस्बत करना जायज़ नहीं है। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱعۡبُدُواْ رَبَّكُمُ ٱلَّذِي خَلَقَكُمۡ وَٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ ٢١ ٱلَّذِي جَعَلَ لَكُمُ ٱلۡأَرۡضَ فِرَٰشٗا وَٱلسَّمَآءَ بِنَآءٗ وَأَنزَلَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءٗ فَأَخۡرَجَ بِهِۦ مِنَ ٱلثَّمَرَٰتِ رِزۡقٗا لَّكُمۡۖ ﴾ (البقرة ٢١- ٢٢)

अनुवादः ❝ऐ लोगो! अपने उस रब की उपासना करो जिसने तुम को, और तुम से पहले वाले लोगों को पैदा किया, ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ। जिसने ज़मीन को तुम्हारे लिये बिस्तर और आकाश को छत बनाया, और आसमान से पानी बरसाया, जिस से भाँत-भाँत के फ़लों को तुम्हारे लिये रोज़ी बना कर निकाला ०००।❞ (बक़रः, आयातः 21-22)

अल्लाह तआला का और फ़रमान हैः

﴿ قُلِ ٱللَّهُمَّ مَٰلِكَ ٱلۡمُلۡكِ تُؤۡتِي ٱلۡمُلۡكَ مَن تَشَآءُ وَتَنزِعُ ٱلۡمُلۡكَ مِمَّن تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَن تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَن تَشَآءُۖ بِيَدِكَ ٱلۡخَيۡرُۖ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٞ ٢٦ ﴾ (آل عمران ٢٦)

अनुवादः ❝(ऐ मुहम्मद) आप कहिये कि, ऐ बादशाहत के मालिक! तु जिस को चाहता है बादशाहत देता है। और जिस से चाहता है, बादशाहत छीन लेता है। तु जिस को चाहता है मान देता है और जिस को चाहे अपमान कर देता है। सारी ख़ैर- भलाई तेरे हाथ में है। निःसंदेह, तु हर चीज़ पर क़ुदरत (शक्ति) रखता है।❞ (आले इमरान, आयतः 26)

इसी प्रकार अल्लाह का और फ़रमान हैः

﴿ وَمَا مِن دَآبَّةٍ فِى ٱلْأَرْضِ إِلَّا عَلَى ٱللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ۚ كُلٌّ فِى كِتَٰبٍ مُّبِينٍ ۝٦ ﴾ (هود ٦)

अनुवादः "ज़मीन में जो भी प्राणी है, उसकी रोज़ी अल्लाह पर है। वह उसके रहने के स्थान को भी जानता है। तथा उसको कहाँ जाना है, यह भी जानता है। यह सब (चीज़ें) खुली किताब (लोहे महफूज) में मौजूद हैं।" (हूद, आयतः 6)

अल्लाह का और फ़रमान है :

﴿ أَلَا لَهُ ٱلْخَلْقُ وَٱلْأَمْرُ ۗ تَبَارَكَ ٱللَّهُ رَبُّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴾ (الأعراف ٥٤)

अनुवादः "सुन लो! उसी के हाथ में पैदा करना और (सारे) आदेश हैं। दोनों जहान का पालनहार (यानी, अल्लाह तआला) बड़ा ही शुभः है।" (आराफ़, आयतः 54)

❁ दूसरी चीज़ः

यह अक़ीदा रखना कि अल्लाह के बहुत ही अच्छे - अच्छे नाम और विशेषतायें (सिफ़तें) हैं। उन में उसका कोई शरीक नहीं। इन में से कुछ को अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के लिये कुरआन शरीफ में, या हमारे नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के द्वारा हदीस शरीफ़ में बता दिया है।

अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ وَلِلَّهِ ٱلْأَسْمَآءُ ٱلْحُسْنَىٰ فَٱدْعُوهُ بِهَا ۖ وَذَرُوا۟ ٱلَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِىٓ أَسْمَٰٓئِهِۦ ۚ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ۝١٨٠ ﴾ (الأعراف ١٨٠)

अनुवादः "अल्लाह तआला के बहुत प्यारे-प्यारे नाम हैं। अतः तुम अल्लाह को उन्हीं के द्वारा पुकारो। और छोड़ो उन लोगों को जो उसके नामों में "इल्हाद" (टेढ़ापन) करते हैं। उनको

उनके कर्मों का फल व बदला मिल जायेगा।❞ (आराफ़, आयतः180)

और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः

(إن لله تسعة وتسعين اسما، من أحصاها دخل الجنّة، وهو وتر يحب الوتر) [متفق عليه]

अनुवादः (अल्लाह तआला के निन्नानवे (99) नाम हैं। जिस ने उन को गिन लिया (अथवा उनको याद किया और उन के अनुसार अमल किया) वह जन्नत (स्वर्ग) में दाख़िल हो गया। और अल्लाह तआला विषम (तन्हा, अकेला) है। और विषमता को ही वह पसँद करता है।) (बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़)

❈ इस अक़ीदे की दो बहुत बड़ी बुनियादें हैंः

पहली बुनियादः अल्लाह के प्यारे-प्यारे नाम, और बहुत बुलन्द (आला) सिफ़तें हैं। यह अल्लाह तआला के कमाल पर दलालत करती हैं। मख़्लूक़ में से न तो कोई इन सिफ़तों में उस जैसा है, और न कोई उसका उनमें शरीक व साझी है। और न ही उन में किसी प्रकार की कोई कमी है।

उदाहरण के तौर पर अल्लाह का एक नाम (**حيّ**) (ज़िन्दा रहने वाला) है। और "ज़िन्दा रहना" उस की सिफ़त है। इस सिफ़त को अल्लाह के लिये इस प्रकार साबित किया जाना चाहिये जैसे उस के लिये मुनासिब (अथवा उचित) है। और पूरे तौर से साबित किया जाना चाहिये। (अल्लाह की यह) ज़िन्दगी (हर प्रकार से) पूर्ण और सदैव रहने वाली है। कमाल के सारे प्रकार इस में जमा हैं। जैसे, ज्ञान, कुद्रत, आदि...। और यह ज़िन्दगी हमैशा से है और हमैशा रहेगी। अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ ٱللَّهُ لَآ إِلَـٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْحَىُّ ٱلْقَيُّومُ ۚ لَا تَأْخُذُهُۥ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ ۚ .. ﴾ [البقرة، الآية: ٢٥٥]

अनुवादः “अल्लाह ही केवल सच्चा माबूद है। वही सदैव ज़िन्दा रहने वाला है। वही सब का सहायक आधार है। उसको न ऊँघ आती है, और न नींद ०००।” (बक़रः, आयतः 255)

दूसरी बुनियादः निःसंदेह अल्लाह तआला हर प्रकार के दोष एवं नक़्स से पाक है। उदाहरण के तौर पर, जैसेः सोना, आजिज़ (विवस) होना, न जानना, तथा जुल्म (अत्याचार) करना आदि०००।

इसी प्रकार अल्लाह तआला इस से भी पाक है कि मख़्लूक़ में से कोई उस जैसी सिफ़त वाला हो।

अतः जिस चीज़ को अल्लाह ने अपने लिये साबित नहीं किया, अथवा उसके रसूल ने साबित नहीं किया, तो हम पर भी वाजिब है कि हम भी उस चीज़ को अल्लाह के लिये साबित न करें। साथ ही यह अक़ीदा भी रखें कि जिस चीज़ की, अल्लाह से नफ़ी (इनकार) की गयी है, उसके मुक़ाबिल (Apposite) जो चीज़ है, वह अल्लाह तआला के अन्दर पूर्ण रूप से पाई जाती है।

अतः अल्लाह तआला से ऊँघ की नफ़ी (इनकार) का अर्थ हुआ कि, वह अति सहायक है। और नींद की नफ़ी का अर्थ हुआ कि उसकी ज़िन्दगी सम्पूर्ण ज़िन्दगी है।

अतः अल्लाह तआला से किसी भी चीज़ की नफ़ी का अर्थ हुआ की उसके मुख़ालिफ़ (Apposite) वाली चीज़, अल्लाह तआला के अन्दर पूरी तरह से पाई जाती है।

इसलिये अल्लाह ही कामिल और पूर्ण है। और उसके सिवाय सब नाक़िस अर्थात अपूर्ण हैं। अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿... لَيْسَ كَمِثْلِهِۦ شَىْءٌ ۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْبَصِيرُ ﴿١١﴾ ﴾

[الشورى، الآية: ١١].

अनुवाद : "उस (अर्थात अल्लाह) की तरह कोई चीज़ नहीं है, और वह बहुत सुनने वाला और बहुत देखने वाला है।"

(शूरा, आयतः 11)

अल्लाह तआला का और फ़रमान हैः

﴿ ... وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّٰمٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٤٦﴾ ﴾ [سورة فصلت، الآية: ٤٦].

अनुवादः "तेरा रब बन्दों पर बिल्कुल जुल्म नहीं करता।"

(फ़ुस्सिलत, आयतः 46)

इसी तरह अल्लाह का और फ़रमान हैः

﴿ ... وَمَا كَانَ ٱللَّهُ لِيُعْجِزَهُۥ مِن شَيْءٍ فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَلَا فِي ٱلْأَرْضِ ... ﴾ [فاطر، الآية ٤٤]

अनुवादः "अल्लाह तआला को ज़मीन व आसमान के अन्दर कोई चीज़ आजिज़ (विवस) नहीं कर सकती।"

(फातिर, आयतः 44)

इसी प्रकार अल्लाह का और फ़रमान हैः

﴿ ... وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾ ﴾ [مريم، الآية: ٦٤].

अनुवाद : "तेरे रब से भूल चूक नहीं हो सकती।"

(मर्यम, आयतः 64)

अल्लाह तआला के नामों और सिफ़तों पर ईमान रखना ही केवल वह रास्ता है, जिस के द्वारा अल्लाह को, और उसकी इबादत करने के उपाय को जाना जा सकता है।

क्योंकि अल्लाह तआला इस दुनिया में तो अपनी मख़्लूक़ को नजर आ नहीं सकता, इस लिये अल्लाह ने अपनी पहचान की ख़ातिर ज्ञान के इस अध्याय को खुला रखा है। ताकि वह (अर्थात मख़्लूक़) इस बाब (अध्याय) के द्वारा अपने रब, माबूद

और अपने पूज्य के बारे में ज्ञान हासिल कर सके। और इस सहीह ज्ञान के मुताबिक़ उसकी इबादत (उपासना) कर सके।

क्योंकि हर आबिद (उपासना करने वाला) अपने मौसूफ़ (वर्णित) की ही उपासना करता है। **"मुअत्तिल"** (अर्थात जो अल्लाह के लिये सिफ़त नहीं मानता) "अदम" (हीनता) की उपासना करता है। और **"मुमस्सिल"** (अर्थात जो अल्लाह को मख़्लूक़ से सरुप देता है) बुत की पूजा करता है। अतः मुसलमान ही उस अकेले बेनियाज़ अल्लाह की उपासना करता है जिसने न किसी को जन्म दिया, और न वह जन्म दिया गया। और जिसके समान कोई नहीं।

❁ अल्लाह के नामों और सिफ़तों को साबित करते समय निम्नलिखित चीज़ों को ध्यान में रखना चाहियेः

➢ यह ईमान रखना कि जो अल्लाह के नाम, क़ुरआन व हदीस में आये हैं, वह सब अल्लाह के लिये साबित हैं। उन में न कोई कमी की जा सकती है, और न ही बढ़ोतरी की जा सकती है। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

ا هُوَ ٱللَّهُ ٱلَّذِى لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْمَلِكُ ٱلْقُدُّوسُ ٱلسَّلَٰمُ ٱلْمُؤْمِنُ ٱلْمُهَيْمِنُ ٱلْعَزِيزُ ٱلْجَبَّارُ ٱلْمُتَكَبِّرُ ۚ سُبْحَٰنَ ٱللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٢٣﴾

[الحشر، الآية: ٢٣].

अनुवाद : ❝वही अल्लाह है जिसके अलावा कोई सच्चा माबूद नहीं। वह बादशाह है, अत्यन्त पाक, सभी दोषों से पवित्र, शांती देने वाला, सब पर ग़ालिब, रक्षक, शक्तिशाली, तथा महान है। पाक है अल्लाह उन चीज़ों से जिन्हें यह उसका साझीदार ठहराते हैं।❞ (हश्र, आयतः 23)

हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने एक आदमी को (यह) कहते हुये सुनाः

(اللهم إني أسألك بأن لك الحمد لا إله إلا أنت المنّان بديع السماوات والأرض يا ذا الجلال والإكرام يا الحيّ يا القيّوم) فقال النبيّ صلّى اللّه عليه وسلّم: تدرون بما دعا اللّه ؟ قالوا: الله ورسوله أعلم، قال: والذي نفسي بيده لقد دعا اللّه باسمه الأعظم، الذي إذا دعي به أجاب، وإذا سئل به أعطى)
[رواه أبو داود وأحمد]

अनुवाद : "ऐ अल्लाह मैं तुम से यह सामीप्य देकर माँगता हूँ कि हर प्रकार की प्रशंसा तेरे लिये है, तेरे अलावा कोई सच्चा माबूद नहीं, तू बहुत बड़ा उपकार करने वाला है। आकाश व ज़मीन को बिना किसी नमूने के पैदा करने वाला है। ऐ महानता व सम्मान वाले! ऐ हमैशा ज़िन्दा रहने वाले! ऐ सब के सहायक! (मैरी विनती सुन ले!)

यह सुनकर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः पता है उस ने किस चीज़ के द्वारा अल्लाह को पुकारा है? उन्होंने कहाः अल्लाह और उसके रसूल ही ज़ियादा (अधिक) जानते हैं। आप ने फ़रमायाः क़सम है उस जात की जिसके हाथ में मेरी जान है! उसने अल्लाह को उसके **"इस्मे आजम"** (उच्चतम नाम) से पुकारा है। इस नाम से जब अल्लाह को पुकारा जाता है, तो वह क़बूल करता है। और जब उसके द्वारा प्रश्न किया जाता है, तो पूरा करता है।"

(अबु दाऊद व अहमद)

➢ यह ईमान रखना कि अल्लाह ही ने अपने लिये यह नाम रखे हैं। मख़्लूक़ उसका कोई नया नाम नहीं रख सकती। अल्लाह ही ने इन नामों के द्वारा अपनी प्रशंसा की है। यह नाम न तो मख़्लूक़ (पैदा किये हुये) हैं, और न ही नये हैं।

➢ यह ईमान रखना कि यह नाम अपने अन्दर अर्थ रखते हैं, जो हर प्रकार से पूर्ण हैं। उनमें किसी भी रूप से कोई कमी नहीं है। अतः जिस प्रकार इन नामों पर ईमान रखना जरूरी है, इसी प्रकार उनके अर्थों पर भी ईमान रखना अवश्य और जरूरी है।

➢ इन नामों के अर्थ का आदर करना भी जरूरी है। तथा यह भी अनिवार्य है कि उनका ग़लत अर्थ न लिया जाये, और न ही उन के अर्थ को नकारा जाये।

➢ इन नामों से जो आदेश साबित होते हैं, इसी प्रकार जो कार्य एवं नतीजे (आसार) लाज़िम आते हैं,उन पर भी ईमान रखना जरूरी है।

इन पाँचों चीज़ों की व्याख्या के लिये हम अल्लाह तआला के एक नाम ﴿سميع﴾ (बहुत सुनने वाला) को उदाहरण के लिये लेते हैं।

❋ अतः इस नाम में निम्नलिखित चीज़ों को ध्यान मे रखना अनिवार्य हैः

क- यह ईमान रखना कि ﴿سميع﴾ अल्लाह का एक नाम है। क्योंकि यह कुरआन व हदीस में आया है।

ख- यह ईमान रखना कि ﴿سميع﴾ में सुनने की सिफ़त पाई जाती है। अतः "सुनना" अल्लाह की एक सिफ़त है।

ग- इस सिफ़त का आदर करना अनिवार्य है। न तो इसके अर्थ को बदला जाये, और न ही उसका इनकार किया जाये।

घ- यह ईमान रखना कि अल्लाह हर चीज़ को सुनता है। उसका सुनना सारी आवाज़ों को शामिल है। और यह ईमान रखने पर जो प्रभाव लाज़िम आता है, जैसे अल्लाह का हमैशा ध्यान रखना, उस से भयभीत रहना तथा डरना आदि॰॰॰, उस पर भी ईमान रखना अनिवार्य है। इसी प्रकार यह ईमान रखना कि अल्लाह तआला से कोई चीज़ छुप नहीं सकती।

❋ अल्लाह तआला की सिफ़तों को साबित करते समय निम्नलिखित चीज़ों को ध्यान में रखना चाहियेः

➢ कुरआन व हदीस में जो सिफ़तें आई हैं, उनको अल्लाह के लिये बग़ैर किसी **"तहरीफ़"** (*अर्थात ग़लत अर्थ लेना*) तथा बिना किसी **"तातील"** (*अर्थात अर्थ का इनकार करना*) के साबित करें।

➢ यह पक्का अक़ीदा रखें कि अल्लाह की सारी सिफ़तें कमाल श्रेणी की हैं। वह हर प्रकार के दोष एवं नक़्स की सिफ़त से पाक है।

➢ यह अक़ीदा रखें कि अल्लाह की सिफ़तों और उसकी मख़्लूक़ (सृष्टि) की सिफ़तों में कोई तुलना नहीं है। क्योंकि अल्लाह की सिफ़तों एवं कार्यों में उस जैसा कोई नहीं है।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ ... لَيْسَ كَمِثْلِهِۦ شَىْءٌۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْبَصِيرُ ﴿١١﴾ ﴾

[الشورى، الآية: ١١].

अनुवादः "उस (अल्लाह तआला) की तरह कोई नहीं है। और निःसंदेह वही सुनने वाला और देखने वाला है।"

(शूरा, आयतः 11)

➢ इन सिफ़तों की हक़ीक़त जानने से पूरी तरह निराश रहें। क्योंकि इन की हक़ीक़त अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता। तथा न ही कोई मख़्लूक़ उन की हक़ीक़त तक पहुँच सकती है।

➢ इन सिफ़तों से लाज़िम आने वाले आदेश तथा प्रभावों पर ईमान लाना। क्योंकि हर सिफ़त के लिये बन्दगी का एक उपाय है।

इन पाँचों चीज़ों की व्याख्या के लिये हम एक शब्द ﴿ **استواء** ﴾ (अर्थात अल्लाह तआला का अर्श पर स्थिर होना) को उदाहरण के तौर पर लेते हैं। अतः यह अल्लाह की एक सिफ़त है।

❁ **इसलिये इस सिफ़त में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना जरूरी है:**

क- इस सिफ़त को अल्लाह के लिये साबित करें, तथा उस पर ईमान रखें। क्योंकि यह सिफ़त कुरआन तथा हदीस शरीफ में आई है।

अल्लाह तआला का फ़रमान है:

﴿ ٱلرَّحۡمَٰنُ عَلَى ٱلۡعَرۡشِ ٱسۡتَوَىٰ ۝٥ ﴾ [طه، الآية: ٥].

अनुवाद: "रहमान (अत्यन्त दयालु, अर्थात अल्लाह तआला) अर्श पर स्थिर है।" (ताहा, आयत: 5)

ख- अल्लाह तआला के लिये इस सिफ़त को इस प्रकार पूर्ण रूप से साबित करें जिस प्रकार अल्लाह चाहता है।

इसका अर्थ यह है कि अल्लाह अपने अर्श (सिंहासन) पर हक़ीक़त में स्थिर है। जिस प्रकार उसको तथा उसकी बेनियाज़ी को मुनासिब और उचित है।

ग- अल्लाह तआला के अर्श (अर्थात सिंहासन) पर स्थिर होने और मख़्लूक़ के स्थिर होने में कोई तुलना नहीं है। क्योंकि अल्लाह तआला अर्श से बेनियाज़ है। तथा उसको उसकी कोई जरूरत व आवश्यकता नहीं है। जब कि मख़्लूक़ को उसकी आवश्यकता होती है।

अल्लाह का फ़रमान है:

﴿ ... لَيۡسَ كَمِثۡلِهِۦ شَيۡءٞۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلۡبَصِيرُ ۝١١ ﴾

[الشورى، الآية: ١١].

अनुवाद: "उस (अल्लाह तआला) की तरह कोई नहीं है। और निःसंदेह वही सुनने वाला और देखने वाला है।"

(शूरा आयत: 11)

घ- अल्लाह तआला अर्श पर किस प्रकार स्थिर है, हमें चाहिये कि इसकी हक़ीक़त का पता लगाने में न पड़ें। क्योंकि यह ग़ैब का मुआमला है, इसको केवल अल्लाह तआला ही जानता है।

ड़- उन आदेश व असर (प्रभाव अथवा नतीजे) पर भी ईमान रखें, जो इस सिफ़त पर लागू होते हैं, जैसे अल्लाह की महानता, उसकी बड़ाई तथा उसका घमंड -जो उसकी शान के मुनासिब और उचित- है, तथा जिसको, अल्लाह का अपनी सारी मख़्लूक़ (सृष्टि) से ऊँचा होना बताता है।

इसी प्रकार इस उच्चता पर, दिलों का उसकी ऊँचाई की कल्पना करके उसकी ओर मुड़ना भी दलालत करता है।
जैसा कि सज्दा करने वाला कहता हैः

(سبحان ربي الأعلى)

अनुवादः (पाक है मैरा रब जो सब से आला व बुलन्द है।)

❁ तीसरी चीज़ः

बन्दे का यह अक़ीदा रखना कि अल्लाह तआला ही सत्य माबूद है। वही तमाम जाहिरी तथा ढ़की छुपी उपासनाओं का हक़दार है। उसका उनमे कोई शरीक व साझीदार नहीं।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ ... ﴾ [النحل، الآية: ٣٦].

अनुवादः “निःसंदेह हम ने हर क़ौम में रसूल भेजे, ताकि वह उन से कहें कि केवल अल्लाह की उपासना करो और "तागूत" (असुर) से बचो।” (नहल, आयतः 36)

इसलिये प्रत्येक रसूल ने अपनी क़ौम से यही कहा किः

﴿ ٱعۡبُدُواْ ٱللَّهَ مَا لَكُم مِّنۡ إِلَٰهٍ غَيۡرُهُۥٓ ﴾ [الأعراف، الآية: ٥٩]

अनुवादः "ऐ लोगो! (केवल) अल्लाह की उपासना करो। उसके अलावा तुम्हारा कोई (सत्य) माबूद नहीं है।"

(आराफ, आयतः 59)

अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ وَمَآ أُمِرُوٓاْ إِلَّا لِيَعۡبُدُواْ ٱللَّهَ مُخۡلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ حُنَفَآءَ ... ﴾

[البينة، الآية: ٥].

अनुवादः "उनको केवल यह आदेश दिया गया था कि वह अल्लाह की उपासना, उसके लिये उसके दीन को ख़ालिस (निर्मल) करके, और सब चीज़ों से कट कर तथा अलग थलग होकर करें।" (बय्यिनः, आयतः 5)

सहीह *बुख़ारी* व सहीह *मुस्लिम* [हदीस की दो प्रसिद्ध व उच्चतम किताब] में आया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हजरत मुग्राज से फ़रमायाः क्या तुम जानते हो कि बन्दों पर अल्लाह का क्या हक़ है? हजरत मुग्राज ने कहाः अल्लाह और उसके रसूल ही ज़ियादा जानते हैं। आप ने फ़रमाया कि अल्लाह का हक़, बन्दों पर यह है कि वह केवल उसी की उपासना करें। उसके साथ किसी अन्य को शरीक न करें। तथा बन्दों का हक़, अल्लाह पर यह है कि वह उस व्यक्ति को अजाब (यातना) न दे जो उसके साथ किसी को शरीक नहीं करता।

❁ हक़ीक़ी माबूद कोन है?

हक़ीक़ी माबूद वह है जिसकी उपासना दिल करें। सारी चीज़ों की मुहब्बत छोड़ कर केवल अल्लाह की मुहब्बत से वह (दिल) भरे रहें। सब से उम्मीद तोड़ कर केवल अल्लाह की

उम्मीद से सम्बन्ध रखे रहें। और सब को छोड़ कर केवल उसी से भीक, मदद व सहायता माँगें, तथा उसी से डर खायें। अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ ذَٰلِكَ بِأَنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِۦ هُوَ ٱلْبَٰطِلُ وَأَنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلْعَلِيُّ ٱلْكَبِيرُ ﴿٦٢﴾ ﴾ [الحج، الآية: ٦٢].

अनुवादः "यह सब इसलिये कि अल्लाह ही सत्य है, तथा उसके अलावा जिसे भी यह पुकारते हैं वह असत्य है। निःसंदेह अल्लाह तआला बहुत बड़ा व बहुत बुलन्द है।"

(हज्ज, आयतः 62)

इसी का नाम है अल्लाह को बन्दों के कार्यों के द्वारा एक जानना।

❁ तौहीद की मूल्यता और उसका महत्वः

इस तौहीद (ऐकेश्वरवाद) की मूल्यता निम्नलिखित पंक्तियों से प्रकट होती हैः

➢ दीन की पहली, आख़िरी तथा जाहिरी व ढ़की चीज़ यही (तौहीद) है। और सारे रसूलों की यही दावत थी।

➢ इसी तौहीद के कारण अल्लाह ने मख़्लूक़ पैदा की, रसूल भेजे तथा किताबें उतारीं। इसी की वजह से मख़्लूक़ में मतभेद हुआ, और मुसलमान व काफ़िर तथा शुभः व अशुभः (भाग्यशाली व दुर्भाग्यशाली) में बट गयी।

➢ बन्दे पर सब से पहला वाजिब यही है। यही वह पहली चीज़ है जिसके द्वारा बन्दा इस्लाम में दाख़िल होता है, तथा यही वह आख़िरी चीज़ है जिसको लेकर बन्दा इस दुनिया से (आख़िरत की ओर) सुधार जाता है।

❀ **तहक़ीके तौहीद (तौहीद के तक़ाज़ा की अदायगी)ः**

इस से मुराद (अभिप्राय) यह है कि बन्दा, "तौहीद" (ऐकेश्वरवाद) को गुनाहों, बिदअतों (अर्थात वह चीज़ें जो दीन में नई-नई दाख़िल की गयी हों) तथा शिर्क के मिश्रणों (मिलावट) से पाक साफ़ तथा निर्मल कर ले।

तौहीद को निर्मल करने के दो प्रकार हैंः

(1) वाजिब,

(2) मन्दूब,

1- वाजिब तीन चीज़ों के द्वारा होता हैः

➢ तौहीद को शिर्क से निर्मल करना (क्योंकि वह तौहीद के विरूद्ध है)।

➢ तौहीद को बिदअतों से पाक व ख़ालिस करना। क्योंकि वह तौहीद के कमाल के विरुद्ध हैं, अथवा, यदि वह काफ़िर बना देने वाली बिदअत हैं तो उसकी असल व जड़ ही के विरुद्ध हैं।

➢ तौहीद को गुनाहों से निर्मल करना। क्योंकि वह तौहीद के स्वाब (पुण्य) को कम करते और उस पर (बुरा) प्रभाव डालते हैं।

2- "मन्दूब" का जहाँ तक सम्बन्ध है तो **"मन्दूब"** इस्लाम में उस चीज़ को कहा जाता है जिसका अच्छा समझ कर आदेश दिया गया हो, (अतः यदि उस को न भी करें तो कोई गुनाह नहीं होता।)

इसके निम्नलिखित कुछ उदाहरण हैंः

➢ एहसान श्रेणी के कमाल को साबित करना।

➢ यक़ीन (विश्वास) श्रेणी के कमाल को साबित करना।

➢ अल्लाह के अलावा किसी अन्य की तरफ़ गिला-शिकवा न करके अच्छे संयम (धैर्य) को साबित करना।

➢ केवल अल्लाह तआला पर भरोसा करते हुये कुछ जायज़ चीज़ों को भी छोड़ कर भरोसे की कमाल श्रेणी को साबित करना, जैसे झाड़-फूँक तथा दाग़ना आदि को छोड़ देना।

➢ केवल अल्लाह से माँग कर मख़्लूक़ से बेनियाज़ी की कमाल श्रेणी को साबित करना।

➢ नफ़िल नमाज़ों के द्वारा बन्दगी वाली मुहब्बत की कमाल श्रेणी को साबित करना।

अब जिस व्यक्ति ने उपरोक्त मार्ग के अनुसार तौहीद को साबित किया, और बड़े शिर्क से बचा रहा तो ऐसा व्यक्ति जहन्नम में सदैव रहने से बरी और आज़ाद है।

और जो व्यक्ति छोटे और बड़े शिर्क से बचा रहा तथा बड़े गुनाहों व पापों से भी बचा रहा, तो उसके लिये इस दुनिया में भी शांती है तथा आख़िरत में भी शांती है। अल्लाह पाक का फ़रमान है:

﴿ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَغۡفِرُ أَن يُشۡرَكَ بِهِۦ وَيَغۡفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَآءُۚ ﴾

[النساء: الآية ٤٨].

अनुवादः "अल्लाह तआला अपने साथ शिर्क करने को नहीं क्षमा करता, इसके अलावा (जो पाप हैं उनको) जिस के लिये चाहे क्षमा करदे।" (निसा, आयतः 48)

अल्लाह पाक का और फ़रमान है:

﴿ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَلَمۡ يَلۡبِسُوٓاْ إِيمَٰنَهُم بِظُلۡمٍ أُوْلَٰٓئِكَ لَهُمُ ٱلۡأَمۡنُ وَهُم مُّهۡتَدُونَ ٨٢ ﴾ [الأنعام، الآية:٨٢].

अनुवादः ❝जो लोग ईमान लाये, और अपने ईमान को जुल्म (बहुदेववाद) से बचाये रखा, ऐसे ही लोगों के लिये शांती है। तथा वही लोग हिदायत याफ़्ता अथवा सीधे मार्ग पर हैं।❞

(अनआम, आयतः 82)

❁ शिर्क और उसके प्रकारः

तौहीद का विरूद्ध शिर्क (अनेकेश्वरवाद) है। और शिर्क के तीन प्रकार हैंः

1- "महा शिर्क"ः

यह तौहीद की जड़ व बुनियाद के ख़िलाफ़ है, इसको अल्लाह तआला बग़ैर तौबा के क्षमा नहीं कर सकता। यदि महा शिर्क करने वाला बग़ैर तौबा किये मर गया, तो वह सदैव जहन्नम में रहेगा।

"महा शिर्क" से अभिप्राय यह है कि बन्दा, अल्लाह के लिये किसी को साझी बना ले, उस से ऐसे ही दुआ तथा विनती करे जैसे अल्लाह से की जाती है। उसी को अपना चहेता बना ले, उसी पर भरोसा करे, उसी से आशा लगाये रहे, उसी से प्रेम करे तथा उसी से डरे, जिस प्रकार अल्लाह से प्रेम किया जाता और उस से डरा जाता है।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

ا ... إِنَّهُۥ مَن يُشۡرِكۡ بِٱللَّهِ فَقَدۡ حَرَّمَ ٱللَّهُ عَلَيۡهِ ٱلۡجَنَّةَ وَمَأۡوَىٰهُ ٱلنَّارُۖ وَمَا لِلظَّٰلِمِينَ مِنۡ أَنصَارٖ ﴿٧٢﴾ [المائدة، الآية: ٧٢].

अनुवादः ❝(सुनो!) जो अल्लाह के साथ शिर्क करेगा, ऐसे व्यक्ति पर अल्लाह ने जन्नत (स्वर्ग) को हराम (निषेध) कर दिया है। उसका ठिकाना जहन्नम (नरक) है। तथा अत्तयाचारियों का कोई मददगार (सहायक) नहीं है।❞ (माइदः, आयतः 72)

2- "छोटा शिर्क" :
यह तौहीद के कमाल के मुनाफ़ी (विरुद्ध) है।

"छोटा शिर्क", हर उस वसीले और सामीप्य को कहा जाता है जिसके कारण "महा-शिर्क" तक पहुँचा जाये। जैसे अल्लाह के अलावा किसी और की क़सम खाना, तथा मामूली रियाकारी और दिखावा आदि।

3- "पौशीदा शिर्क" :

इसका सम्बन्ध नीति व इरादा से होता है। यह शिर्क कभी महा भी हो जाता है, और कभी छोटा भी होता है, जैसा कि उपरोक्त व्याख्या में आया है।

महमूद बिन लबीद (ﷺ) से रिवायत (उदघृत) है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः

(إن أخوف ما أخاف عليكم الشرك الأصغر، قالوا: وما الشرك الأصغر يا رسول الله ؟ قال: الرياء) [رواه الإمام أحمد]

अनुवादः (मैं सब से अधिक जिस चीज़ से तुम्हारे ऊपर डरता हूँ, वह छोटा शिर्क है। सहाबा ने पूछाः ऐ अल्लाह के रसूल! छोटा शिर्क क्या है? आप ने फ़रमायाः आडम्बर (अर्थात दिखावा।)(मुसनद अहमद)

(2)
इबादत (उपासना) की परिभाषाः

इबादत एक ऐसा नाम है जो उन अक़ीदों तथा दिलों एवं जवारिह (इंद्रियाँ-हाथ पैर आँख आदि॰॰॰) के कार्यों को शामिल है, जिनके करने अथवा जिनके न करने से अल्लाह की निकटता प्राप्त होती है।

इबादत के नाम में हर वह चीज़ दाख़िल है जिस का आदेश अल्लाह ने कुरआन शरीफ़ अथवा हदीस शरीफ़ में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के द्वारा दिया है।

वह कई प्रकार की इबादतें हैं। उन में से कुछ ऐसी हैं जिनका सम्बन्ध दिल से है। जैसेः ईमान के छः स्तम्भ, डर, आशा, भरोसा, शौक़, तथा दहशत, आदि। तथा उनमें से कुछ जाहिरी इबादतें हैं। जैसेः नमाज़, ज़कात (धर्मादाय), रोज़ा (वृत, तथा हज्ज आदि।

❁ इबादत के सहीह होने के लिये दो बुनियादी शर्तें हैं:

➢पहली शर्तः अल्लाह के लिये इबादत को ख़ालिस (निर्मल) करना और उसके साथ किसी को शरीक न ठहराना, और यही ﴿ لا إله إلا الله ﴾ की शहादत व गवाही देने का अर्थ है। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ أَلَا لِلَّهِ ٱلدِّينُ ٱلْخَالِصُ وَٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُوا۟ مِن دُونِهِۦٓ أَوْلِيَآءَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَآ إِلَى ٱللَّهِ زُلْفَىٰٓ إِنَّ ٱللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِى مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهْدِى مَنْ هُوَ كَـٰذِبٌ كَفَّارٌ ٣ ﴾ [الزمر، الآية:٣].

अनुवादः ❝(सुनो!) अल्लाह ही के लिये ख़ालिस दीन है। और जिन्होंने अल्लाह के अतिरिक्त दूसरे वली, पीर और देवता बना रखे हैं (उनको उन से रोको) तो कहते हैं कि हम तो इनकी उपासना केवल इसलिये करते हैं, ताकि यह हमको अल्लाह से निकट कर दें। अल्लाह तआला (शीघ्र ही) उनके बीच उस विषय में निर्णय (फैसला) कर देगा जिस में यह

मतभेद कर रहे हैं। निःसंदेह अल्लाह तआला झूठे व कृतघ्न लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।❞ (ज़ुमर, आयतः 3)

इसी प्रकार अल्लाह का फ़रमान हैः

] ﴿ وَمَآ أُمِرُوٓاْ إِلَّا لِيَعۡبُدُواْ ٱللَّهَ مُخۡلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ حُنَفَآءَ ... ﴾ البينة، الآية:٥].

अनुवादः ❝उन को केवल यह आदेश दिया गया था कि वह अल्लाह की उपासना, उसके लिये उस के दीन को ख़ालिस करके तथा सब से कट कर करें।❞ (बय्यिनः, आयतः 5)

➤**दूसरी शर्तः** नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम), जो कुछ (आदेश) लेकर आये हैं उनकी पूरी तरह से अनुशंसा और पेरवी करना।

जो काम आप ने जिस प्रकार किया है, उसको उसी प्रकार करना, न उसमें कमी हो, और न ज़ियादती। और यही अर्थ है मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के अल्लाह के रसूल होने की शहादत व गवाही देने का०००।

अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ قُلۡ إِن كُنتُمۡ تُحِبُّونَ ٱللَّهَ فَٱتَّبِعُونِي يُحۡبِبۡكُمُ ٱللَّهُ وَيَغۡفِرۡ لَكُمۡ ذُنُوبَكُمۡۚ ... ﴾ [آل عمران، الآية: ٣١].

अनुवादः ❝कह दो कि ऐ लोगो! यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरे आदेशों का पालन करो, अल्लाह तुम से प्रेम करेगा, और तुम्हारे गुनाह क्षमा कर देगा।❞

(आले इमरान, आयतः 31)

अल्लाह तआला का और फ़रमान हैः

[... وَمَآ ءَاتَىٰكُمُ ٱلرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَىٰكُمۡ عَنۡهُ فَٱنتَهُواْۚ ﴾ [الحشر، الآية: ٧].

अनुवादः "(ऐ लोगो) रसूल, जो कुछ तुम को दें, उसको ले लो। और जिस से रोकें, उस से रुक जाओ।" (हश्र, आयतः 7)

अल्लाह तआला का और फ़रमान हैः

[فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤۡمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيۡنَهُمۡ ثُمَّ لَا يَجِدُواْ فِيٓ أَنفُسِهِمۡ حَرَجٗا مِّمَّا قَضَيۡتَ وَيُسَلِّمُواْ تَسۡلِيمٗا ﴿٦٥﴾ ﴾ [النساء، الآية: ٦٥].

अनुवादः "तेरे रब की क़सम है। वह उस समय तक (सत्य) मुमिन नहीं हो सकते, जब तक कि वह अपने तमाम झगड़ों में तुम को न्यायिक (फैसला करने वाला) न बना लें। फिर जो फ़ैसला आप कर दें उस से यह तनिक भी अपने दिलों में तन्गी महसूस न करें, तथा पूरे तौर से उसको स्वीकार कर लें।"
(निसा, आयतः 65)

❋ सम्पूर्ण बन्दगी दौ चीज़ों से साबित होती हैः

➢**पहली चीज़ः** अल्लाह तआला से कमाल श्रेणी की मुहब्बत। अर्थातः बन्दा, अल्लाह की मुहब्बत तथा जिन चीज़ों से अल्लाह प्रेम रखता है, उनकी मुहब्बत को सारी चीज़ों से आगे रखे।

➢**दूसरी चीज़ः** अल्लाह के सामने कमाल श्रेणी की आजिज़ी (विवसता) व गिड़गिड़ाहट। अर्थातः बन्दा अल्लाह के सामने उसके आदेशों को करके, और उसकी निषेध की हुई चीज़ों को त्याग कर, झुक जाये।

अर्थातः बन्दगी वह है जो कमाल मुहब्बत के साथ साथ, कमाल निर्मलता, डर, कोमलता तथा आशा को शामिल हो। इसी के द्वारा बन्दे की दास्ता अल्लाह के लिये पूर्ण रूप से साबित होती है।

बन्दा, अल्लाह तआला का दास बनकर उसकी मुहब्बत एवं प्रसन्नता प्राप्त कर सकता है। क्योंकि अल्लाह तआला, बन्दे से चाहता है कि वह उसकी निकटता, फ़र्ज अदा करके प्राप्त करे। तथा बन्दा जिस प्रकार नफ़िल (फ़र्ज से ज़ियादा इबादत) अदा करेगा तो वह उतना ही ज़ियादा अल्लाह के समीप होगा। और अल्लाह के यहाँ उसकी श्रेणी और अधिक ऊँची होगी। तथा अल्लाह के फ़ज्ल व महरबानी से इसी के कारण वह जन्नत (स्वर्ग) में दाख़िल होगा।

अल्लाह का फ़रमान हैः

ﭐدْعُواْ رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً إِنَّهُۥ لَا يُحِبُّ ٱلْمُعْتَدِينَ ﴿٥٥﴾

[الأعراف، الآية: ٥٥]

अनुवादः ‟अपने रब को नमर्ता एवं चुपके से पुकारो। निःसंदेह वह सीमा से आगे बढ़ने वालों को प्रेम नही करता।”

(आराफ, आयतः 55)

अल्लाह की तौहीद के प्रमाणः

अल्लाह तआला के ऐकमात्र होने के बहुत प्रमाण हैं। उन में ग़ौर तथा विचार करने वाले का ज्ञान और अधिक बढ़ जाता है। और उसका यह यक़ीन (विश्वास) भी बढ़ जाता है कि रब व पालनहार केवल एक ही है। तथा वह अपने कार्यों, नामों, सिफ़तों, और माबूद होने में ऐकमात्र है।

नीचे इसके कुछ प्रमाण केवल उदाहरण के तौर पर दिये जाते हैंः

(क) इस संसार का इतने बड़े रूप में रचना, उसकी इस बारीकी के साथ बनावट, उसके अन्दर भिन्न-भिन्न प्रकार की मख़्लूक़ का पाया जाना, तथा वह महीन व बारीक निजाम और व्यवस्था, जिस पर यह संसार चल रहा है। (आख़िर इसका बनाने और चलाने वाला कोन है?)

जो भी व्यक्ति इस में सौच-विचार करेगा, उसको अवश्य यक़ीन हो जायेगा कि इसको चलाने वाला केवल अल्लाह ही है। इसी प्रकार जो भी आसमान ज़मीन, सूरज, चाँद की रचना, और खुद (स्वयं) इन्सान में, तथा हैवान, और वनस्पति (घास आदि) व जमाद (बेजान चीज़) की रचना में सौच-विचार करेगा, तो वह अवश्य यह यक़ीन कर लेगा कि इनका जरूर कोई पैदा करने वाला है। जो अपने नाम, सिफ़त तथा माबूद होने में कामिल व पूर्ण है।

इस से मालूम हुआ कि केवल अल्लाह ही उपासना का हक़दार है। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَن تَمِيدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٣١﴾ وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَّحْفُوظًا ۖ وَهُمْ عَنْ آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ ﴿٣٢﴾ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٣٣﴾ ﴾ [الأنبياء، الآيات: ٣١-٣٣].

अनुवादः "और हम ने ज़मीन पर पहाड़ बनाये, ताकि वह सृष्टि को हिला न सकें, और हम ने उसमें रास्ते बनाये ताकि वह रास्ता प्राप्त कर सकें, और आकाश को हम ने एक सुरक्षित छत बनाया, परन्तु वह लोग उसकी निशानियों से मुख फेरे हुये हैं। और वही (अल्लाह पाक) है जिस ने रात और दिन एवं सूरज और चाँद को बनाया। वह सभी अपने-अपने कक्ष में तैर रहे हैं।" (अम्बिया, आयतः 31-32)

अल्लाह तआला का और फ़रमान हैः

﴿ وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافُ أَلْسِنَتِكُمْ وَأَلْوَانِكُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْعَالِمِينَ ﴿٢٢﴾ ﴾ [الروم، الآية:٢٢]

अनुवादः "अल्लाह की निशानियों में से ज़मीन व आकाश की रचना तथा तुम्हारी भाषाओं और रंगो की विभिन्नता (भी) है। बेशक इस में ज्ञानियों के लिये बड़ी निशानियाँ हैं।"

(रूम, आयतः 22)

(ख) वह नियम (क़ानून व आदेश) जिनको देकर अल्लाह ने अपने रसूल भेजे। तथा अल्लाह तआला की ऐकता, और उसी

के केवल उपासना के हक़दार होने पर दलालत करने वाले वह प्रमाण और निशानियाँ, जिनके द्वारा अल्लाह ने (उन रसूलों) का समर्थन किया।

अल्लाह के बनाये हुये यह क़ानून इस बात की दलील व प्रमाण हैं कि ऐसे क़ानून, केवल उस हिक्मत तथा दानाई (ज्ञान) वाले रब ही की तरफ़ से सादिर हो सकते हैं जो अपनी मख़्लूक़ के बारे में (सब से) अधिक यह ज्ञान रखता है कि उसके लिये कैसे क़ानून मुनासिब और उचित हैं।

अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِٱلْبَيِّنَٰتِ وَأَنزَلْنَا مَعَهُمُ ٱلْكِتَٰبَ وَٱلْمِيزَانَ لِيَقُومَ ٱلنَّاسُ بِٱلْقِسْطِ ... ﴾ [الحديد، الآية: ٢٥].

अनुवादः «निःसंदेह हम ने अपने रसूलों को खुली हुई निशानियाँ देकर भेजा है। उनके साथ हम ने किताब तथा पैमाना भी उतारा है, ताकि लोग (उसके द्वारा सहीह व ग़लत) में न्याय कर सकें।» (हदीद, आयतः 25)

अल्लाह तआला का और फ़रमान हैः

﴿ قُل لَّئِنِ ٱجْتَمَعَتِ ٱلْإِنسُ وَٱلْجِنُّ عَلَىٰٓ أَن يَأْتُوا۟ بِمِثْلِ هَٰذَا ٱلْقُرْءَانِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِۦ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا ﴿٨٨﴾

[الإسراء، الآية: ٨٨].

अनुवादः «ऐ मुहम्मद आप कह दीजिये कि यदि सारे जिन्न व इन्सान मिल कर भी इस जैसा कुरआन लाना चाहें, तो वह नहीं ला सकते। चाहे वह आपस में एक दूसरे के सहायक भी बन जायें।» (इस्रा, आयतः 88)

(ग) वह प्राकृति, जिस पर अल्लाह ने दिलों को पैदा किया है। उसमें अल्लाह के एक होने की कल्पना मौजूद है। और यह चीज़ प्रत्येक प्राणी और जीव के अन्दर स्थिर है। जब भी इन्सान को कोई हानी पहुँचती है, तो वह इस (सत्य) को पा लेता है। और अल्लाह ही की तरफ़ पलटता है।

यदि इन्सान शंका तथा कामवासना (शहवत) जो उसकी प्राकृति (फ़ितरत) को बदल देते हैं, उन से बच जाये, तो वह खुद अपने दिल के अन्दर, अल्लाह के वुजूद को पा ले, और उसको यह मान लेने के सिवाय कुछ न मिले कि अल्लाह तआला, अपनी "उलूहिय्यत" (माबूद होने) और अपने नामों, सिफ़तों तथा कार्यों में विषम और अकेला है।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۚ فِطْرَتَ ٱللَّهِ ٱلَّتِى فَطَرَ ٱلنَّاسَ عَلَيْهَا ۚ لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ ٱللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ ٱلدِّينُ ٱلْقَيِّمُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ ٱلنَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٠﴾ ۞ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ وَٱتَّقُوهُ وَأَقِيمُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَلَا تَكُونُوا۟ مِنَ ٱلْمُشْرِكِينَ ﴿٣١﴾ ﴾ [الروم، الآيتان: ٣٠، ٣١].

अनुवादः «तो आप सब से कट कर अपना मुख दीन की ओर करलें। अल्लाह तआला की उस प्राकृति (पर रहो) जिस पर उसने लोगों को पैदा किया है। अल्लाह के बनाये को बदलना नहीं। यही सत्य धर्म है। परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते। (लोगो!) अल्लाह की ओर पलटो, उसी से डरो, तथा नमाज़ पढ़ो, और शिर्क करने वालों में से मत बनो।»

(रूम, आयतः 30-31)

और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का फ़रमान हैः

(كل مولود يولد على الفطرة، فأبواه يهودانه، أو ينصرانه، أو يمجسانه، كما تنتج البهيمة بهيمة جمعاء هل تحسّون فيها من جدعاء ؟ ثمّ قرأ : ﴿ فطرة الله التي فطر الناس عليها ﴾) [رواه البخاري]

अनुवादः (प्रत्येक बच्चा (शिषु) प्राकृति पर पैदा होता है। परन्तु उसके माता-पिता उसको यहूदी (Jew) अथवा ईसाई (Christian) अथवा मजूसी (Fire-worshipper) (अर्थात आग पूजने वाले) बना देते हैं। बिल्कुल ऐसे ही जैसे एक चौपाया (जानवर) सहीह सालिम जानवर को जन्म देता है। तो क्या तुम उस (जानवर) में कोई नक़्स (कमी) महसूस करते हो?)

फिर आप ने इस आयत को पढ़ाः

﴿فِطْرَتَ ٱللَّهِ ٱلَّتِى فَطَرَ ٱلنَّاس عَلَيْهَا ﴾

अनुवादः "अल्लाह की उस प्राकृति पर रहो जिस पर उस ने लोगों को पैदा किया है।" (बुख़ारी शरीफ़)

ईमान का दूसरा रुक्न

फ़रिश्तों पर ईमान

(1)

उसकी परिभाषाः

यह पक्का विश्वास रखना कि अल्लाह तआला के फ़रिश्ते हैं। उनकी रचना नूर से हुई है। तथा वह अल्लाह की फ़रमाँबरदारी और आज्ञाकारी के लिये पैदा किये गये हैं। वह अल्लाह की नाफ़रमानी नहीं करते। जो भी उन्हें आदेश मिलते हैं, वह वही करते हैं। वह रात-दिन अल्लाह की तस्बीह और पाकी बयान करते हैं। उन्हें उकताहट नहीं होती। उनकी गिनती केवल अल्लाह ही को मालूम है। अल्लाह तआला ने उनके सर तरह-तरह के काम लगा रखे हैं। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ ... وَلَٰكِنَّ ٱلْبِرَّ مَنْ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ وَٱلْمَلَٰٓئِكَةِ ...﴾

[البقرة، الآية: ١٧٧].

अनुवादः ❝भलाई यह है कि व्यक्ति, अल्लाह पर, प्रलय के दिन पर तथा फ़रिश्तों॰॰॰ पर ईमान रखे।❞ (बक़रः, आयतः177)

इसी प्रकार अल्लाह का और फ़रमान हैः

﴿ ... كُلٌّ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَمَلَٰٓئِكَتِهِۦ وَكُتُبِهِۦ وَرُسُلِهِۦ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّن رُّسُلِهِۦ ...﴾ [البقرة، الآية: ٢٨٥].

अनुवादः ❝यह सब, अल्लाह पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर तथा उसके रसूलों पर ईमान रखते हैं। (और कहते हैं) हम उसके रसूलों के बीच मतभेद नहीं रखते।❞ (बक़रः, आयतः 285)

हजरत जिब्राईल (अलैहिस्सलाम) वाली प्रसिद्ध हदीस में है कि जब उन्होंने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से ईमान, इस्लाम तथा ऐहसान के बारे में पूछा किः (ऐ मुहम्मद!) मुझे ईमान के बारे में बताईये। तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः ईमान यह है कि आप अल्लाह पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर, आख़िरत के दिन पर, तथा अच्छी - बुरी क़िस्मत (भाग्य) पर ईमान रखें।

❀ दीन में फ़रिश्तों पर ईमान रखने का मक़ाम और हुक्मः

फ़रिश्तों पर ईमान लाना, ईमान का दूसरा रुक्न (स्तम्भ) है। इसके बग़ैर न तो बन्दे का ईमान पूर्ण है, और न ही अल्लाह तआला के यहाँ स्वीकार है।

अतः फ़रिश्तों पर ईमान लाना वाजिब और अनिवार्य है। इस पर तमाम मुसलमानों का "इजमॉ" (इत्तिफ़ाक़) है। और जो व्यक्ति इन फ़रिश्तों का अथवा इनमें से कुछ का इनकार करता है तो वह काफ़िर है। और कुरआन व हदीस तथा "इजमॉ" का विरोधी है। अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿... وَمَن يَكْفُرْ بِاللَّهِ وَمَلَٰٓئِكَتِهِۦ وَكُتُبِهِۦ وَرُسُلِهِۦ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَٰلًۢا بَعِيدًا ﴿١٣٦﴾ ﴾ [النساء، الآية: ١٣٦].

अनुवाद : "तथा जो व्यक्ति अल्लाह का, उसके फ़रिश्तों का, उसकी किताबों का, और उसके रसूलों तथा क़्यामत के दिन का इनकार करेगा तो ऐसा व्यक्ति बहुत बड़ा गुमराह है।"

(निसा, आयतः 136)

(2)

फ़रिश्तों पर ईमान कैसे रखें?

फ़रिश्तों पर ईमान रखने के दौ तरीक़े हैं:

(क) संछिप्त रूप से,

(ख) विस्तार पूर्वक।

फ़रिश्तों पर संछिप्त रूप से ईमान रखने में कई चीज़ शामिल हैं। उन में से कुछ निम्नलिखित हैं:

पहली चीज़: फ़रिश्तों की रचना और उनके, अल्लाह की एक मख़्लूक़ होने को मानना। तथा यह कि उनको अल्लाह ने अपनी इबादत के लिये पैदा किया है। और वह हक़ीक़त में मौजूद हैं। हमारा उनको न देख सकना, इस बात का प्रमाण नहीं है कि वह हैं ही नहीं। क्योंकि इस संसार में बहुत सी ऐसी छोटी-छोटी मख़्लूक़ हैं जिन को हम नहीं देख सकते, हालाँकि वह मौजूद होती हैं।

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हजरत जिब्राईल को दौ बार उनकी असली सूरत में देखा भी है। और कुछ सहाबियों (हमारे रसूल के साथी) ने भी कुछ फ़रिश्तों को देखा है, जो इन्सानी रूप धार कर आये थे।

इमाम अहमद ने अपनी किताब "मुसनद" में हजरत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद (ﷺ) से रिवायत (उदघृत) किया है, वह कहते हैं कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हजरत जिब्राईल को उनकी असली सूरत में देखा कि उनके छः सौ पँख हैं। और उनमें से हर पँख इतना बड़ा कि उस ने आकाश के किनारों (क्षितिज) को ढ़क रखा है।

हजरत जिब्राईल की मश्हूर हदीस, जो *सहीह मुस्लिम* में मौजूद है, उस में है कि हजरत जिब्राईल एक व्यक्ति के रूप

में आये, जिनके कपड़े बहुत सफेद, और बाल बहुत काले थे। उन पर सफ़र का भी कोई असर नहीं था०००।

दूसरी चीज़ः उनको उसी मक़ाम व मर्तबे में रखना जिसमें उनको अल्लाह तआ़ला ने रखा है। अर्थात, वह अल्लाह के बन्दे हैं, उन पर अल्लाह का हुक्म चलता है। अल्लाह ने उनको सम्मानित किया। उनका मक़ाम व मर्तबा ऊँचा बनाया, और अपने समीप में रखा। उन में से कुछ को अल्लाह ने प्रकाशना **(वह्यी)** आदि देकर भेजा, परन्तु वह उतनी ही शक्ति रखते हैं जितनी अल्लाह ने उनको प्रदान की है। वह अल्लाह की आज्ञा के बग़ैर न तो खुद को, और न ही किसी अन्य को हानि अथवा लाभ पहुँचा सकते हैं।

इसलिये यह जायज़ नहीं कि उनके लिये किसी भी प्रकार की इबादत (उपासना) की जाये। रहा उनके लिये "रुबूबिय्यत" (पालन-पोषण करना) आदि००० की सिफ़त साबित करना , जैसा कि ईसाई लोग, हजरत जिब्राईल के बारे में करते हैं , तो यह तो बहुत दूर की बात है। अल्लाह तआ़ला का फ़रमान हैः

﴿ وَقَالُواْ ٱتَّخَذَ ٱلرَّحۡمَٰنُ وَلَدٗاۗ سُبۡحَٰنَهُۥۚ بَلۡ عِبَادٞ مُّكۡرَمُونَ ٢٦ لَا يَسۡبِقُونَهُۥ بِٱلۡقَوۡلِ وَهُم بِأَمۡرِهِۦ يَعۡمَلُونَ ٢٧ ﴾

[الأنبياء، الآيتان:٢٦، ٢٧].

अनुवादः "(मिश्रणवादी) कहते हैंः कि रह्मान (यानी अल्लाह तआ़ला) औलाद वाला है। (हालाँकि) वह औलाद से पाक है। बल्कि वह (अर्थात फ़रिश्ते) तो सम्मानित बन्दे हैं। वह अल्लाह के सामने बढ़कर नहीं बोलते। और वह उसी के आदेशों का पालन करते हैं।" (अम्बिया, आयतः 26-27)

अल्लाह तआ़ला का और फ़रमान हैः

﴿ ... لَّا يَعْصُونَ ٱللَّهَ مَآ أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ۝٦ ﴾

[التحريم، الآية: ٦].

अनुवादः ❝वह अल्लाह के आदेशों की नाफ़रमानी नहीं करते, वह वही करते हैं जिसका आदेश उनको दिया जाता है।❞

(तहरीम, आयतः 6)

ईमान की यह मात्रा प्रत्येक मुसलमानः मर्द तथा औरत पर जानना जरूरी और अनिवार्य है। उन पर इसका सीखना और इसका अक़ीदा (विश्वास) रखना वाजिब है। इसके न जानने में किसी का कोई उज्र (याचना) स्वीकार नहीं होगा।

जहाँ तक सम्बन्ध है फ़रिश्तों पर **विस्तारपूर्वक ईमान** रखने का तो यह भी कुछ चीज़ों को शामिल है। जो नीचे हैंः

पहली चीज़ः उनकी रचनाः

अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को नूर से पैदा किया है। जिस प्रकार जिन्नों को आग से तथा इन्सानों को मिट्टी से पैदा किया है।

फ़रिश्तों की रचना हजरत आदम -अलैहिस्सलाम- से पहले हुई है।

हदीस शरीफ़ में आता है कि (फ़रिश्ते नूर से पैदा हुये, और जिन्न आग की लपट से, तथा इन्सान मिट्टी से पैदा किया गया है।)

दूसरी चीज़ः उनकी सँख्याः

फ़रिश्तों की तादाद (सँख्या) इतनी अधिक है कि उनको अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं गिन सकता। आकाश में उँगली बराबर भी कोई स्थान ऐसा नहीं, जहाँ कोई फ़रिश्ता सज्दा न कर रहा हो, अथवा खड़ा न हो।

इसी प्रकार सातवें आसमान पर जो **"बैतुल मामूर"** है, उसमें प्रत्येक दिन सत्तर हज़ार फ़रिश्ते प्रवेश करते हैं, और दौबारा उनका नम्बर नहीं आता।

क़यामत के दिन नरक को लाया जायेगा, उसके सत्तर हज़ार लगाम होंगी, और उनमें से हर एक लगाम को सत्तर हज़ार फ़रिश्ते थामे हुये होंगे। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

ا ... وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ.... ﴾ [المدثر، الآية: ٣١]

अनुवादः "तेरे रब के लश्कर (फ़ौज) को उसके सिवाय कोई नहीं जानता।" (मुद्दस्सिर, आयतः 31)

हदीस शरीफ़ में है किः "आकाश चरचराता है। और उसको चरचराना चाहिये, क्योंकि उसमें एक क़दम बराबर भी ऐसा स्थान नहीं जहाँ कोई फ़रिश्ता, अल्लाह के सामने "सज्दा" अथवा "रुकूअ" (झुकना) न कर रहा हो।

दूसरी हदीस में "बैतुल मामूर" के बारे में है कि उसमें रोज़ाना सत्तर हज़ार फ़रिश्ते प्रवेश करते हैं, फिर दौबारा उनकी बारी नहीं आती। (बुख़ारी व मुस्लिम)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन "नरक" को लाया जायेगा तो उसके सत्तर हज़ार लगाम होंगी। हर लगाम के साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते होंगे। (मुस्लिम)

इस से प्रकट होता है कि फ़रिश्तों की तादाद कितनी ज़बरदस्त है। अगर हिसाब लगायें तो केवल इन्हीं फ़रिश्तों की तादाद चार हज़ार नौ सौ मिलियन (अर्थात चार अरब नव्वे करोड़) पहुँचती है, तो फिर और फ़रिश्तों की तादाद कितनी होगी!

अतः पाक है वह जात जिस ने उन को पैदा किया और उनको नियंत्रण में किया तथा उनको एक एक करके गिना।

तीसरी चीज़ः फ़रिश्तों के नामः

जिन फ़रिश्तों के नाम अल्लाह ने कुरआन पाक में, अथवा उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हदीस शरीफ़ में जिक्र किये हैं, उन पर ईमान रखना वाजिब है।

इन फ़रिश्तों में सब से बड़े तीन फ़रिश्ते हैंः

1- *जिब्रीलः* उनको जिब्राईल भी कहा जाता है। यह वह "रूहूल कुद्स" (पाक रूह) हैं जो रसूलों के पास "वह्यी" और प्रकाशना- जो दिलों की ज़िन्दगी है- लेकर आते हैं।

2- ***मीकाईलः*** उनको मीकाल भी कहा जाता है। उन पर बारिश की जिम्मेदारी है। जिस से ज़मीन को ज़िन्दगी मिलती है। वह, जहाँ अल्लाह का हुक्म होता है वहीं बारिश को ले जाते हैं।

3- ***इस्राफीलः*** उनको "सूर" (अर्थात सँख) में फूँक मारने पर लगाया गया है। जिस से यह ज़िन्दगी ख़त्म हो जायेगी, तथा आख़िरत की ज़िन्दगी शुरू (आरम्भ) होगी। इस से शरीर की ज़िन्दगी का सम्बन्ध है।

चौथी चीज़ः फ़रिश्तों की सिफ़तें:

फ़रिश्ते वास्तव में (अल्लाह की) एक मख़्लूक़ हैं। उनके हक़ीक़ी बदन हैं। और उनके अन्दर "अख़्लाक़ी" (स्वभाविक) एवं "पैदाइशी" (अर्थात रचना से सम्बन्धित) सिफ़तें मौजूद हैं।

उन में से कुछ निम्नलिखित हैंः

(क) ***वह बहुत बड़े शरीर वाले हैं।***

अल्लाह ने फ़रिश्तों को बहुत बड़ी तथा शक्तिशाली सूरत (रूप) में पैदा किया है। जो उनके उन महा कार्यों के लिये उचित है, जिन पर अल्लाह ने उनको ज़मीन व आकाश में लगा रखा है।

(ख) ***उनके पँख होते हैं।***

अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों के दौ-दौ, तीन-तीन, चार-चार, पँख लगाये हैं। किसी के इन से भी अधिक पँख होते हैं। जैसा कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हजरत जिब्राईल को उनके असली रूप में देखा तो उनके छः सौ पँख थे। उनमें हर पँख इतना बड़ा था कि उस ने आसमान के किनारों (क्षितिज) को ढ़क रखा था। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ جَاعِلِ ٱلْمَلَٰٓئِكَةِ رُسُلًا أُو۟لِىٓ أَجْنِحَةٍ مَّثْنَىٰ وَثُلَٰثَ وَرُبَٰعَ ۚ يَزِيدُ فِى ٱلْخَلْقِ مَا يَشَآءُ ۚ ... ﴾

[فاطر، الآية:١].

अनुवादः ❝सारी प्रशंसा उस अल्लाह के लिये हैं जिस ने आकाशों तथा ज़मीन को पैदा किया, और फ़रिश्तों को ऐसा रसूल बनाया जिनके दौ-दौ, तीन-तीन, और चार-चार पँख हैं। सृष्टि में वह जो चाहता है बढ़ाता है।❞ (फातिर, आयतः 1)

(ग) ***उनको खाने पीने की आवश्यक्ता नहीं होती।***

अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को इस प्रकार बनाया है कि उन्हें खाने पीने की जरूरत नहीं पड़ती। न वह शादी-विवाह आदी करते हैं। और न उनके बच्चे होते हैं।

(घ) ***फरिश्ते बुद्धि रखते हैं।***

अल्लाह तआला उन से बातचीत करता है। और वह अल्लाह से बातचीत करते हैं। और उन्होंने हजरत आदम (अलैहिस्सलाम) आदि नबियों से भी बात की है।

(ड़) ***उनमें अनैक प्रकार के रूप धारने की शक्ति होती है।***

अल्लाह तम्राला ने फ़रिश्तों को यह शक्ति प्रदान की है कि वह मर्दों का रूप धारन कर सकते हैं।

इस से उन मूर्तिपूजक लोगों पर रद्द है जो फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ बताते हैं।

हम यह तो नहीं बता सकते की वह किस प्रकार रूप धारते हैं, किन्तु इतना मालूम है कि वह इतनी चतुराई और बारीकी से रूप बदलते हैं कि उनमें और साधारण इन्सानों में अन्तर करना कठिन हो जाता है।

(च) ***फ़रिश्तों का मरना।***

क़्यामत के दिन "मलकुल मौत" (अर्थात मौत का फ़रिश्ता) समैत सारे फ़रिश्ते मर जायेंगे। फिर अल्लाह तम्राला उनको दौबारा ज़िन्दा करेगा, ताकि वह अपने अपने काम कर सकें जो उनके जिम्मे लगाये गये हैं।

(छ) ***फ़रिश्ते उपासना करते हैं।***

फ़रिश्ते अल्लाह तम्राला की कई प्रकार से उपासना करते हैं। जैसेः नमाज़, दुम्रा, तस्बीह, रुकूम्र, सज्दा, डरना, तथा मुहब्बत करना आदि०००|

❀ फ़रिश्तों की उपासना का हालः

- वह सदैव उपासना ही करते रहते हैं। उनको उकताहट नहीं होती।
- वह इबादत केवल अल्लाह के लिये करते हैं।
- वह सदैव अच्छे काम करते हैं। वह बुराई नहीं करते। क्योंकि वह गुनाहों से *"मासूम"* (पाक) हैं।
- वह बहुत अधिक उपासना करने के बावजूद भी अल्लाह के सामने नमर्तापूर्वक रहते हैं।

अल्लाह तम्राला का फ़रमान हैः

ﵟيُسَبِّحُونَ ٱلَّيۡلَ وَٱلنَّهَارَ لَا يَفۡتُرُونَ ٢٠ﵞ [الأنبياء، الآية: ٢٠]

अनुवादः ❝वह रात दिन अल्लाह की तस्बीह बयान करते हैं। और उकताते नहीं।❞ (अम्बिया, आयतः 20)

पाँचवी चीज़ः फ़रिश्तों के कार्यः

अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों के जिम्मे बहुत बड़े-बड़े कार्य लगा रखे हैं। उनमें से कुछ निम्नलिखित हैंः

1- अल्लाह तआला के अर्श (सिंहासन) को उठाना।

2- रसूलों के पास (वह्यी) प्रकाशना लेकर आना।

3- जन्नत तथा नरक की चौकीदारी।

4- बादल, बारिश तथा पैड़-पौधे (वनस्पति) आदि की जिम्मेदारी।

5- पहाड़ों की जिम्मेदारी।

6- क़्यामत के दिन सँख में फूँक मारना।

7- इन्सानों के कार्यों को लिखना।

8- इन्सानों की सुरक्षा करना। परन्तु जब अल्लाह तआला, इन्सान पर कोई निर्णय करता है तो फ़रिश्ते इन्सान को छोड़ कर अलग हो जाते हैं। और अल्लाह तआला का निर्णय पूरा हो जाता है।

9- कुछ फ़रिश्ते इन्सान के साथ रहते हैं। और उसको अच्छाई की ओर बुलाते हैं।

10- कुछ फ़रिश्ते बच्चादानी में, वीर्य पर लगे हुये हैं। वह बच्चे में जान डालते हैं। और उसकी रोज़ी तथा कर्मों को लिखते हैं। तथा यह भी लिखते हैं कि वह शुभः होगा अथवा अशुभः होगा।

11- मौत के समय इन्सानों की जान निकालना।

12- क़ब्र में इन्सानों से प्रश्न करना। फिर जो आराम अथवा यातना, बाद में होता है, उसकी जिम्मेदारी।

13- कुछ फ़रिश्तों के जिम्मे नबी (अलैहिस्सलाम) पर, आप की उम्मत की ओर से भेजे गये सलाम को पहुँचाना है।

इसलिये अब किसी मुसलमान को नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तक, अपना सलाम पहुँचाने के लिये, दूर दराज़ का सफ़र तै करके आना जरूरी नहीं है। बल्कि उसके लिये यह काफ़ी है कि वह कहीं भी रहकर आप पर दरूद व सलाम भेज दे। फ़रिश्ते इस सलाम को आप तक पहुँचा देते हैं। यदि कोई सफ़र करना चाहे तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मस्जिद शरीफ़ में नमाज़ पढ़ने के उद्देश्य से करे।

यह फ़रिश्तों के प्रसिद्ध और मश्हूर कार्य हैं। इनके अतिरिक्त भी उनके बहुत अधिक काम हैं।

इन कार्यों के कुछ प्रमाण निम्नलिखित हैं:

अल्लाह तआला का फ़रमान है:

﴿ ٱلَّذِينَ يَحْمِلُونَ ٱلْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُۥ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِۦ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ ءَامَنُواْ ﴾ [غافر، الآية: ٧]

अनुवादः "जो फ़रिश्ते अर्श को उठाये हुये हैं, और जो उसके आस पास रहते हैं, वह अल्लाह की तस्बीह और पाकी बयान करते हैं, तथा उस पर ईमान रखते हैं। और मुमिनों के लिये बख़्शिश की दुआ माँगते हैं।" (ग़ाफ़िर, आयतः 7)

अल्लाह तआला का और फ़रमान है:

﴿ قُلْ مَن كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيلَ فَإِنَّهُۥ نَزَّلَهُۥ عَلَىٰ قَلْبِكَ بِإِذْنِ ٱللَّهِ... ﴾ [البقرة، الآية: ٩٧].

अनुवादः "(ऐ मुहम्मद!) आप कह दीजिये कि जो जिब्रील (अलैहिस्सलाम) का दुश्मन है, (तो रहे) उसने तो वह कुरआन तुम्हारे दिल पर, अल्लाह की आज्ञा से ही उतारा है।"

(बक़रः, आयतः 97)

अल्लाह तआला का और फ़रमान हैः

﴿ وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذِ ٱلظَّٰلِمُونَ فِى غَمَرَٰتِ ٱلْمَوْتِ وَٱلْمَلَٰٓئِكَةُ بَاسِطُوٓا۟ أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوٓا۟ أَنفُسَكُمُ ﴾[الأنعام، الآية:٩٣]

अनुवादः "यदि तुम वह समय देख लो जब अत्याचारी लोगों के प्राण निकाले जाते हैं! (जिस समय) फ़रिश्ते, अपने हाथ पसारे हुये (उन से कहते हैंः) निकालो अपने प्राण...।"

(अनआम, आयतः 93)

छठी चीज़ः इन्सानों पर फ़रिश्तों के हक़।

(इन्सानों पर फ़रिश्तों के कुछ हक़ यह हैं :)

क- उन पर ईमान रखना।

ख- उन से मुहब्बत और प्रेम करना। उनका सम्मान करना। तथा उनकी फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) की चर्चा करना।

ग- उनको गाली देना, उनमें दोष निकालना, अथवा उनका मजाक़ उड़ाने को हराम तथा निषेध जानना।

घ- जिस चीज़ को फ़रिश्ते पसँद नहीं करते उन से दूर रहना। क्योंकि जिस चीज़ से इन्सान खेद और दुःख महसूस करता है उस से फ़रिश्ते भी दुःख महसूस करते हैं।

(3)

फ़रिश्तों पर ईमान रखने के फलः

क- इस से ईमान पैदा होता है। क्योंकि उन पर ईमान रखे बग़ैर ईमान ही सहीह नहीं होता।

ख- फ़रिश्तों पर ईमान रखने से उनके पैदा करने वाले (अर्थात अल्लाह तआला) की बड़ाई, शक्ति, तथा उसकी बादशाहत का ज्ञान प्राप्त होता है। क्योंकि पैदा करने वाले की

बड़ाई का अनुमान, उसके द्वारा पैदा की गयी चीज़ की बड़ाई से ही हो सकता है।

ग- फ़रिश्तों की सिफ़तों, उनके हालात, तथा उनके कार्यों को जानने से मुसलमान के दिल में ईमान बढ़ता है।

घ- अल्लाह तआला जब फ़रिश्तों के द्वारा मुमिनों को साबित क़दमी और जमाव प्रदान करता है तो वह (अर्थात मुमिन), शांती तथा ख़ुशी महसूस करते हैं।

ड़- फ़रिश्ते, मुमिनों के लिये (अल्लाह तआला से) बख़्शिश माँगते हैं। तथा वह अल्लाह तआला की इबादत (उपासना) पूर्ण रूप से करते हैं। इस से (मुमिनों के दिल में) उनकी मुहब्बत पैदा होती है।

च- नाफ़रमानी तथा गन्दे कामों से नफ़रत और घृणा पैदा होती है।

छ- अल्लाह तआला अपने बन्दों की देख-भाल करता है। इसके कारण उसका शुक्र और धन्यवाद अदा होता है। क्योंकि (अल्लाह तआला) ने उनके साथ ऐसे फ़रिश्ते लगा रखे हैं, जो उनकी हिफ़ाजत और रक्षा करते हैं। तथा उनके कार्यों को लिखते रहते हैं। और उनके लिये अन्य लाभदायक काम भी करते हैं।

ईमान का तीसरा रुक्न

आसमानी किताबों पर ईमान

अल्लाह तआला की ओर से, जो किताबें उसके रसूलों पर उतारी गयीं, उन पर ईमान लाना, ईमान का तीसरा स्तम्भ कहलाता है। क्योंकि अल्लाह तआला ने अपने रसूलों को खुली और साफ़ चीज़ें देकर भेजा है। और लोगों की हिदायत (मार्गदर्शन), तथा उन पर महरबानी करने के लिये उन के लिये किताबें उतारीं हैं, ताकि दुनिया व आख़िरत में उनको खुशनसीबी (भाग्यशाली) हासिल हो। और वह (किताबें) एक अच्छा मार्ग बनें। जिस पर लोग चलें, तथा जिन चीज़ों में उनका आपस में मतभेद है उन में वह फ़ैसला (निर्णय) कर सकें। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِٱلْبَيِّنَٰتِ وَأَنزَلْنَا مَعَهُمُ ٱلْكِتَٰبَ وَٱلْمِيزَانَ لِيَقُومَ ٱلنَّاسُ بِٱلْقِسْطِ ... ﴾ [الحديد، الآية: ٢٥].

अनुवाद : "निःसंदेह हम ने अपने रसूल, खुली तथा साफ चीज़ें देकर भेजे, उनके साथ किताबें, तथा पैमाना भी उतारा, ताकि लोग (हक़ व नाहक़, सत्य व असत्य) में निर्णय कर सकें।" (हदीद, आयतः 25)

अल्लाह का और फ़रमान हैः

﴿ كَانَ ٱلنَّاسُ أُمَّةً وَٰحِدَةً فَبَعَثَ ٱللَّهُ ٱلنَّبِيِّـۧنَ مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ وَأَنزَلَ مَعَهُمُ ٱلْكِتَٰبَ بِٱلْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ ٱلنَّاسِ فِيمَا ٱخْتَلَفُوا۟ فِيهِ ﴾[البقرة، الآية: ٢١٣].

अनुवादः "लोग एक ही मत थे। फिर अल्लाह तआला ने नबियों को खुशख़बरी देने वाला, तथा डराने वाला बना कर भेजा।

और उनके साथ सत्य वाली किताबें उतारीं, ताकि वह लोगों के बीच मतभेद वाली चीज़ों में निर्णय करें।❞

(बक़रः, आयतः 213)

(1)
किताबों पर ईमान की हक़ीक़तः

(आसमानी) किताबों पर ईमान का अर्थ है कि, यह बात पक्के तौर से मानी जाये कि अल्लाह तआला ने अपने रसूलों पर कुछ किताबे उतारी हैं। यह किताबें वास्तव में अल्लाह का कलाम हैं। उनमें प्रकाश तथा हिदायत है। और जो कुछ उनमें है वह, हक़, सत्य तथा उचित है। उसको मानना और उस पर कर्म करना वाजिब है। इन (किताबों) की (सहीह) तादाद को केवल अल्लाह तआला ही जानता है। अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ ...وَكَلَّمَ ٱللَّهُ مُوسَىٰ تَكۡلِيمٗا ١٦٤ ﴾ [النساء، الآية: ١٦٤].

अनुवाद : ❝अल्लाह तआला ने मूसा (नबी) से (साफ़ साफ़ अथवा निःसंदेह) बात चीत की।❞ (निसा, आयतः 164)

और फ़रमायाः

﴿ وَإِنۡ أَحَدٞ مِّنَ ٱلۡمُشۡرِكِينَ ٱسۡتَجَارَكَ فَأَجِرۡهُ حَتَّىٰ يَسۡمَعَ كَلَٰمَ ٱللَّهِ... ﴾ [التوبة، الآية: ٦].

अनुवादः ❝अगर कोई मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) तुम्हारी पनाह में आना चाहे, तो उसको पनाह दे दो, यहाँ तक कि वह अल्लाह के कलाम (कुरआन) को सुन ले।❞ (तौबः, आयतः 6)

(2)
किताबों पर ईमान रखने का हुक्मः

जिन किताबों को अल्लाह ने अपने रसूलों पर उतारा है, उन सब पर ईमान रखना वाजिब है। अर्थात वह अल्लाह का हक़ीक़ी कलाम हैं। और वह अल्लाह की उतारी हुई हैं। मख़्लूक़ नहीं हैं। जो उनका अथवा उनमें से किसी एक का भी इनकार करेगा तो वह काफ़िर है। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ ءَامِنُواْ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَٱلْكِتَـٰبِ ٱلَّذِى نَزَّلَ عَلَىٰ رَسُولِهِۦ وَٱلْكِتَـٰبِ ٱلَّذِىٓ أَنزَلَ مِن قَبْلُ ۚ وَمَن يَكْفُرْ بِٱللَّهِ وَمَلَـٰٓئِكَتِهِۦ وَكُتُبِهِۦ وَرُسُلِهِۦ وَٱلْيَوْمِ ٱلْـَٔاخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَـٰلًۢا بَعِيدًا ﴿١٣٦﴾ ﴾ [النساء، الآية: ١٣٦].

अनुवादः "ऐ मुमिनो! अल्लाह पर, उसके रसूल पर, और उस किताब पर जो उन पर उतारी है, तथा उस किताब पर जो पहले उतारी थी, (इन सब) पर ईमान ले आओ। और जो, अल्लाह तआला का, उसके फ़रिश्तों का, उसकी किताबों, उसके रसूलों तथा आख़िरत के दिन का इनकार करेगा, तो वह बहुत दूर भटक जायेगा।" (निसा, आयतः 136)

अल्लाह का और फ़रमान हैः

﴿ وَهَـٰذَا كِتَـٰبٌ أَنزَلْنَـٰهُ مُبَارَكٌ فَٱتَّبِعُوهُ وَٱتَّقُواْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿١٥٥﴾ ﴾ [الأنعام، الآية: ١٥٥]

अनुवादः ❝यह जो किताब हम ने उतारी है, बड़ी बरकत वाली किताब है। अतः इसी के पीछे लग जाओ। और (अल्लाह से डरते रहो) ताकि तुम पर रहम की जाये।❞ (अनआम, आयतः 155)

(3)
लोगों को किताबों की जरूरत, और उनके उतारने का मक़्सदः

(लोगों को किताबों की जरूरत है, इसलिये इनके उतरने के कुछ मक़्सद और उद्देश्य निम्नलिखित हैं :-)

(1) ताकि रसूलों पर उतारी हुई किताब ही की तरफ लोग अपने दीन का ज्ञान प्राप्त करने के लिये पलटें।

(2) ताकि रसूलों पर उतारी हुई किताब ही, उनकी उम्मत के लिये, आपस की मतभेद वाली बातों में फैसला करें।

(3) ताकि यह किताब नबियों की मौत के बाद, दीन की हिफ़ाजत करें, चाहे कोई भी ज़माना हो, और कोई भी जगह हो। जैसा कि हमारे नबी जनाब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की दावत का हाल है। (अर्थात वह प्रत्येक ज़मान व मकान के लिये है)

(4) ताकि यह किताबें, अल्लाह तआला की ओर से मख़्लूक़ पर हुज्जत (दलील अथवा तर्क) रहें। अतः लोग, इनका विरोध करने में भी विवस रहें। और उन से दूर भी न हो सकें।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

ا كَانَ ٱلنَّاسُ أُمَّةً وَٰحِدَةً فَبَعَثَ ٱللَّهُ ٱلنَّبِيِّـۧنَ مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ وَأَنزَلَ مَعَهُمُ ٱلْكِتَـٰبَ بِٱلْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ ٱلنَّاسِ فِيمَا ٱخْتَلَفُوا۟ فِيهِ ۚ... ﴾

[البقرة، الآية: ٢١٣].

अनुवादः ❝लोग एक ही मत थे। फिर अल्लाह ने, ख़ुशख़बरी तथा डराने वाले रसूल भेजे, उनके साथ सत्य वाली किताबें उतारीं। ताकि वह लोगों के बीच उनकी मतभेद वाली बातों में निर्णय कर सकें।❞ (बक़रः, आयतः 213)

(4)
किताबों पर ईमान कैसे रखें?

किताबों पर ईमान दौ तरीक़े का हैं:

क- संछिप्त रूप से,

ख- विस्तार पूर्वक।

संछिप्त रूप से ईमान रखने का अर्थ यह है कि आप यह ईमान रखें कि अल्लाह तआला ने अपने रसूलों पर किताबें उतारी हैं।

विस्तार पूर्वक ईमान का अर्थ यह है कि जिन किताबों के नाम कुरआन शरीफ में आये हैं, आप उन पर ईमान रखें।

इन किताबों में से हम कुरआन, तौरात, ज़बूर, इंजील तथा हजरत इब्राहीम व हजरत मूसा की किताबों को जानते हैं।

तथा आप यह भी ईमान रखें कि अल्लाह ने अपने नबियों पर इन किताबों के अलावा, और किताबें भी उतारी हैं। परन्तु उनको केवल अल्लाह ही जानता है। हम नहीं जानते। यह सारी किताबें अल्लाह तआला की तौहीद (ऐकेश्वरवाद) को साबित करने आयीं।

अर्थातः केवल अल्लाह तआला ही की उपासना की जाये। अच्छे-अच्छे काम किये जायें। शिर्क (अनेकेश्वरवाद) तथा ज़मीन में फ़साद (उपद्रव) न किया जाये। अतः सारे नबियों की दावत की जड़ तथा बुनियाद एक ही है। चाहे उनके क़ानून और आदेशों में अन्तर रहा हो।

पहली (प्राचीन) किताबों पर ईमान का मतलबः यह मानना है कि पिछले नबियों पर किताबें उतरी हैं। और कुरआन पर ईमान का मतलब यह है कि उसको (अल्लाह की किताब) माना जाये, और जो कुछ उसमें है, उसके अनुसार कार्य किये जायें। अल्लाह का फ़रमान हैः

ا ﴿ءَامَنَ ٱلرَّسُولُ بِمَآ أُنزِلَ إِلَيۡهِ مِن رَّبِّهِۦ وَٱلۡمُؤۡمِنُونَۚ كُلٌّ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَمَلَٰٓئِكَتِهِۦ وَكُتُبِهِۦ وَرُسُلِهِۦ ... ﴾ [البقرة، الآية: ٢٨٥].

अनुवादः "रसूल, जो कुछ उन पर अल्लाह की ओर से उतरा है, उस पर ईमान लाये, और अन्य मुमिन भी। यह सब, अल्लाह पर, उसके फरिश्तों पर, उसकी किताबों पर, तथा उसके रसूलों पर ईमान रखते हैं।" (बक़रः, आयतः 285)

अल्लाह का और फ़रमान हैः

ا ﴿ٱتَّبِعُواْ مَآ أُنزِلَ إِلَيۡكُم مِّن رَّبِّكُمۡ وَلَا تَتَّبِعُواْ مِن دُونِهِۦٓ أَوۡلِيَآءَۗ ... ﴾ [الأعراف، الآية: ٣]

अनुवादः "जो कुछ तुम्हारी ओर, तुम्हारे रब की तरफ़ से उतरा है, उसके पीछे लग जाओ। और उसके अतिरिक्त अन्य सहायकों (बुजुर्गों) के पीछे मत लगो।" (आराफ, आयतः 3)

❀ कुरआन शरीफ की कुछ विशेषतायें:

कुरआन के अन्दर कुछ ऐसी विशेषतायें हैं जो उस से पहली किताबों में नहीं थीं। उन में से कुछ निम्नलिखित हैंः

1- कुरआन शरीफ़ अपने शब्द, अर्थ तथा जो वैज्ञानिक व संसार से सम्बन्धित हकीक़तें (वास्तविक्तायें) उसमें हैं, वह उन सब में "मुजिज़" (विवस कर देने वाला) है।

2- यह आख़िरी आसमानी किताब है, इसके बाद कोई किताब नहीं आयेगी, जिस तरह मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बाद कोई नबी नहीं आयेगा।

3- अल्लाह तआला ने, हर टेढ़ेपन तथा हर तबदीली और प्रत्येक हेर फेर से उसकी हिफ़ाजत की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली है। जबकि पुरानी किताबें अपने असली रूप में बाक़ी नहीं रह सकीं।

4- यह किताब अपने से पहले वाली किताबों की तस्दीक़ करती है। और उन सब पर ग़ालिब है।

5- कुरआन ने अपने से पहली किताबों को "मन्सूख़" (निरस्त) कर दिया है। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَٰكِن تَصْدِيقَ ٱلَّذِى بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَىْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١١١﴾ ... ﴾

[يوسف، الآية: ١١١].

अनुवादः «यह कुरआन, झूठी बनायी हुई बात नहीं है। बल्कि यह तस्दीक़ करती है उन किताबों की, जो इस से पहले की हैं। तथा (यह), ईमान वालों के लिये, प्रत्येक वस्तु का विस्तार पूर्वक वर्णन, एवं हिदायत (मार्गदर्शन) तथा रहमत है।»

(यूसुफ, आयतः 111)

(5)
पुरानी किताबों की ख़बरों को माननाः

हम यह अच्छी प्रकार जानते हैं कि अल्लाह तआला की तरफ़ से अपने रसूलों की ओर "वह्यी" (प्रकाशना) की गयी किताबों में, जो ख़बरें हैं, वह सब सत्य हैं। उन में कोई शंका

नहीं। लैकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि हम, जो कुछ उन किताबों मे आया है, जो (आज कल) यहूदी तथा ईसाईयों के पास हैं, उस सब को क़बूल कर लें। क्योंकि उनमें बहुत कुछ बदला जा चुका है। और जिस रूप में वह अल्लाह के पास से उतरी थीं उस रूप में अब नहीं रहीं।

इन किताबों द्वारा जो यक़ीनी ज्ञान हमें मिला है, उस में से यह है - जिसके बारे में हमें, अल्लाह तआला ने अपनी किताब (कुरआन) में ख़बर दी है कि - "कोई व्यक्ति अन्य व्यक्ति का भार नहीं उठायेगा"| इसी प्रकार यह कि "इन्सान को वही मिलेगा, जिस के लिये वह कोशिश करेगा, और उसी की कोशिश को देखा जायेगा, फ़िर उसको पूरा पूरा बदला दिया जायेगा"| अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ بِمَا فِي صُحُفِ مُوسَىٰ ﴿٣٦﴾ وَإِبْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَّىٰ ﴿٣٧﴾ أَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ﴿٣٨﴾ وَأَن لَّيْسَ لِلْإِنسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ ﴿٣٩﴾ وَأَنَّ سَعْيَهُ سَوْفَ يُرَىٰ ﴿٤٠﴾ ثُمَّ يُجْزَاهُ الْجَزَاءَ الْأَوْفَىٰ ﴿٤١﴾ ﴾ [النجم، الآيات: ٣٦-٤١].

अनुवादः ❝क्या उसे इस बात की सूचना नहीं दी गयी जो मूसा तथा वफादार इब्राहीम (अलैहिमस्सलाम) के ग्रन्थ में थी? कि कोई व्यक्ति, किसी दूसरे व्यक्ति का बोझ नहीं उठायेगा। तथा उस को वही मिलेगा जिसकी कोशिश उस ने की होगी। तथा उसी की कोशिश देखी जायेगी। फिर उसे पूरा पूरा बदला दिया जायेगा?।❞ (नज्म, आयातः 36-41)

अल्लाह तआला का और फ़रमान हैः

﴿ بَلۡ تُؤۡثِرُونَ ٱلۡحَيَوٰةَ ٱلدُّنۡيَا ١٦ وَٱلۡأٓخِرَةُ خَيۡرٞ وَأَبۡقَىٰٓ ١٧ إِنَّ هَٰذَا لَفِي ٱلصُّحُفِ ٱلۡأُولَىٰ ١٨ صُحُفِ إِبۡرَٰهِيمَ وَمُوسَىٰ ١٩ ﴾ [الأعلى، الآيات: ١٦-١٩].

अनुवादः ❝बल्कि तुम दुनिया की ज़िन्दगी को तरजीह (श्रेष्ठता) देते हो। हालाँकि आख़िरत (परलोक) का जीवन अच्छा, तथा हमैशा रहने वाला है। यह बातें पहली किताबों में भी मौजूद हैं। (अर्थात) इब्राहीम और मूसा की किताबों में।❞

(आला, आयातः 16-19)

जहाँ तक इन (किताबों के) आदेशों का सम्बन्ध है, तो जो कुरआन शरीफ़ में आये हैं, उनको करना व मानना जरूरी है। लैकिन जो आदेश पहली किताबों में आये हैं, उन में से जो हमारे दीन के ख़िलाफ़ हैं तो हम उन पर कार्य नहीं करेंगे। इसलिये नहीं कि वह असत्य हैं। बल्कि वह अपने समय में हक़ और सत्य थे, लैकिन हम पर उन के अनुसार कार्य करना जरूरी नहीं, क्योंकि वह हमारी शरीअत (दीन) के द्वारा निरस्त हो चुके हैं। लैकिन अगर (उनमें से कोई आदेश) हमारी शरीअत के अनुसार है, तो वह सत्य माना जायेगा। इसको हमारी शरीअत बताती है।

(6)
वह आसमानी किताबें जिनका जिक कुरआन शरीफ़ और हदीस में आया हैः

1- कुरआन शरीफ़ः

यह अल्लाह तआला का कलाम है। जो अन्तिम नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतरा है। और यह अन्तिम आसमानी किताब है। इसकी, फेर-बदल से हिफ़ाजत स्वयं अल्लाह ने अपने जिम्मे ले रखी है। तथा इस के द्वारा दूसरी सारी किताबें निरस्त कर दी गयी हैं। अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا ٱلذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُۥ لَحَٰفِظُونَ ۝٩ ﴾

[الحجر، الآية: ٩].

अनुवादः "हम ही ने यह जिक्र (कुरआन) उतारा है तथा हम ही इसकी हिफ़ाजत करेंगे।" (हिज्र, आयतः 9)

अल्लाह पाक का और फ़रमान हैः

﴿ وَأَنزَلْنَآ إِلَيْكَ ٱلْكِتَٰبَ بِٱلْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ ٱلْكِتَٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ ۖ فَٱحْكُم بَيْنَهُم بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ ۖ ... ﴾

[المائدة، الآية: ٤٨].

अनुवादः "हम ने तुम्हारी ओर हक़ के साथ किताब उतारी है, जो अपने से पहले वाली किताबों की तस्दीक़ (पुष्टि) करती है। तथा उन सब पर ग़ालिब भी है। तो आप उनके बीच अल्लाह के उतारे हुये आदेशों द्वारा निर्णय कीजिये।"

(माइदः, आयतः 48)

2 - तौरातः

इस किताब को अल्लाह तआला ने हजरत मूसा (अलैहिस्सलाम) पर उतारा था। इसको अल्लाह तआला ने हिदायत (मार्गदर्शन) और प्रकाश वाला बनाया। इसके द्वारा

"बनी इस्राईल" (अर्थात हजरत याकूब अलैहिस्सलाम की संतान) तथा उनके "उलमा" (आलिम लोग) निर्णय करते थे।

लैकिन जिस "तौरात" पर ईमान रखना वाजिब है, वह है जिसको अल्लाह तआला ने हजरत मूसा (अलैहिस्सलाम) पर उतारा था। न कि वह बदली हुई तौरात जो आज-कल यहूदियों के पास है। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

ا إِنَّآ أَنزَلۡنَا ٱلتَّوۡرَىٰةَ فِيهَا هُدًى وَنُورٞۚ يَحۡكُمُ بِهَا ٱلنَّبِيُّونَ ٱلَّذِينَ أَسۡلَمُواْ لِلَّذِينَ هَادُواْ وَٱلرَّبَّٰنِيُّونَ وَٱلۡأَحۡبَارُ بِمَا ٱسۡتُحۡفِظُواْ مِن كِتَٰبِ ٱللَّهِ ...﴾ [المائدة، الآية: ٤٤].

अनुवादः ❝निःसंदेह हम ने "तौरात" उतारी, उसमें नूर, प्रकाश और हिदायत का सामान था। इसी तौरात के द्वारा, अल्लाह के मानने वाले नबी, और अल्लाह वाले, तथा ज्ञानी, यहूदियों के बीच, निर्णय किया करते थे। क्योंकि उन्हें, अल्लाह की इस किताब की सुरक्षा का आदेश दिया गया था।❞

(माइदः, आयतः 44)

3- इंजील (Bible)ः

यह वह किताब है जिसको अल्लाह तआला ने हजरत ईसा (अलैहिस्सलाम) पर सत्य के साथ उतारा था। और इसने अपने से पूर्व आसमानी किताबों की पुष्टि की।

लैकिन जिस "बाईबल" पर ईमान लाना जरूरी है, वह किताब है जिसको अल्लाह तआला ने, उसके असली रूप में, हजरत ईसा (अलैहिस्सलाम) पर उतारा था। न कि वह बदली हुई बाईबल जिसको आज कल ईसाई लोग लिये फिरते हैं।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ وَقَفَّيْنَا عَلَىٰٓ ءَاثَٰرِهِم بِعِيسَى ٱبْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ ٱلتَّوْرَىٰةِ ۖ وَءَاتَيْنَٰهُ ٱلْإِنجِيلَ فِيهِ هُدًى وَنُورٌ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ ٱلتَّوْرَىٰةِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٤٦﴾ ﴾

[المائدة، الآية: ٤٦].

अनुवादः "और उनके पश्चात ही हम ने ईसा पुत्र मर्यम को भेजा, वह अपने से पूर्व वाली किताब अर्थात "तौरात" की पुष्टि करते थे। तथा उनको हम ने "इंजील" (Bible) प्रदान की, जिसमें प्रकाश और मार्गदर्शन का सामान था। और अपने से पूर्व किताब "तौरात" की पुष्टि करती थी। तथा वह, अल्लाह से डरने वालों के लिये स्पस्ट मार्गदर्शन तथा शिक्षा वाली थी।" (माइदः, आयतः 46)

तौरात और बाईबल में हमारे नबी जनाब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के नबी होने की ख़ुशख़बरी मौजूद है। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ ٱلَّذِينَ يَتَّبِعُونَ ٱلرَّسُولَ ٱلنَّبِىَّ ٱلْأُمِّىَّ ٱلَّذِى يَجِدُونَهُۥ مَكْتُوبًا عِندَهُمْ فِى ٱلتَّوْرَىٰةِ وَٱلْإِنجِيلِ يَأْمُرُهُم بِٱلْمَعْرُوفِ وَيَنْهَىٰهُمْ عَنِ ٱلْمُنكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ ٱلطَّيِّبَٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ ٱلْخَبَٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَٱلْأَغْلَٰلَ ٱلَّتِى كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۚ ﴾ [الأعراف، الآية:١٥٧]

अनुवादः "...जो ऐसे अभिज्ञ ईशदूत नबी का अनुकरण करते हैं जिसको वह अपने पास तौरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं। वह उनको अच्छे कार्यों का आदेश देते हैं, तथा पाप के कार्यों से रोकते हैं। तथा अपवित्र पदार्थों को निषेध बताते हैं।

तथा उन लोगों पर जो भार एवं गले के फँदे थे, उनको उन से दूर करते हैं।❞ (आराफ, आयतः 157)

4- ज़बूरः

यह वह किताब है जिसको अल्लाह तआला ने, हजरत दाऊद (अलैहिस्सलाम) पर उतारा था। और उसी ज़बूर पर ईमान लाना वाजिब है। न कि उस ज़बूर पर जो आज कल यहूदियों के पास बदले हुये रूप में मिलती है।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿... وَءَاتَيْنَا دَاوُۥدَ زَبُورًا ﴿١٦٣﴾ ﴾ [النساء، الآية: ١٦٣]

अनुवादः ❝और हम ने दाऊद को "ज़बूर" दी।❞ (निसा, आयतः 163)

5- हजरत इब्राहीम व मूसा की किताबः

यह वह किताबें हैं जो अल्लाह की ओर से हजरत इब्राहीम व मूसा को मिली थीं।

यह किताबें आज कल गुम हैं। इनके बारे में हम को केवल इतना ही मालूम है जितना कुरआन और हदीस में आया है। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ بِمَا فِي صُحُفِ مُوسَىٰ ﴿٣٦﴾ وَإِبْرَٰهِيمَ ٱلَّذِي وَفَّىٰٓ ﴿٣٧﴾ أَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ﴿٣٨﴾ وَأَن لَّيْسَ لِلْإِنسَٰنِ إِلَّا مَا سَعَىٰ ﴿٣٩﴾ وَأَنَّ سَعْيَهُۥ سَوْفَ يُرَىٰ ﴿٤٠﴾ ثُمَّ يُجْزَىٰهُ ٱلْجَزَآءَ ٱلْأَوْفَىٰ ﴿٤١﴾ ﴾ [النجم، الآيات: ٣٦-٤١].

अनुवादः ❝क्या उसे, उस बात की सूचना नहीं दी गयी जो मूसा के ग्रन्थ में थी? तथा वफादार इब्राहीम के ग्रन्थ में भी थी। कि

कोई व्यक्ति किसी दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा। और यह कि प्रत्येक व्यक्ति के लिये केवल वही मिलेगा जिसका प्रयत्न स्वयं उस ने किया होगा। तथा केवल उसी की कोशिश देखी जायेगी? फिर उसे पूरा पूरा बदला दिया जायेगा?।»

(नज्म, आयातः 36-41)

अल्लाह तआला का और फ़रमान हैः

[بَلۡ تُؤۡثِرُونَ ٱلۡحَيَوٰةَ ٱلدُّنۡيَا ﴿١٦﴾ وَٱلۡأٓخِرَةُ خَيۡرٞ وَأَبۡقَىٰٓ ﴿١٧﴾ إِنَّ هَٰذَا لَفِي ٱلصُّحُفِ ٱلۡأُولَىٰ ﴿١٨﴾ صُحُفِ إِبۡرَٰهِيمَ وَمُوسَىٰ ﴿١٩﴾]

الأعلى، الآيات:١٦-١٩].

अनुवादः «परन्तु तुम तो दुनिया के जीवन को श्रेष्ठता देते हो। हालाँकि आख़िरत (परलोक) अत्यन्त सुखद एवं स्थाई है। यह बात पूर्व की पुस्तकों में भी है। अर्थात इब्राहीम और मूसा के ग्रन्थों में।» (ऑला, आयातः 16-19)

ईमान का चौथा रुक्न

रसूलों पर ईमान

(1)
रसूलों पर ईमान

यह ईमान का एक बहुत महत्वपूर्ण रुक्न (स्तम्भ) है। इसके बग़ैर बन्दे का ईमान पूरा नहीं हो सकता।

रसूलों पर ईमान रखने का अर्थ है किः यह पक्का यक़ीन रखा जाये कि अल्लाह के पैग़म्बर और रसूल हैं, जिनको अल्लाह ने अपना पैग़ाम पहुँचाने के लिये चुना। जिस ने उनकी बात मानी उसको हिदायत मिल गयी, तथा जिस ने उन की बात न मानी वह सच्चे रास्ते से भटक गया।

इसी प्रकार यह विश्वास रखा जाये कि उन्होंने अपने रब का पैग़ाम (बन्दों तक), पूरी तरह और साफ़-साफ़ पहुँचा दिया। उन्होंने अपनी अपनी क़ौम को अच्छी बातें बतायीं। उन्होंने अल्लाह के लिये खूब परिश्रम और महनत की। और वह, (अल्लाह और लोगों के बीच) हुज्जत तथा प्रमाण और तर्क क़ायम कर गये। और उन्होंने अल्लाह के पैग़ाम में कोई तबदीली या कमी नहीं की।

अल्लाह तआला ने, जिन रसूलों के नाम हमें बता दिये हैं, हम उन पर भी ईमान रखते हैं। और जिन के नाम नहीं बताये हैं, उन पर भी ईमान रखते हैं। उनमें से प्रत्येक रसूल अपने बाद आने वाले रसूल की खुशख़बरी देता है। और बाद में आने वाला रसूल अपने से पहले की तस्दीक़ (पुष्टि) करता है। अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

ا قُولُوٓاْ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيۡنَا وَمَآ أُنزِلَ إِلَىٰٓ إِبۡرَٰهِـۧمَ

وَإِسۡمَٰعِيلَ وَإِسۡحَٰقَ وَيَعۡقُوبَ وَٱلۡأَسۡبَاطِ وَمَآ أُوتِيَ مُوسَىٰ

وَعِيسَىٰ وَمَآ أُوتِيَ ٱلنَّبِيُّونَ مِن رَّبِّهِمۡ لَا نُفَرِّقُ بَيۡنَ أَحَدٖ مِّنۡهُمۡ وَنَحۡنُ لَهُۥ مُسۡلِمُونَ ﴿١٣٦﴾ ﴾ [البقرة، الآية: ١٣٦].

अनुवादः ❝(ऐ मुसलमानो!) तुम कह दो किः हम, अल्लाह पर ईमान लाये, तथा उस पर भी जो हमारी ओर उतारा गया, और जो इब्राहीम , इस्माईल, इस्हाक़, तथा याकूब एवं उनकी संतान पर उतारा गया, तथा जो कुछ अल्लाह की ओर से मूसा, ईसा, तथा अन्य नबियों को दिया गया, हम उन में से किसी के मध्य अन्तर नहीं करते। हम अल्लाह के आज्ञाकारी है।❞ (बक़रः, आयतः 136)

जो व्यक्ति एक रसूल को झुठलाता है, तो मानो वह उस रसूल को भी झुठलाता है जिस ने उसकी पुष्टि की है। और जो उस की नाफ़रमानी करता है, तो वह (हक़ीक़त में) उसकी नाफ़रमानी करता है, जिस ने उस की आज्ञाकारी का हुक्म दिया है। (यानी अल्लाह तआला की।) अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ إِنَّ ٱلَّذِينَ يَكۡفُرُونَ بِٱللَّهِ وَرُسُلِهِۦ وَيُرِيدُونَ أَن يُفَرِّقُواْ بَيۡنَ ٱللَّهِ وَرُسُلِهِۦ وَيَقُولُونَ نُؤۡمِنُ بِبَعۡضٖ وَنَكۡفُرُ بِبَعۡضٖ وَيُرِيدُونَ أَن يَتَّخِذُواْ بَيۡنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا ﴿١٥٠﴾ أُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡكَٰفِرُونَ حَقّٗاۚ وَأَعۡتَدۡنَا لِلۡكَٰفِرِينَ عَذَابٗا مُّهِينٗا ﴿١٥١﴾ ﴾

[النساء، الآيتان: ١٥٠، ١٥١].

अनुवाद : ❝जो लोग अल्लाह तआला, तथा उसके रसूलों (दूतों) के प्रति अविश्वास रखते हैं, और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों के मध्य अलगाव करें, तथा कहते हैं कि हम कुछ को मानते हैं, और कुछ को नहीं मानते। तथा इसके बीच- बीच रास्ता बनाना चाहते हैं, विश्वास करो कि यही अस्ली काफ़िर हैं। और काफ़िरों के लिये हम ने अत्याधिक कठोर यातना तैयार कर रखी है।❞ (निसा, आयातः 150-151)

(2)
"नुबुव्वत" की हक़ीक़तः

"नुबुव्वत" (अर्थात, अल्लाह की तरफ़ से किसी को नबी बनाना) ख़ालिक़ व मख़्लूक़ के बीच, अल्लाह की शरीअत पहुँचाने का वास्ता है। वह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है इसके द्वारा करम करता है। और जिस को चाहता है अपने लिये चुन लेता है। इसमें अल्लाह के अलावा किसी के लिये कोई अख़्तियार और चयन नहीं है। अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ ٱللَّهُ يَصۡطَفِي مِنَ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةِ رُسُلٗا وَمِنَ ٱلنَّاسِۚ إِنَّ ٱللَّهَ سَمِيعُۢ بَصِيرٞ ﴾ [الحج، الآية: ٧٥].

अनुवादः ❝फ़रिश्तों में से तथा मनुष्यों में से, रसूल को अल्लाह ही चयन करता है। बेशक अल्लाह सुनने और देखने वाला है।❞ (हज्ज, आयतः 75)

नुबुव्वत, (अल्लाह की तरफ़ से) दी जाती है। यह कमाई नहीं जाती। और न ही यह ज़ियादा फरमाँबरदारी, अथवा अधिक इबादत करने से हासिल की जा सकती है। और न ही

यह किसी नबी के अख़्तयार या तलब और माँगने से मिलती है। बल्कि इसका चयन, केवल अल्लाह ही की तरफ़ से होता है।

अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿... ٱللَّهُ يَجْتَبِيٓ إِلَيْهِ مَن يَشَآءُ وَيَهْدِيٓ إِلَيْهِ مَن يُنِيبُ ﴿١٣﴾﴾

[الشورى، الآية: ١٣].

अनुवादः "अल्लाह जिसे चाहे अपने लिये चुन लेता है। तथा जो भी उसकी ओर ध्यानमग्न होता है, वह उसका उचित मार्गदर्शन करता है।" (शूरा, आयतः 13)

(3)
रसूल भेजने की हिक्मत व कारणः

रसूल भेजने की हिक्मत निम्नलिखित कुछ चीज़ों में मिलती हैः

1- बन्दों को, बन्दों की गुलामी से, केवल अल्लाह की गुलामी की ओर निकालना। अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿وَمَآ أَرْسَلْنَـٰكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَـٰلَمِينَ ﴿١٠٧﴾﴾ [الأنبياء، الآية: ١٠٧]

अनुवादः "तथा हम ने आप को पूरे विश्व के लिये केवल दया और रहमत बनाकर भेजा है।" (अम्बिया, आयतः 107)

2- उस मक्सद और उद्देश्य को बताना जिसके कारण अल्लाह तआला ने यह मख़्लूक़ रची है। और वह उद्देश्य, यह है किः केवल अल्लाह ही को सत्य माबूद माना जाये। तथा उसी की उपासना की जाये। और यह उद्देश्य केवल उन रसूलों के द्वारा ही जाना जा सकता है जिनको अल्लाह ने अपनी मख़्लूक़

में से चुना। और दुनिया तथा आख़िरत में उनका मर्तबा और पद बढ़ाया। अल्लाह का फरमान है:

﴿ وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا أَنِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ وَٱجْتَنِبُوا۟ ٱلطَّٰغُوتَ ...﴾ [النحل، الآية: ٣٦]

अनुवादः "तथा हम ने प्रत्येक समुदाय में रसूल भेजे, (ताकि वह कहें कि (लोगो!) अल्लाह की उपासना करो और तागूत (असुर) से बचो।" (नहल, आयतः 36)

3- रसूल भेज कर इन्सानों पर हुज्जत (प्रमाण) क़ायम करना। अल्लाह का फ़रमान है:

﴿ رُّسُلًا مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى ٱللَّهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ ٱلرُّسُلِ ۚ وَكَانَ ٱللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٦٥﴾ ﴾ [النساء، الآية: ١٦٥]

अनुवादः "(हम ने इन्हें) शुभसूचक एवं सचेत करता रसूल बनाया, ताकि रसूल भेज देने के पश्चात, अल्लाह तआला पर, लोगों का कोई बहाना तथा अभियोग न रह जाये। और अल्लाह तआला बड़ा बलपूर्वक तथा बड़ी हिक्मत वाला है।"
(निसा, आयतः 165)

4- कुछ उन चीज़ों के बारे में बताना जो हम से ग़ायब हैं। और उनको हमारी बुद्धि नहीं जान सकती। जैसे अल्लाह के नाम और सिफ़तें, तथा फ़रिश्तों और अन्तिम दिन की जानकारी, इत्यादि।

5- रसूल, अच्छा नमूना तथा आदर्श होते हैं। उनके अख़्लाक़ व स्वभाव उच्च होते हैं। तथा वह (ग़लत) शंका और कामवासनाओं से पाक होते हैं। अल्लाह तआला का फरमान है:

﴿ أُوْلَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ هَدَى ٱللَّهُۖ فَبِهُدَىٰهُمُ ٱقۡتَدِهۡۗ ﴾ [الأنعام، الآية: ٩٠]

अनुवादः ❝वही हैं जिन का अल्लाह ने मार्गदर्शन किया। अतः उन्हीं के पथ पर चलो।❞ (अनआम, आयतः 90)

अल्लाह का और फ़रमान हैः

﴿ لَقَدۡ كَانَ لَكُمۡ فِيهِمۡ أُسۡوَةٌ حَسَنَةٌ...﴾ [الممتحنة، الآية: ٦].

अनुवादः ❝वास्तव में तुम्हारे लिये उनमें अच्छा नमूना (आदर्श) है।❞ (मुम्तहिना, आयतः 6)

6- आत्मा की इस्लाह और सुधार करना, उसको पाक साफ़ करना, तथा उसको हर उस चीज़ से सावधान करना जो उसको बिगाड़ सकती है। अथवा उसका अन्त कर सकती है।

अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ هُوَ ٱلَّذِي بَعَثَ فِي ٱلۡأُمِّيِّـۧنَ رَسُولٗا مِّنۡهُمۡ يَتۡلُواْ عَلَيۡهِمۡ ءَايَٰتِهِۦ وَيُزَكِّيهِمۡ وَيُعَلِّمُهُمُ ٱلۡكِتَٰبَ وَٱلۡحِكۡمَةَ ﴾ [الجمعة، الآية: ٢]

अनुवादः ❝वही है जिस ने अशिक्षित लोगों में, उन्ही में से एक संदेष्टा भेजा, जो उन्हें उसकी आयतें पढ़ कर सुनाता है। तथा उनको शुद्ध करता है। और उन्हें कुरआन और हिक्मत की बातें सिखाता है।❞ (जुमा, आयतः 2)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः

(إنما بعثت لأتمم مكارم الأخلاق) [رواه أحمد والحاكم]

अनुवादः (मुझे केवल अच्छे अख़्लाक़ (स्वभाव) की पूर्ति के लिये भेजा गया है।) (अहमद व हाकिम)

(4)

रसूलों के कामः

क- शरीअत (अल्लाह तआला का दीन, पैग़ाम व क़ानून) को लोगों तक पहुँचाना, तथा उनको केवल अल्लाह की उपासना की ओर बुलाना, और दूसरों की गुलामी व उपासना से रोकना। अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ ٱلَّذِينَ يُبَلِّغُونَ رِسَٰلَٰتِ ٱللَّهِ وَيَخۡشَوۡنَهُۥ وَلَا يَخۡشَوۡنَ أَحَدًا إِلَّا ٱللَّهَۗ وَكَفَىٰ بِٱللَّهِ حَسِيبٗا ﴿٣٩﴾ ﴾ [الأحزاب، الآية: ٣٩].

अनुवादः "यह सब ऐसे थे कि अल्लाह तआला के आदेश पहुँचाया करते थे। एवं अल्लाह ही से डरते थे। तथा अल्लाह के अतिरिक्त किसी से नहीं डरते थे। और अल्लाह तआला हिसाब लेने के लिये पर्याप्त है।" (अहज़ाब, आयतः 39)

ख- अल्लाह के उतारे हुये दीन को बयान करना। अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ وَأَنزَلۡنَآ إِلَيۡكَ ٱلذِّكۡرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيۡهِمۡ وَلَعَلَّهُمۡ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٤﴾ ﴾ [النحل، الآية: ٤٤].

अनुवाद : "यह किताब हम ने तुम्हारी ओर उतारी है, ताकि लोगों की ओर जो उतारा गया है, आप उसे स्पष्ट रूप से वर्णन कर दें। शायद कि वह सौच विचार करें।"(नहल आयत44)

ग- लोगों को भलाई का मार्गदर्शन करना। और बुराई से सावधान करना। तथा अच्छे स्वाब (पुण्य) की शुभसूचना देना, और यातना (अजाब) से डराना। अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ رُسُلًا مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ...﴾ [النساء، الآية: ١٦٥].

अनुवादः "हम ने इन रसूलों को शुभसूचक एवं सचेत - कर्ता बनाया|" (निसा, आयतः 165)

घ- कर्म व कथन में उच्च नमूना (आदर्श) बनकर लोगों की इस्लाह और सुधार करना|

ड़- अल्लाह तआला के क़ानून व शरीअत को लोगों में नाफिज (लागू) करना|

च- क़्यामत के दिन रसूलों का अपनी क़ोमों पर गवाही देना कि, उन्होंने अल्लाह तआला का पैग़ाम, साफ़ साफ़ लोगों तक पहुँचा दिया था| अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِن كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَىٰ هَٰٓؤُلَآءِ شَهِيدًا ﴿٤١﴾ ﴾ [النساء، الآية:٤١].

अनुवादः "तो क्या हाल होगा उस समय, जब प्रत्येक समुदाय में से हम एक गवाह लायेंगे! और आप को इन लोगों पर गवाह बनाकर लायेंगे?" (निसा, आयत 41)

(5)
सब नबियों का धर्म, इस्लाम ही था|

इस्लाम ही तमाम नबियों और रसूलों का धर्म रहा है| अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ إِنَّ ٱلدِّينَ عِندَ ٱللَّهِ ٱلْإِسْلَٰمُ ﴾ [آل عمران، الآية: ١٩].

अनुवाद : "निश्चय, अल्लाह के पास धर्म, इस्लाम ही है|"
(आले इमरान, आयतः 19)

सारे नबी केवल अल्लाह की उपासना की ओर बुलाते हैं। और दूसरे की उपासना से रोकते हैं। उनके क़ानून व शरीअत में चाहे मतभेद रहा हो, पर **"अस्ल"** *अर्थातः* **"तौहीद"** (ऐकेश्वरवाद) में वह सब एक थे। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का फ़रमान हैः

(الأنبياء إخوة لعلات) [رواه البخاري]

अनुवादः ❝सारे नबी "अल्लाती" भाई (अर्थात माँ की तरफ़ से सोतीले भाई) हैं।❞ (बुख़ारी शरीफ़)

(6)
रसूल, इन्सान हैं। वह ग़ैब नहीं जानते।

ग़ैब का ज्ञान रखना, अल्लाह तआला की एक सिफ़त है। यह नबियों की विशेषता नहीं है। क्योंकि वह भी दूसरे इन्सानों की तरह इन्सान हैं। खाते भी हैं। और पीते भी हैं। शादी भी करते हैं। और सोते और बीमार भी होते हैं। तथा उनको थकान भी लाहिक़ होती है। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ وَمَآ أَرۡسَلۡنَا قَبۡلَكَ مِنَ ٱلۡمُرۡسَلِينَ إِلَّآ إِنَّهُمۡ لَيَأۡكُلُونَ ٱلطَّعَامَ وَيَمۡشُونَ فِي ٱلۡأَسۡوَاقِۗ...﴾ [الفرقان، الآية: ٢٠].

अनुवादः ❝तथा हम ने आप से पूर्व जितने भी रसूल भेजे, वह सब भोजन भी करते थे, और बाज़ारों में भी चलते फिरते थे०००।❞ (फुरक़ान, आयतः 20)

अल्लाह तआला का और फ़रमान हैः

﴿ وَلَقَدۡ أَرۡسَلۡنَا رُسُلٗا مِّن قَبۡلِكَ وَجَعَلۡنَا لَهُمۡ أَزۡوَٰجٗا وَذُرِّيَّةٗۚ ﴾

[الرعد، الآية: ٣٨].

अनुवादः ❝और हम ने आप से पूर्व बहुत रसूल भेजे हैं। और उनके लिये हम ने पत्नी और संतान बनायी।❞ (राद, आयतः 38)

इसी प्रकार उनको भी, दूसरे इन्सानों की तरह ग़म, ख़ुशी, चुस्ती, और थकान आदि भी पहुँचती है। अल्लाह तआला ने उनको केवल इसलिये चुना, ताकि वह अल्लाह के दीन को लोगों तक पहुँचा दें। और उनको, ग़ैब की केवल वही बातें मालूम हैं, जो अल्लाह तआला ने उनके लिये बता दी हैं।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ عَـٰلِمُ ٱلْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِۦٓ أَحَدًا ﴿٢٦﴾ إِلَّا مَنِ ٱرْتَضَىٰ مِن رَّسُولٍ فَإِنَّهُۥ يَسْلُكُ مِنۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِۦ رَصَدًا ﴿٢٧﴾ ﴾

[الجن، الآيتان ٢٦ ، ٢٧].

अनुवादः ❝वह (यानी अल्लाह तआला), ग़ैब और परोक्ष का जानने वाला है। और अपने परोक्ष पर वह किसी को अवगत नहीं कराता। अतिरिक्त उस संदेष्टा के, जिसे वह प्रिय बना ले। इसलिये कि वह उसके आगे - पीछे, रक्षक निर्धारित कर देता है।❞ (जिन्न, आयतः 27)

(7)
रसूल, पाक और बेगुनाह होते हैं।

अल्लाह तआला ने अपने पैग़ाम को पहुँचाने के लिये सब से अच्छे, तथा अख़्लाक़, स्वभाव, और रूप में सब से पूर्ण लोग चुने। अल्लाह तआला ने उनको हर प्रकार के (छोटे) बड़े गुनाह तथा हर दोष से महफूज और सुरक्षित रखा। ताकि वह अल्लाह की प्रकाशना को अपनी-अपनी क़ौमों तक पहुँचा दें।

अतः वह जो कुछ अल्लाह की तरफ़ से कहते हैं, सब में **"मासूम"** और पाक होते हैं। इस पर पूरी उम्मत का इत्तिफाक़ (एकता) है। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلرَّسُولُ بَلِّغۡ مَآ أُنزِلَ إِلَيۡكَ مِن رَّبِّكَۖ وَإِن لَّمۡ تَفۡعَلۡ فَمَا بَلَّغۡتَ رِسَالَتَهُۥۚ وَٱللَّهُ يَعۡصِمُكَ مِنَ ٱلنَّاسِۗ ﴾ [المائدة، الآية:٦٧]

अनुवादः "ऐ रसूल! आप की ओर, आप के पोषक की तरफ़ से जो उतारा गया है, उसे (लोगों तक) पहुँचा दीजिये। यदि आप ने ऐसा नही किया तो, आप ने अपने पालनहार का संदेश नहीं पहुँचाया। और अल्लाह तआला, लोगों से आप की रक्षा करेगा।" (माइदः, आयतः 67)

अल्लाह तआला का और फ़रमान हैः

﴿ ٱلَّذِينَ يُبَلِّغُونَ رِسَٰلَٰتِ ٱللَّهِ وَيَخۡشَوۡنَهُۥ وَلَا يَخۡشَوۡنَ أَحَدًا إِلَّا ٱللَّهَۗ... ﴾ [الأحزاب، الآية: ٣٩].

अनुवादः "यह सब ऐसे थे कि अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाया करते थे। तथा उसी से डरते थे। और उसके अतिरिक्त किसी से नहीं डरते थे।" (अहज़ाब, आयतः 39)

अल्लाह का और फ़रमान हैः

﴿ لِّيَعۡلَمَ أَن قَدۡ أَبۡلَغُواْ رِسَٰلَٰتِ رَبِّهِمۡ وَأَحَاطَ بِمَا لَدَيۡهِمۡ وَأَحۡصَىٰ كُلَّ شَيۡءٍ عَدَدَۢا ﴿٢٨﴾ ﴾ [الجن، الآية: ٢٨].

अनुवादः "ताकि ज्ञान हो जाये कि उन्होंने अपने प्रभु के संदेश को पहुँचा दिया। अल्लाह ने उनके निकटवर्ती वस्तुओं को घेर

रखा है। तथा प्रत्येक वस्तु की गणना कर रखी है।» (जिन्न, आयतः 28)

यदि किसी नबी से कोई ऐसा छोटा गुनाह हो भी जाये जिसका (अल्लाह के पैग़ाम को) पहुँचाने से कोई सम्बंध नहीं, तो उसको उनके लिये बता दिया जाता है। फिर वह फौरन उस से तौबा कर लेते हैं। और वह ऐसे हो जाते हैं जैसे गुनाह किया ही न हो। और इस से उनका दर्जा और अधिक बढ़ जाता है। क्योंकि अल्लाह तआला ने अपने नबियों को सम्पूर्ण अख़्लाक़ तथा अच्छी सिफ़तों के साथ ख़ास किया है। और उनको हर उस चीज़ से पाक कर दिया है जिस से उनका मान व दर्जा कम हो जा सकता है।

(8)
नबी व रसूलों की सँख्या, तथा सब से अफ्ज़ल रसूल।

यह बात प्रमाणित है कि रसूलों की गिनती तीन सौ (300) से ज़ियादा है। क्योंकि जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से रसूलों की तादाद (गिनती) पूछी गयी तो आप ने फ़रमायाः

(ثلاثمائة وخمس عشرة جمّا غفيرا) [رواه الحاكم]

अनुवादः (तीन सौ पन्द्रह की काफी बड़ी तादाद में हैं।) (हाकिम)

नबियों की तादाद इस से अधिक है। उन में से कुछ की कहानी अल्लाह ने हमको बता दी है। और कुछ की नहीं बतायी। उनमें से अल्लाह ने पच्चीस (25) नबी व रसूलों के नाम कुरआन शरीफ़ में जिक किये हैं। अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنَـٰهُمْ عَلَيْكَ مِن قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ...﴾ [النساء، الآية: ١٦٤].

अनुवादः "और आप से पुर्व के बहुत से रसूलों की घटनायें हम ने आप से वर्णन की हैं। और बहुत से रसूलों की नहीं भी की हैं।" (निसा, आयतः 164)

अल्लाह का और फ़रमान हैः

﴿ وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ ءَاتَيْنَـٰهَآ إِبْرَٰهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِۦ ۚ نَرْفَعُ دَرَجَـٰتٍ مَّن نَّشَآءُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٨٣﴾ وَوَهَبْنَا لَهُۥٓ إِسْحَـٰقَ وَيَعْقُوبَ ۚ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوحًا هَدَيْنَا مِن قَبْلُ ۖ وَمِن ذُرِّيَّتِهِۦ دَاوُۥدَ وَسُلَيْمَـٰنَ وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسَىٰ وَهَـٰرُونَ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِى ٱلْمُحْسِنِينَ ﴿٨٤﴾ وَزَكَرِيَّا وَيَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَإِلْيَاسَ ۖ كُلٌّ مِّنَ ٱلصَّـٰلِحِينَ ﴿٨٥﴾ وَإِسْمَـٰعِيلَ وَٱلْيَسَعَ وَيُونُسَ وَلُوطًا ۚ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى ٱلْعَـٰلَمِينَ ﴿٨٦﴾ وَمِنْ ءَابَآئِهِمْ وَذُرِّيَّـٰتِهِمْ وَإِخْوَٰنِهِمْ ۖ وَٱجْتَبَيْنَـٰهُمْ وَهَدَيْنَـٰهُمْ إِلَىٰ صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٨٧﴾ ﴾

[الأنعام، الآيات: ٨٣-٨٧].

अनुवादः "तथा यह हमारा तर्क है। जिसे हम ने इब्राहीम को, उनके समुदाय की तुलना में दिया। हम जिसका पद चाहें बढ़ा देते हैं। निश्चय तुम्हारा रब ज्ञान तथा हिक्मत वाला है। तथा

हम ने उनहें (पुत्र) इस्हाक़ एवं (पौत्र) याकूब प्रदान किया। तथा प्रत्येक को सीधा रास्ता दिखाया। तथा उनकी संतान में दाऊद एवं सुलैमान तथा अय्यूब एवं यूसुफ तथा मूसा एवं हारून को, तथा इसी प्रकार हम उपकर्मियों को प्रत्युपकार प्रदान करते हैं। तथा ज़करिया एवं यह्या तथा ईसा एवं इल्यास को, प्रत्येक सदाचारियों में से थे। तथा इस्माईल और यसा तथा यूनुस और लूत़ को, प्रत्येक को हम ने विश्वासियों पर प्रधानता दी। तथा उनके पिताओं तथा संतानों एवं भाईयों में से। तथा हम ने उनका निर्वाचन किया। और उन्हें सीधा रास्ता दिखाया।❞

(अनआम, आयतः 83-87)

और अल्लाह तआला ने रसूलों को एक दूसरे पर फजीलत (प्रधानता) दी है। अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ تِلْكَ ٱلرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ﴾ [البقرة، الآية: ٢٥٣].

अनुवादः उन रसूलों को हम ने एक दूसरे पर प्रधानता दी है।❞

(बक़रः, आयतः 253)

इन रसूलों में सब से अफ्ज़ल और उत्तम, **"ऊलूल अज़्म"** (साहस वाले) रसूल हैं। और वहः हजरत नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा, तथा हमारे नबी जनाब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहिम व सल्लम) हैं। अल्लाह का फरमान हैः

﴿ فَٱصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُوْلُوا۟ ٱلْعَزْمِ مِنَ ٱلرُّسُلِ﴾ [الأحقاف، الآية: ٣٥]

अनुवादः ❝अतः आप सब्र (धैर्य) करें। जैसा कि साहस वाले रसूलों ने धैर्य किया।❞ (अहक़ाफ, आयतः 35)

अल्लाह का और फ़रमान हैः

﴿ وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ ٱلنَّبِيِّـۧنَ مِيثَـٰقَهُمْ وَمِنكَ وَمِن نُّوحٍ وَإِبْرَٰهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَى ٱبْنِ مَرْيَمَ ۖ وَأَخَذْنَا مِنْهُم مِّيثَـٰقًا غَلِيظًا ﴿٧﴾ ﴾[الأحزاب، الآية:٧].

अनुवादः ❝जब कि हम ने समस्त नबियों से वचन लिया। (विशेष रूप से) आप से, तथा नूह, इब्राहीम, मूसा और ईसा पुत्र मर्यम से, और हम ने उनसे वचन भी पक्का एवं सुदृढ़ लिया।❞ (अहज़ाब, आयतः 7)

हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम), सब रसूलों से अफ्ज़ल, और आख़िरी नबी, तथा मुत्तक़ियों (अल्लाह से डरने वालों) के इमाम हैं। जब सारे नबी इकट्ठे होंगे तो आप उनके इमाम होंगे। और जब वह (क़्यामत के दिन) आयेंगे तो आप उन की तरफ से बोला होंगे। आप **"मक़ामे महमूद"** वाले हैं। जिस पर अगले पिछले सारे लोग आप पर रश्क (ईर्ष्या) करेंगे। आप **"हम्द"** (अल्लाह की प्रशंसा) के झन्डे तथा **"होज"** (जलाशय) वाले हैं। क़्यामत के दिन आप ही, लोगों की सिफारिश करेंगे। तथा आप ही **"फजीलत"** *व* **"वसीला"** वाले हैं। आप को अल्लाह ने सब से अच्छा क़ानून देकर भेजा। और आप की उम्मत को अल्लाह ने सब से अच्छी उम्मत बनाया। अल्लाह ने आप को, और आप की उम्मत को वह खूबियाँ और विशेषतायें दीं जो पहले लोगों को नहीं दी गयीं। आप की उम्मत पैदा होने में आख़िरी, लैकिन क़्यामत के दिन सब से पहले (ज़िन्दा करके) उठाई जायेगी।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः

(فضلت على الأنبياء بست...) [رواه مسلم]

अनुवादः (मुझे दूसरे नबियों पर छः चीज़ों के द्वारा फजीलत और श्रेष्ठता दी गयी है।) (सहीह मुस्लिम)

आप ने और फ़रमायाः

(أنا سيد ولد آدم يوم القيامة وبيدي لواء الحمد ولا فخر وما من نبي يومئذ، آدم فمن سواه إلا تحت لوائي يوم القيامة) [رواه أحمد والترمذي]

अनुवादः (मैं क़्यामत के दिन आदम (अलैहिस्सलाम) की औलाद का सरदार हुँगा। और मेरे ही हाथ में **"हम्द"** (प्रशंसा) का

झंडा होगा। और इसमें कोई गर्व की बात नहीं। और क़्यामत के दिन, हजरत आदम समैत, सारे लोग मेरे झंडे के नीचे होंगे।) (मुस्नद अहमद, त्रिमिजी)

हमारे नबी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बाद, फजीलत और श्रेष्ठता में हजरत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) हैं। वह अल्लाह के **"ख़लील"** (प्रिय दोस्त) हैं।

अतः दौनों ख़लीलः (मुहम्मद व इब्राहीम अलैहिमस्सलाम), **"ऊलुल ग्रज़्म"** रसूलों में सब से अफ्ज़ल हैं। फिर शेष तीनों का नंबर है।

(9)
नबियों की निशानियाँ और मुजिज़े।

अल्लाह तग्राला ने अपने नबियों का, बड़ी बड़ी निशानियाँ और हैरान कर देने वाले **"मुजिज़े"** (अर्थात चमत्कार) देकर, समर्थन किया। ताकि वह लोगों के लिये, अथवा उनके ख़िलाफ और विरुद्ध, हुज्जत और तर्क हों।

उन्हीं चमत्कारों में से, ***क़ुरआन शरीफ़*** है। इसी प्रकार चाँद का फटना, लाठी का साँप बनना, तथा मिट्टी से चिड़िया पैदा करना आदि हैं।

अतः आदत के ख़िलाफ आने वाला चमत्कार और **मुजिज़ा**, सच्ची मुहब्बत पर दलालत करता है। और **"करामत"** सच्ची "नुबुव्वत" की गवाही देने वाले की सच्चाई को बताती है। अल्लाह का फरमान हैः

﴿لَقَدۡ أَرۡسَلۡنَا رُسُلَنَا بِٱلۡبَيِّنَٰتِ...﴾ [الحديد، الآية: ٢٥].

अनुवादः «निःसंदेह हम ने अपने रसूल खुली हुई चीज़ें देकर भेजे हैं।» (हदीद, आयतः 25)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमायाः

(ما من نبي من الأنبياء إلا وقد أوتي من الآيات ما آمن على مثله البشر وإنما كان الذي أوتيته وحيا أوحاه إلي فأرجو أن أكون أكثرهم تابعا يوم القيامة) [متفق عليه]

अनुवादः (प्रत्येक नबी को ऐसी निशानी दी गयी जिस प्रकार की निशानी को मानव अथवा इन्सान मानता और समझता था। और मुझे जो निशानी दी गयी है, वह, **प्रकाशना** अर्थात कुरआन शरीफ़ है। अतः मुझे आशा है कि क़्यामत के दिन मेरे सब से अधिक मानने वाले होंगे।) (बुख़ारी व मुस्लिम)

(10)

हमारे नबी जनाब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की नुबुव्वत पर ईमान।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की नुबुव्वत पर ईमान लाना, ईमान की बहुत बड़ी बुनियाद है। इस के बिना ईमान पूरा नहीं हो सकता। अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ وَمَن لَّمْ يُؤْمِنۢ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ فَإِنَّآ أَعْتَدْنَا لِلْكَـٰفِرِينَ سَعِيرًا ۝١٣ ﴾ [الفتح، الآية: ١٣].

अनुवादः "जो, अल्लाह तथा उसके रसूल पर ईमान नहीं लाते (तो न लायें), हम ने काफ़िरों के लिये भड़कती यातना तैयार कर रखी है।" (फत्ह, आयतः 13)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का फ़रमान हैः

(أمرت أن أقاتل الناس حتى يشهدوا أن لا إله إلا الله و إنّي رسول الله) [رواه مسلم]

अनुवादः (मुझे आदेश है कि मैं लोगों से लड़ूँ यहाँ तक कि वह यह गवाही दे दें कि, अल्लाह के अलावा कोई (सच्चा) माबूद नहीं। तथा मैं, अल्लाह का रसूल हूँ।) (मुस्लिम)

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर ईमान रखने के लिये कुछ चीज़ें अनिवार्य हैं। जिनके बग़ैर आप पर ईमान पूरा नहीं हो सकता। उन में से कुछ निम्नलिखित हैः

(1) **आप के बारे में ज्ञान प्राप्त करनाः**

आप मुहम्मद पुत्र अब्दुल्लाह पुत्र अब्दुल मुत्तलिब पुत्र हाशिम हैं। हाशिम, कुरैश (खानदान) से हैं। और कुरैश अरब हैं। तथा अरब इस्माईल पुत्र इब्राहीम ख़लील (अलैहिमस्सलाम) की औलाद (संतान) हैं। आप ने (63) वर्ष की आयु पायी। चालीस (40) साल नबी बनाये जाने से पहले, तथा तैईस (23) साल नबी व रसूल बनने के बाद के हैं।

(2) जो बातें आप ने बताई हैं, और जिन चीज़ों के करने का आप ने आदेश दिया है, और जिन के करने से रोका है, उनको मानना। तथा अल्लाह तआला की उपासना, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बताये हुऐ तरीक़े और उपाय के अनुसार करना।

(3) यह यक़ीन रखना कि आप जिन्न और इन्सान, सब की तरफ़ रसूल बनाकर भेजे गये हैं। अतः आपकी आज्ञा दोनों पर जरूरी है। अल्लाह तआला का इरशाद हैः

﴿ قُلْ يَـٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنِّى رَسُولُ ٱللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا ﴾[الأعراف، الآية: ١٥٨]

अनुवादः "(ऐ मुहम्मद!) आप कह दीजिये कि ,ऐ लोगो! मैं तुम सब की ओर अल्लाह का रसूल हूँ।" (आराफ़, आयतः 185)

(4) आप के आख़िरी तथा अन्तिम और सब से अफ्ज़ल व उच्चतम रसूल होने पर ईमान रखना।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿...وَلَـٰكِن رَّسُولَ ٱللَّهِ وَخَاتَـمَ ٱلنَّبِيِّـۧنَۗ﴾ [الأحزاب، الآية: ٤٠]

अनुवादः "बल्कि आप तो अल्लाह के रसूल, और आख़िरी तथा अन्तिम नबी हैं।" (अहज़ाब, आयतः 40)

इसी प्रकार यह विश्वास रखना कि आप, अल्लाह के **"ख़लील"** (प्रिय दोस्त) हैं। तथा हजरत आदम (अलैहिस्सलाम) की संतान के सरदार हैं। और सब से उच्च सिफ़ारिश वाले हैं, जो **"वसीला"** के साथ ख़ास है। **"वसीला"** जन्नत अर्थात स्वर्ग में, सब से ऊँची श्रेणी का नाम है।

इसी प्रकार यह यक़ीन रखना कि आप **"होज"** वाले हैं। और आप की उम्मत सब से अच्छी उम्मत है। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿كُنتُمْ خَيْرَ أُمَّـةٍ أُخْـرِجَتْ لِلنَّاسِ﴾ [آل عمران، الآية: ١١٠].

अनुवादः "तुम, लोगों के लिये सब से अच्छी उम्मत बनाकर पैदा किये गये हो।" (आले इमरान, आयतः 110)

आप की उम्मत की सँख्या, जन्नत में सब से अधिक होगी। इसी प्रकार यह यक़ीन रखना कि आप की **"शरीअत"** ने पिछली सारी **"शरीअतों"** को निरस्त कर दिया है।

(5) अल्लाह तआला ने सब से बड़े "मुजिज़ा" और सब से बड़ी व खुली निशानी के द्वारा, आप का समर्थन किया है। और वह मुजिज़ा अथवा चमत्कार **"कुरआन शरीफ"** है।

वह, अल्लाह का कलाम है। उसके अन्दर कोई परिवर्तन तथा तबदीली नहीं हो सकती। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿قُل لَّئِنِ ٱجْتَمَعَتِ ٱلْإِنسُ وَٱلْجِنُّ عَلَىٰٓ أَن يَأْتُواْ بِمِثْلِ هَـٰذَا ٱلْقُرْءَانِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِۦ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا ﴿٨٨﴾﴾ [الإسراء، الآية: ٨٨].

अनुवादः ❝आप कह दीजिये कि यदि इन्सान और जिन्न भी इकट्ठे हो जायें, तब भी वह उस जैसा कुरआन नहीं ला सकते। चाहे वह आपस में एक दूसरे के सहायक भी बन जायें।❞ (इस्रा, आयतः 88)

अल्लाह का और फ़रमान है :

﴿ إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا ٱلذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُۥ لَحَٰفِظُونَ ۝٩ ﴾

[الحجر، الآية: ٩].

अनुवादः ❝निःसंदेह हम ही ने यह कुरआन उतारा है। और हम ही इसकी हिफ़ाजत करेंगे।❞ (हिज्र, आयतः 9)

(6) यह ईमान रखना कि आप ने (अल्लाह के) पैग़ाम को पहुँचा दिया। अमानत अदा करदी। तथा उम्मत के लिये अच्छा ही अच्छा सौचा, और किया। कोई भलाई की ऐसी बात नहीं छोड़ी जिसको उम्मत के लिये बता न दिया हो। (और इसी प्रकार) बुराई की कोई ऐसी चीज़ न छोड़ी जिस से उम्मत को न रोक दिया हो। तथा सावधान न कर दिया हो। अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُم بِٱلْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝١٢٨ ﴾ [التوبة، الآية:١٢٨]

अनुवादः ❝निःसंदेह तुम्हारे पास, तुम ही में से एक रसूल आये हैं। उनको, तुम्हारी हानि की बातें बहुत भारी लगतीं हैं। वह तुम्हारे लाभ के बड़े इच्छुक रहते हैं। ईमान वालों के लिये अत्यन्त करूणाकारी कोमल ह्रदय हैं।❞ (तौबा, आयतः 128)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः

(ما من نبي بعثه الله في أمة قبلي إلاّ كان حقا عليه أن يدل أمته على خير ما يعلمه لهم ويحذر أمته من شرّ ما يعلمه لهم) [رواه مسلم]

अनुवादः (मुझ से पहले किसी भी समुदाय में जो भी नबी आये, उन पर जरूरी था कि अपनी उम्मत को हर अच्छाई की बातें बतायें। तथा बुरी बातों से सावधान करें।) (मुस्लिम)

(7) आप से मुहब्बत और प्रेम करना। तथा आपकी मुहब्बत को स्वयं और दूसरी सब चीज़ों से आगे रखना। आपका आदर करना, मान करना, तथा प्रशंसा करना, और आप की आज्ञाकारी करना, यह सब आपका हक़ है, जिस को अल्लाह ने आप के लिये क़ुरआन शरीफ़ में प्रमाणित व अनिवार्य किया है।

क्योंकि आप से मुहब्बत करना, (वास्तव में) अल्लाह से मुहब्बत करना है। और आपकी आज्ञाकारी करना, (वास्तव में) अल्लाह ही की आज्ञाकारी करना है।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ قُلْ إِن كُنتُمْ تُحِبُّونَ ٱللَّهَ فَٱتَّبِعُونِى يُحْبِبْكُمُ ٱللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَٱللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣١﴾ ﴾ [آل عمران، الآية: ٣١].

अनुवाद : ❝ऐ मुहम्मद! आप कह दीजिये कि यदि तुम, अल्लाह से प्रेम करना चाहते हो, तो मेरी बात मानो, अल्लाह तुम से प्रेम करेगा। और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा। अल्लाह बहुत बड़ा क्षमा, और रहम करने वाला है।❞ (आले इमरान आयतः 31)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का फ़रमान हैः

(لا يؤمن أحدكم حتى أكون أحب إليه من ولده ووالده والناس أجمعين) [متفق عليه)

अनुवादः (तुम में से कोई उस समय तक मुमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसको, उसके बच्चों, उसके पिता, तथा सब लोगों से अधिक प्रिय न हो जाऊँ।) (बुख़ारी व मुस्लिम)

(8) आप पर अधिक से अधिक दरूद व सलाम भेजना। क्योंकि सब से बड़ा बख़ील और कंजूस वह आदमी है जिस के सामने आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का मुबारक नाम आये, और फिर वह, आप पर दरूद व सलाम न भेजे। अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَـٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّ ۚ يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ صَلُّوا۟ عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا۟ تَسْلِيمًا ﴿٥٦﴾ ﴾ [الأحزاب، الآية: ٥٦].

अनुवादः "निःसंदेह अल्लाह तआला, और उसके फ़रिश्ते, नबि पर दरूद भेजते हैं। ऐ ईमान वालो! तुम भी उन पर दरूद व सलाम भेजो।" (अहज़ाब, आयतः 56)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का इरशाद हैः

(من صلى علي واحدة صلى الله عليه بها عشرا) [رواه مسلم]

अनुवादः (जो व्यक्ति मुझ पर एक बार दरूद भेजेगा, अल्लाह तआला उस पर उस के बदले, दस बार दरूद भेजेगा।) (मुस्लिम)

परन्तु कुछ ऐसी जगह हैं, जहाँ आप पर दरूद और सलाम भेजना अवश्य है। जैसे नमाज़ में **"तशहहुद"** पढ़ते समय, **"क़ुनूत"** (अर्थात शत्रु और दुश्मन पर बद्दुआ करना) में, **जनाज़ा** की नमाज़ में, **जुमा** के ख़ुत्बा तथा **अजान** के पश्चात, और **मस्जिद** में दाख़िल होते, और उस से निकलते समय, **दुआ** करते समय, तथा जब भी आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का **शुभः नाम** आये०००आदि।

(9) आप और दूसरे नबी, अल्लाह तआला के यहाँ जीवित हैं। उनकी ज़िन्दगी **"बर्ज़ख़"** की ज़िन्दगी कहलाती है। लैकिन "शहीदों" की ज़िन्दगी से उनकी ज़िन्दगी पूर्ण तथा उच्च होती है। और उनकी यह ज़िन्दगी, दुनिया की ज़िन्दगी की तरह नहीं है। उनकी इस ज़िन्दगी की दशा को हम नहीं जानते। इसी

प्रकार उनकी इस ज़िन्दगी का यह अर्थ भी नहीं है कि दुनिया में उनकी मृत्यु और मौत नहीं हुई थी। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः

(إن الله حرم على الأرض أن تأكل أجساد الأنبياء) [أبو داود والنسائي]

अनुवादः (अल्लाह तआला ने ज़मीन पर, नबियों के शरीर को खाना हराम कर दिया है।) (अबु दाऊद, नसई)

और फ़रमायाः

(ما من مسلم يسلم علي إلا رد الله علي روحي كي أرد عليه السلام) [رواه أبو داود]

अनुवादः (कोई भी मुसलमान जब मुझ पर सलाम भेजता है, तो अल्लाह तआला मेरे ऊपर मेरी जान को लोटा देता है, यहाँ तक कि मैं उसके सलाम का जवाब दे दूँ।) (अबु दाऊद)

(10) आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आदर तथा आदाब में से यह भी है कि आप के पास आवाज़ बुलंद न की जाये। न तो आप की ज़िन्दगी में, और न ही अब (आप की मृत्यु के बाद), आप की क़ब्र के पास। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَرْفَعُوٓا۟ أَصْوَٰتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ ٱلنَّبِىِّ وَلَا تَجْهَرُوا۟ لَهُۥ بِٱلْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ أَن تَحْبَطَ أَعْمَـٰلُكُمْ وَأَنتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ۝٢ ﴾ [الحجرات، الآية: ٢].

अनुवादः "ऐ ईमान वालो! अपनी आवाज़ नबी की आवाज़ से ऊँची न करो। और उन से उच्च स्वर में बात न करो। जैसे तुम परस्पर अथवा आपस में करते हो। कहीं तुम्हारे कर्म व्यर्थ न हो जायें, और तुम्हें पता भी न चले!" (हुजुरात, आयतः 2)

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के देहान्त हो जाने के बाद भी आप का आदर करना उसी प्रकार वाजिब और अवश्य है, जिस प्रकार आप की ज़िन्दगी में वाजिब था। अतः हम पर आप का मान और आदर उसी तरह करना जरूरी है, जिस प्रकार आपके प्यारे सहाबा किया करते थे।

वह आप की बात मानने में सब से सख़्त और शौक़ीन थे। वह आप का विरुद्ध और मुख़ालफत करने, तथा दीन में अपनी ओर से कोई बात कहने से अति दूर रहते थे।

(11) आपके प्यारे सहाबा अथवा साथी, और आप के घर वाले, तथा आपकी पत्नियों (का आदर) और उन से मुहब्बत करना। उन सब से **"मुम्रालात"** (लगाव और दोस्ती) रखना। उनको बुरा कहने, और उनमें दोष निकालने से बचना। क्योंकि अल्लाह तम्राला उन से प्रसन्न हो चुका है। इसी लिये उनको अपने नबी के साथ रहने के लिये चुना। और इस उम्मत पर उनकी **"मुम्रालात"** (लगाव और दोस्ती) को जरूरी कर दिया। अल्लाह तम्राला का फ़रमान हैः

﴿وَٱلسَّـٰبِقُونَ ٱلْأَوَّلُونَ مِنَ ٱلْمُهَـٰجِرِينَ وَٱلْأَنصَارِ وَٱلَّذِينَ ٱتَّبَعُوهُم بِإِحْسَـٰنٍ رَّضِىَ ٱللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا۟ عَنْـهُ ...﴾ [التوبة، الآية: ١٠٠].

अनुवादः «और जो **"मुहाजिर"** (यानी मक्का शहर को छोड़ कर मदीना आने वाले लोग), और **"अन्सार"** (यानी मदीना शहर के मूल निवासी), आदिम तथा प्रथम हैं, और जितने लोग निःस्वार्थ रूप से उनके अनुयायी हैं, अल्लाह उन सभी से प्रसन्न हुआ, और वह सब अल्लाह से प्रसन्न हुये।»

(तौबा, आयतः 100)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः

(لا تسبوا أصحابي فوالذي نفسي بيده لو أنفق أحدكم مثل أحد ذهبا ما بلغ مدّ أحدهم ولا نصيفه) [رواه البخاري]

अनुवादः (मेरे साथियों को गाली मत देना, क्योंकि, अल्लाह की क़सम! यदि तुम में से कोई **"उहुद"** पहाड़ के बराबर भी सोना ख़र्च कर दे, तो वह उनके एक **"मुद्द"** (80 तौला) तथा उसके आधे के समान भी नहीं हो सकता।) (बुख़ारी शरीफ़)

फिर जो उनके बाद वाले लोग हैं, उनको अल्लाह का आदेश है किः वह उनके लिये बख़्शिश और मग़्फिरत की दुआ करें। और यह भी दुआ करें कि अल्लाह तआला उन के दिल में, उन पहले वाले लोगों के ख़िलाफ़, कोई कीना कपट न डाले। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ وَٱلَّذِينَ جَآءُو مِنۢ بَعۡدِهِمۡ يَقُولُونَ رَبَّنَا ٱغۡفِرۡ لَنَا وَلِإِخۡوَٰنِنَا ٱلَّذِينَ سَبَقُونَا بِٱلۡإِيمَٰنِ وَلَا تَجۡعَلۡ فِي قُلُوبِنَا غِلّٗا لِّلَّذِينَ ءَامَنُواْ رَبَّنَآ إِنَّكَ رَءُوفٞ رَّحِيمٌ ١٠ ﴾ [الحشر، الآية: ١٠].

अनुवादः "तथा जो उनके बाद आये वह कहेंगे कि, ऐ हमारे रब! हमें और हमारे उन भाईयों को क्षमा कर दे, जो हम से पूर्व ईमान ला चुके हैं। तथा ईमान लाने वालों की ओर से हमारे ह्रदय में कपट न डाल। ऐ हमारे रब! बेशक तु बहुत अधिक प्रेम एवं दया करने वाला है।" (हश्र, आयतः 10)

(12) आप के बारे में "ग़ुलू" (अर्थात संलग्नता) से बचना। क्योंकि इस से आपको बड़ी परेशानी होती है। इसलिये आप ने अपनी उम्मत को, अपने बारे में ***"ग़ुलू"***, और अपनी प्रशंसा में, सीमा से बढ़ जाने से रोक दिया है। इसी प्रकार इस से भी आप ने मना कर दिया है कि आप को वह पद दिया जाये जो आप को (अल्लाह की तरफ़ से) नहीं दिया गया। बल्कि वह केवल अल्लाह के लिये विशेष है। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः

(إنما أنا عبد، فقولوا عبد الله ورسوله، لا أحب أن ترفعوني فوق منزلتي)

अनुवादः (मैं तो एक बन्दा हूँ। अतः मुझे अल्लाह का बन्दा और रसूल ही कहो। मुझे यह पसँद नहीं कि तुम मुझे मेरे पद से ऊँचा उठाओ।)

और फ़रमायाः

(لا تطروني كما أطرت النصارى ابن مريم) [رواه البخاري]

अनुवादः (मुझे मेरी सीमा से आगे मत बढ़ाना। जैसा कि ईसाईयों ने (हजरत) ईसा के साथ कर दिया।) (बुख़ारी)

आप से दुआ करना, फरियाद करना, आप की क़ब्र का तवाफ़ और चक्कर काटना, आप के लिये "नज्र" अर्थात प्रतिज्ञा मानना और बलिदान देना आदि जायज़ नहीं है। (यदि किसी ने ऐसा किया तो) यह अल्लाह के साथ शिर्क होगा। और अल्लाह तआला ने किसी भी प्रकार की उपासना को दूसरे के लिये करने से मना कर दिया है।

इसके विपरीत, आप का आदर न करना- जिस से आपकी शान घटती है-, इसी प्रकार आपके अन्दर कमी निकालना, और आपका अपमान करना, अथवा आपका मजाक़ उड़ाना आदि, इस्लाम से ख़ारिज हो जाने, और अल्लाह के साथ कुफ्र करने का कारण है। अल्लाह पाक का फ़रमान हैः

﴿... قُلْ أَبِٱللَّهِ وَءَايَـٰتِهِۦ وَرَسُولِهِۦ كُنتُمْ تَسْتَهْزِءُونَ ﴿٦٥﴾ لَا تَعْتَذِرُوا۟ قَدْ كَفَرْتُم بَعْدَ إِيمَـٰنِكُمْ.. ﴾ [التوبة، الآية: ٦٦ ، ٦٧].

अनुवादः ❝आप कह दीजिये कि क्या, अल्लाह और उसकी आयतों तथा उसके रसूल के साथ तुम हंसी मजाक़ और ठट्ठा कर रहे हो? बहाना न बनाओ। बेशक तुम ईमान लाने के बाद, काफ़िर हो चुके हो।❞ (तौबा, आयतः 66-67)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से **"सच्ची मुहब्बत"** ही आप की शरीअत और आप के पथ पर चलने, तथा उनके ख़िलाफ़ जो चीज़ें हैं, उनके त्याग देने पर उभारती है। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

ا قُلْ إِن كُنتُمْ تُحِبُّونَ ٱللَّهَ فَٱتَّبِعُونِى يُحْبِبْكُمُ ٱللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَٱللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣١﴾ [آل عمران، الآية: ٣١].

अनुवादः ❝(ऐ मुहम्मद! आप कह दीजिये कि यदि तुम अल्लाह से प्रेम करना चाहते हो, तो मेरी आज्ञाकारी करो। अल्लाह तुम से प्रेम करेगा, और तुम्हारे गुनाह क्षमा कर देगा। अल्लाह तआला बहुत बड़ा बख़्शने और रहम करने वाला है।❞ (आले इमरान, 31)

अतः अवश्य है कि आप की प्रशंसा में न तो कोताही की जाये, और न ही सीमा से आगे बढ़ा जाये। आप को न तो अल्लाह तआला की सिफ़तें दे दी जायें, और न ही आपकी मुहब्बत और आदर के हक़ व दर्जे में कमी की जाये।

आप से सच्ची मुहब्बत यह है कि आप की शरीअत को माना जाये। और आप के बताये हुये तरीक़े पर चला जाये।

(13) नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर ईमान, आपकी तस्दीक़, तथा आप की लायी हुई शरीअत पर अमल तथा कर्म किये बिना, सिद्ध नहीं हो सकता। क्योंकि आप की आज्ञाकारी और अनुकरण, (हक़ीक़त में) अल्लाह की आज्ञाकारी और अनुकरण है। इसी प्रकार आप की नाफ़रमानी, (हक़ीक़त में) अल्लाह तआला की नाफ़रमानी है।

आप की तस्दीक़ और पुष्टि तथा आज्ञाकारी से ही, आप पर ईमान रखना साबित हो सकता है।

ईमान का पाँचवा रुक्न

अन्तिम दिन पर ईमान

(1)

अन्तिम दिन (अर्थात क़्यामत) पर ईमान यह है कि (इन्सान) यह यक़ीन रखे कि इस दुनिया की ज़िन्दगी का अन्त है। उसके बाद दूसरे घर में चले जाना है। जिस की आरम्भता मौत तथा "बर्ज़ख़" की ज़िन्दगी से होती है। और उसका गुज़र, क़्यामत और मौत के बाद दौबारा ज़िन्दा किया जाने, "मैदाने हश्र" में इकट्ठे किये जाने, और हर आदमी को उसके किये का बदला दिये जाने से होता है। यहाँ तक कि लोग जन्नत अथवा नरक में चले जायें।

अन्तिम दिन पर ईमान, रखना ईमान का एक रुक्न और स्तम्भ है। जिसके बिना किसी का ईमान पूरा नहीं हो सकता। जो इस पर ईमान नहीं रखता वह काफ़िर (नास्तिक) है।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

ا وَلَٰكِنَّ ٱلْبِرَّ مَنْ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ ﴾[البقرة، الآية:١٧٧]

अनुवाद : ❝लैकिन भलाई यह है कि (मानव), अल्लाह तआला और अन्तिम दिन पर ईमान रखे।❞ (बक़रः, आयतः 177)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम), जिब्राईल वाली हदीस में फ़रमाते हैंः उन्होंने (अर्थात जिब्राईल) ने आप से फ़रमायाः मुझे ईमान के बारे में बताइये! तो आप ने फ़रमाया किः (ईमान), अल्लाह को मानना, उसके फ़रिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों, अन्तिम दिन तथा अच्छे-बुरे भाग्य पर ईमान रखने को कहते हैं। (मुस्लिम शरीफ़ पृष्ठ : 1-157)

अन्तिम दिन के आरम्भ में होने वाली चीज़ें, जिनके बारे में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बता गयें हैं, उन पर ईमान रखना जरूरी है। क्योंकि यह क़्यामत की निशानियों में से हैं।

इन निशानियों को **उलमा** ने दो प्रकार में बाँटा हैः

(क) छोटी निशानियाँः

यह क़्यामत के क़रीब आजाने को बताती हैं। इनकी सँख्या बहुत अधिक है। और वह यदि सारी नहीं तो उनमें से अधिकतर जाहिर हो चुकी हैं। **उन मे से कुछ यह हैंः**

हमारे नबी का पैदा हो जाना। अमानत में विश्वासघात और ख़ियानत करना। मस्जिदों को बहुत अधिक सजाना तथा उन के बनाने में एक दूसरे पर गर्व करना, चरवाहों का ऊँचे-ऊँचे भवन बनाने में एक दूसरे से आगे निकल जाने की कोशिश करना। यहूदियों से लड़ाई तथा उन को मारना, समय का निकट हो जाना, काम कम हो जाना। फ़ितने प्रकट होना। मार धाड़ ज़ियादा मात्रा में हो जाना। और बुराई व "ज़िना" (व्यभिचार) अधिक हो जाना। अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ ٱقۡتَرَبَتِ ٱلسَّاعَةُ وَٱنشَقَّ ٱلۡقَمَرُ ۝١ ﴾ [القمر، الآية: ١].

अनुवाद : "क़्यामत समीप आ चुकी है। और चाँद फट गया है।"

(क़मर, आयतः 1)

(ख) बड़ी निशानियाँः

यह क़्यामत के बिल्कुल क़रीब प्रकट होंगी, तथा क़्यामत के आरम्भ हो जाने को बतायेंगी। यह **दस** निशानियाँ हैं। उन में से अभी कोई जाहिर नहीं हुई है। यह निशानियाँ निम्नलिखित हैंः

- इमाम मह्दी (अलैहिस्सलाम) का निकलना।
- दज्जाल का निकलना।
- ईसा (अलैहिस्सलाम) का आकाश से सहीह निर्णय करने वाला बनकर उतर आना। आप उतर कर **"सलीब"** (Redcross) को तोड़ेंगे। दज्जाल व सुअर को मारेंगे। जिज़या (Tex) को ख़त्म करेंगे। तथा इस्लामी शरीअत के द्वारा हुकूमत करेंगे। याजूज व माजूज क़ौम

निकलेगी तो उस पर बद्दुआ करेंगे। जिसके कारण वह मर जायेगी।

- तीन (बड़े) भूकम्पों का आना। एक पूर्व में, दूसरा पश्चिम में तथा तीसरा अरबों के टापू में।
- धुवें का आना। यह बहुत अधिक धुवाँ आकाश से निकलेगा और सारे लोगों पर छा जायेगा।
- कुरआन शरीफ़ का ज़मीन से उठ कर आसमान में चले जाना।
- सूरज का पश्चिम से निकलना।
- "दाब्बा" (एक जानवर) का निकलना।
- अदन (*यमन देश के अन्दर एक शहर*) से एक बहुत बड़ी आग का निकलना, जो सारे लोगों को शाम (सूर्या देश) की ओर हाँक कर ले जायेगी। और यह निशानी अन्तिम होगी।

सहीह मुस्लिम में हजरत हुजैफा बिन उसैद ग़िफारी (رضي الله عنه) से आया है कि आप ने फ़रमायाः हम को नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने देखा कि हम किसी चीज़ की चर्चा कर रहे हैं। आप ने पूछाः क्या चर्चा कर रहे हो? हम ने कहाः क़्यामत को याद कर रहे हैं। आप ने फ़रमायाः क़्यामत उस समय तक नहीं आयेगी जब तक उस से पहले तुम दस निशानियाँ न देख लो। **और वह यह हैं:**

धुवाँ, दज्जाल, दाब्बा, सूरज का पश्चिम से निकलना, ईसा बिन मर्यम का उतर आना, याजूज, तीन भूकम्प का आना, एक पूर्व में एक पश्चिम में तथा एक अरबों के टापू में। और उनमें अन्तिम निशानी एक आग होगी, जो लोगों को मैदाने महशर में ले जायेगी। यह यमन (देश) से निकलेगी।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः मेरी उम्मत के अन्तिम दिनों में इमाम महदी निकलेंगे। उनके लिये अल्लाह बारिश करेगा। ज़मीन अपनी वनस्पति निकाल देगी।

धन तथा जानवर बहुत होंगे। उम्मत भी बड़ी हो जायेगी। और सात या आठ साल ज़िन्दा रहेगी। (मुस्तदरक हाकिम)

यह भी आया है कि यह निशानियाँ लगातार जाहिर होंगी। जिस प्रकार माला के मोती (बीज अथवा दाने) होते हैं। जब एक जाहिर हो जायेगी, तो दूसरी उसके फौरन बाद जाहिर होगी। जब यह सब निशानियाँ जाहिर हो चुकेंगी, तो अल्लाह के हुक्म से क़्यामत क़ायम हो जायेगी।

क़्यामत से अभिप्राय वह दिन है, जब अल्लाह के आदेश से, सारे लोग अपनी अपनी क़ब्रों से हिसाब के लिये निकलेंगे। अच्छे को पुरुषकार मिलेगा तथा बुरे को यातना।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ يَوْمَ يَخْرُجُونَ مِنَ ٱلْأَجْدَاثِ سِرَاعًا كَأَنَّهُمْ إِلَىٰ نُصُبٍ يُوفِضُونَ ﴿٤٣﴾ ﴾ [المعارج، الآية:٤٣].

अनुवादः "जिस दिन क़ब्रों से यह दोड़ते हुऐ निकलेंगे। जैसे कि वह किसी थान की ओर तीव्र गति से जा रहे हों।" (मआरिज-43)

अन्तिम दिन के क़ुरआन शरीफ़ में कई नाम आये हैं। उनमें से कुछ यह हैंः **"क़्यामत का दिन"**, **"क़ारिआ"**, **"हिसाब का दिन"**, **बदले का दिन"**, **"ताम्मा"**, **"वाक़िआ"**, **"हाक़्क़ा"**, **"साख़्ख़ा"**, **"ग़ाशिआ"**, आदि।

(1) "क़्यामत का दिन"- : अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ لَآ أُقْسِمُ بِيَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ ﴿١﴾ ﴾ [القيامة، الآية:١].

अनुवादः "मुझे क़सम है क़्यामत के दिन की।" (क़ियामा,आयत-1)

(2) "क़ारिआ"- : अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ ٱلْقَارِعَةُ ﴿١﴾ مَا ٱلْقَارِعَةُ ﴿٢﴾ ﴾ [القارعة، الآيتان: ١، ٢].

अनुवादः ❝वह खड़खड़ा देने वाली! (पता है) क्या है वह खड़खड़ा देने वाली?!❞ (क़ारिआ़, आयतः 1-2)

(3) "हिसाब का दिन"- अल्लाह तआ़ला का फ़रमान हैः

﴿...إِنَّ ٱلَّذِينَ يَضِلُّونَ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ لَهُمۡ عَذَابٞ شَدِيدُۢ بِمَا نَسُواْ يَوۡمَ ٱلۡحِسَابِ ٢٦﴾ [ص، الآية: ٢٦].

अनुवादः ❝बेशक जो लोग अल्लाह के रास्ते से भटके पड़े हैं, उनके लिये कठोर यातना है। इसलिये कि उन्होंने हिसाब के दिन को भुला दिया है।❞ (सॉद, आयतः 26)

(4) "बदले का दिन" - अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हैः

﴿وَإِنَّ ٱلۡفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٖ ١٤ يَصۡلَوۡنَهَا يَوۡمَ ٱلدِّينِ ١٥﴾ [الانفطار، الآيتان: ١٣، ١٤].

अनुवादः ❝बेशक कुकर्मी लोग नरक में होंगे। वह बदले वाले दिन उसमें प्रवेश करेंगे।❞ (इन्फितार, आयतः 13-14)

(5) "ताम्मा" - अल्लाह ने फ़रमायाः

﴿فَإِذَا جَآءَتِ ٱلطَّآمَّةُ ٱلۡكُبۡرَىٰ ٣٤﴾ [النازعات، الآية: ٣٤].

अनुवादः ❝अतः जब सब से बड़ी विपत्ति (क़्यामत) आ जायेगी।❞ (नाज़िआ़त, आयतः 34)

(6) "वाक़िआ़" - अल्लाह ने फ़रमायाः

﴿إِذَا وَقَعَتِ ٱلۡوَاقِعَةُ ١﴾ [الواقعة، الآية: ١].

अनुवादः ❝जब प्रलय स्थापित हो जायेगी।❞ (वाक़िआ़, आयतः 1)

(7) "हाक़्क़ा"- अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ ٱلۡحَآقَّةُ ۝١ مَا ٱلۡحَآقَّةُ ۝٢ ﴾ [الحاقة، الآيتان: ١، ٢].

अनुवादः "सिद्ध (व्याप्त) होने वाली! क्या है सिद्ध होने वाली।"
(हाक़्क़ा, आयतः 1-2)

(8) "साख़्ख़ा" - अल्लाह ने फ़रमाया हैः

﴿ فَإِذَا جَآءَتِ ٱلصَّآخَّةُ ۝٣٣ ﴾ [عبس، الآية: ٣٣].

अनुवादः "अतः जब कान फाड़ देने वाली आ जायेगी।"
(अबस, आयतः33)

(9) "ग़ाशिया" - अल्लाह ने फरमायाः

﴿ هَلۡ أَتَىٰكَ حَدِيثُ ٱلۡغَٰشِيَةِ ۝١ ﴾ [الغاشية، الآية: ١].

अनुवादः "क्या तुम्हें ढ़ाँप लेने वाली की ख़बर आ गयी है?।"
(ग़ाशिया, आयतः 1)

(2)
आख़िरी दिन पर ईमान कैसे रखा जाये।

आख़िरी दिन पर ईमान के दौ रूप हैंः

(क) संछिप्त रूप से।

(ख) विस्तार पूर्वक।

संछिप्त रूप से ईमान का अर्थ है कि हम यह विश्वास रखें कि एक दिन ऐसा है, जिस में अल्लाह तआला अगले पिछले सब लोगों को जमा करेगा। और प्रत्येक को उसके कर्म का बदला देगा। फिर कुछ लोग जन्नत में जायेंगे, तथा शेष नरक में जायेंगे। अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ قُلْ إِنَّ ٱلْأَوَّلِينَ وَٱلْآخِرِينَ ۝٤٩ لَمَجْمُوعُونَ إِلَىٰ مِيقَٰتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ۝٥٠ ﴾ [الواقعة، الآيتان: ٤٩، ٥٠].

अनुवादः ❝आप कह दीजिये कि पहले और पिछले लोग एक निर्धारित दिन अवश्य एकत्रित किये जायेंगे।❞ (वाक़िआ-49-50)

विस्तारपूर्वक ईमान का अर्थ यह है कि, हम मौत के बाद होने वाली सारी चीज़ों के विस्तार पर ईमान रखें। इस में निम्नलिखित चीज़ें आती हैंः

۞ (1)- क़ब्र का फ़ितना (आज़माइश):

इस से अभिप्रायः मुर्दा (मृतक) को दफ़नाने के बाद उस से, उसके रब, उसके धर्म, तथा उसके नबी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बारे में प्रश्न किया जाना है।

अल्लाह तआला मुमिनों को "साबित बात" से साबित क़दम रखेगा। जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है कि, जब उस से प्रश्न किये जाते हैं, तो वह उत्तर देता हैः "मैरा रब, अल्लाह है। मैरा धर्म, इस्लाम है तथा मैरा नबी, मुहम्मद हैं।" (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)। (बुख़ारी व मुस्लिम)

अतः हदीस जो बताती है कि फ़रिश्ते प्रश्न करते हैं। और उसकी दशा, तथा मुमिन क्या उत्तर देता है और मुनाफ़िक़ *(जो केवल दिखावे के लिये मुसलमान हो)* क्या उत्तर देता है, इन सब पर ईमान रखना वाजिब तथा अनिवार्य है।

۞ (2) - क़ब्र की यातना व आरामः

क़ब्र के अजाब तथा आराम पर ईमान लाना भी जरूरी है। और यह कि क़ब्र या तो नरक का एक गढ़ा है। या जन्नत की एक क्यारी है। क़ब्र आख़िरत की पहली सीढ़ी है। जो इस से नजात और छुटकारा पा गया, उसके लिये बाद वाली मन्ज़िलें आसान हैं। और जो इसी से नजात न पा सका तो बाद

की मन्ज़िलें उस के लिये अधिक कठिन हैं। और जो मर गया, समझो उसकी क़्यामत क़ायम हो गयी।

क़ब्र में अजाब और आराम, मनुष्य के शरीर व जान दोनों को मिलते हैं। परन्तु कभी केवल जान को ही मिलते हैं। अजाब, काफ़िर व अत्याचारियों को, तथा आराम, सच्चे मुमिनों को मिलेगा।

बर्ज़ख़ *(दुनिया व आख़िरत के बीच की मन्ज़िल)* में मुर्दा को या तो आराम मिलता है, या अजाब। चाहे वह क़ब्र में दफ़न किया गया हो या न किया गया हो। अतः यदि किसी मुर्दे को जला दिया जाये या पानी में डूब जाये या उसको दरिन्दे अथवा परिन्दे खा जायें, तब भी उसको वह यातना या आराम अवश्य मिल कर रहेगा। अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ ٱلنَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا ۖ وَيَوْمَ تَقُومُ ٱلسَّاعَةُ أَدْخِلُوٓا۟ ءَالَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ ٱلْعَذَابِ ﴾ ﴿٤٦﴾ [غافر، الآية: ٤٦].

अनुवादः "आग है, जिस पर वह प्रत्येक प्रातः एवं शाम को लाये जाते हैं। तथा जिस दिन क़्यामत स्थापित होगी (आदेश होगा कि) फ़िरऔन के अनुयायियों को अति कठोर यातना में डालो।" (ग़ाफ़िर, आयतः 46)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का फ़रमान हैः

(فلولا أن لا تدافنوا لدعوت الله أن يسمعكم من عذاب القبر) [رواه مسلم]

अनुवादः (अगर यह बात न होती कि तुम दफ़न करना छोड़ दोगे तो मैं अल्लाह से दुआ करता कि तुम को क़ब्र का कुछ अजाब सुना दे।) (मुस्लिम)

۞ (3) - सूर (सँख) में फूँकनाः

"सूर", एक सींग है। जिस में इस्राफ़ील (अलैहिस्सलाम) फूँक मारेंगे। पहली फूँक मारेंगे तो सारी मख़्लूक़ मर जायेगी।

हाँ अल्लाह जिस को चाहेगा वह नहीं मरेगा। फिर दूसरी फूँक मारेंगे तो दुनिया रचने से लेकर क़यामत तक की सारी मख़्लूक़ ज़िन्दा हो जायेगी। अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ وَنُفِخَ فِي ٱلصُّورِ فَصَعِقَ مَن فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَن فِي ٱلْأَرْضِ إِلَّا مَن شَآءَ ٱللَّهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَىٰ فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنظُرُونَ ﴿٦٨﴾ ﴾

[الزمر، الآية: ٦٨].

अनुवादः "और सँख में फूँका जायेगा तो ज़मीन व आकाश की प्रत्येक चीज़ बेहोश हो जायेगी। हाँ जिस को अल्लाह न चाहे वह नहीं होगा। फिर उस में दौबारा फूँका जायेगा तो वह सब खड़े होकर देख रहे होंगे।" (ज़ुमर, आयतः 68)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः

(ثم ينفخ في الصور فلا يسمعه أحد إلاّ أصغى ليتا ورفع ليتا، ثم لا يبقى أحد إلاّ صعق، ثم ينزل الله مطرا كأنّه الطلّ ، فتنبت منه أجساد النّاس، ثم ينفخ فيه فإذا هم قيام ينظرون) [مسلم]

अनुवादः (फिर सँख में फूँक मारी जायेगी, तो जो भी उसे सुनेगा उस का ध्यान उसी की ओर हो जायेगा। फिर सब बेहोश हो जायेंगे। उसके बाद अल्लाह तआला शबनम की तरह बारिश उतारेगा। उस के कारण लोगों के शरीर उग आयेंगे। फिर सँख में दौबारा फूँका जायेगा, तो सारे लोग उठ कर देखने लग जायेंगे।) (मुस्लिम)

۞ (4) - मरने के बाद दौबारा उठना।

जब सँख में दौबारा फूँका जायेगा, तो अल्लाह तआला मुर्दों को ज़िन्दा कर देगा। और सारे लोग अल्लाह के पास जाने के लिये उठ खड़े होंगे।

जब अल्लाह तआला सँख में फूँक मारने, और जानों को दौबारा शरीरों में जाने की आज्ञा दे देगा, तो सारे लोग अपनी

अपनी क़ब्रों से खड़े हो जायेंगे। और नंगे पैर,नंगे शरीर और बग़ैर "ख़त्ना" किये हुये, तथा ख़ाली हाथ मैदाने महशर की ओर दोड़ पड़ेंगे। इस मैदान में बड़ा समय लगेगा। सूरज उन से अति समीप होगा। उसकी गर्मी बढ़ा दी जायेगी। और मैदाने महशर की सख़्ती से वह पसीना में शराबोर होंगे। कुछ का पसीना उनके टख़्नों तक होगा। कुछ का उनके घुटनों तक, कुछ का उनकी कमर तक,कुछ का उनके सीने तक, कुछ का काँधों तक तथा कुछ को पसीना ने लगाम लगाई हुई होगी। जैसे जिस के कर्म होंगे उसी मात्रा में उसका पसीना होगा।

मरने के बाद दौबारा उठाया जाना सत्य है। इस के प्रमाण **"शरीअत"** के द्वारा और **"हिस्स"** (इंद्रियों द्वारा) तथा **अक़्ल (बुद्धि)** से भी मिलते हैं।

❁ शरीअत से प्रमाणः

कुरआन शरीफ़ की बहुत सी आयतें तथा सुन्नत की बहुत सी हदीसें इसका प्रमाण हैं। अल्लाह तआला का फ़रमान हैं:

﴿... قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّى لَتُبْعَثُنَّ...﴾ [التغابن، الآية: ٧].

अनुवादः "आप कह दीजिये, क्यों नही? अल्लाह की क़सम! तुम जरूर दौबारा जीवित किये जाओगे।" (तग़ाबुन, आयतः 7)

और फ़रमायाः

﴿كَمَا بَدَأْنَآ أَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيدُهُۥ...﴾ [الأنبياء، الآية: ١٠٤].

अनुवादः "जिस प्रकार हम ने पहले पैदा किया, उसी प्रकार दौबारा पैदा कर देंगे।" (अम्बिया, आयतः 104)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः

अनुवादः (फ़िर सँख में फूँक मारी जायेगी, तो जो भी उसे सुनेगा उस का ध्यान उसी की ओर हो जायेगा। फिर सब बेहोश हो जायेंगे। उसके बाद अल्लाह तआला शबनम की तरह बारिश उतारेगा। (अथवा साया की तरह,- हदीस की रिवायत अर्थात उदघृत करने वाले को शक है) उस के कारण लोगों के शरीर उग आयेंगे। फिर सँख में दौबारा फूँका जायेगा, तो सारे लोग उठ कर देखने लग जायेंगे।) (सहीह मुस्लिमः पृष्ठ 4-2259)

और अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿...قَالَ مَن يُحۡيِ ٱلۡعِظَٰمَ وَهِيَ رَمِيمٞ ٧٨ قُلۡ يُحۡيِيهَا ٱلَّذِيٓ أَنشَأَهَآ أَوَّلَ مَرَّةٖۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلۡقٍ عَلِيمٌ ٧٩﴾ [يس، الآيتان: ٧٨ ، ٧٩]

अनुवादः ❝उस ने कहा कि इन गली-सड़ी अस्थियों और हड्डियों को कोन जीवित कर सकता है? आप कह दीजिये कि इन्हें वही जीवित करेगा जिस ने उन्हें पहली बार पैदा किया था। वह प्रत्येक पैदाईश को भली-भाँती जानने वाला है।❞ (यासीन, 78-79)

❈ "महसूस" से प्रमाणः

अल्लाह तआला ने, इसी दुनिया में, अपने बंदों के लिये, कुछ मुर्दों को जीवित करके भी दिखा दिया है।

सूरः बक़रा में इसके पाँच उदाहरण हैं:

➢हजरत मूसा (अलैहिस्सलाम) की क़ौम को, मरने के बाद दौबारा ज़िन्दा करना।

➢"बनी इस्राईल" में जिस आदमी की हत्या हो गयी थी, उसको दौबारा ज़ीवित करना।

➢जो लौग मौत के डर से अपने घर छोड़ कर भाग निकले थे, (उनको मरने के बाद दौबारा जीवित करना।)

➢वह व्यक्ति जो एक गाँव के पास से गुज़र रहा था,(उसको मरने के सौ साल बाद दौबारा जीवित करना।)

➢तथा हजरत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की चिड़ियों (को टुकड़े टुकड़े करने के बाद दौबारा जीवित करना।)

❈ अक़्ल (बुद्धि) द्वारा दौ तरह से प्रमाण मिलते हैं:

क- अल्लाह तआला ने ज़मीन व आकाश, तथा उनके बीच वाली चीज़ों को, पहले-पहल और बिना किसी आदर्श के पैदा किया है। और जो पहली बार किसी चीज़ को पैदा कर सकता है, वह दौबारा भी उसको पैदा कर सकता है।

ख- ज़मीन, बेजान और मुर्दा हो जाती है। अल्लाह तआला उस पर बारिश उतारता है, तो वह हरी भरी होकर भाँत-भाँत के पैड़ पौधों से लहलहा उठती है। अतः जो ज़मीन को मरने के बाद दौबारा जीवित कर सकता है, वही मुर्दों को भी दौबारा ज़िन्दा कर सकता है।

۞ (5) - हश्र, हिसाब, और बदलाः

हमारा यक़ीन है कि इन्सानों के शरीर इकट्ठे किये जायेंगे। और उन से पूछ-गछ होगी। और उनके बीच निर्णय किया जायेगा, तथा लोगों को उनके कर्मों का बदला दिया जायेगा।

अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

﴿...وَحَشَرْنَـٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ۝٤٧﴾ [الكهف، الآية: ٤٨]

अनुवादः "हम उनको इकट्ठा करलेंगे, और किसी को भी नही छोड़ेंगे।" (कहफ, आयतः 48)

और फ़रमायाः

﴿فَأَمَّا مَنْ أُوتِىَ كِتَـٰبَهُۥ بِيَمِينِهِۦ فَيَقُولُ هَآؤُمُ ٱقْرَءُوا۟ كِتَـٰبِيَهْ ۝١٩ إِنِّى ظَنَنتُ أَنِّى مُلَـٰقٍ حِسَابِيَهْ ۝٢٠ فَهُوَ فِى عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝٢١﴾

[الحاقة، الآيات: ١٩-٢١].

अनुवादः ❝अतः जिसका कर्मपत्र उसके दाहिने हाथ में दिया जायेगा, तो वह कहेगाः आओ, मेरा कर्मपत्र पढ़ो! मुझे तो यक़ीन था कि मैं अपना हिसाब पाऊँगा। अतः वह सुखी जीवन में होगा।❞ (हाक़्क़ा, आयतः 19-21)
और फ़रमायाः

ا وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَـٰبَهُۥ بِشِمَالِهِۦ فَيَقُولُ يَـٰلَيْتَنِى لَمْ أُوتَ كِتَـٰبِيَهْ ﴿٢٥﴾ وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ﴿٢٦﴾ ﴾ [الحاقة، الآيتان: ٢٥ ، ٢٦].

अनुवादः ❝और जिसे उसका कर्मपत्र उसके बायें हाथ में दिया गया, तो वह कहेगाः हाय! काश मुझे मेरा कर्मपत्र दिया ही न जाता! और मुझे अपने हिसाब का पता ही न चलता!❞
(हाक़्क़ा, आयतः 25-26)

﴿حشر﴾ का अर्थ हैः "लोगों को, हिसाब लेने के लिये, महशर के मैदान की ओर हाँकना।"

﴿بعث﴾ का अर्थ हैः "शरीरों में जान डालना।"

इन दोनों में अन्तर यह है किः ﴿بعث﴾ः शरीर में जान डालने को कहते हैं। और ﴿حشر﴾ः इन जान डाले हुये शरीरों को, मैदाने महशर में इकट्ठा करने को कहते हैं।

"الجزاء والحساب" का अर्थ यह है किः अल्लाह तआला, अपने बन्दों को अपने सामने खड़ा करके, उनको उनके किये हुऐ कामों को याद दिलायेगा।

अल्लाह के सदाचारी मुमिन बन्दों का हिसाब इस प्रकार होगा कि, उनके कार्य उनके सामने कर दिये जायेंगे। ताकि वह अपने ऊपर अल्लाह की कृपा और महरबानी को जान लें। कि अल्लाह तआला ने उनके गुनाहों को दुनिया में छुपाया और आख़िरत में उनको क्षमा कर दिया। उनको, उनके कर्मों के

अनुसार इकट्ठा किया जायेगा। उनकी आगमानी फ़रिश्ते करेंगे। और उनको जन्नत की ख़ुशख़बरी देंगे।

इसी प्रकार वह उनको, इस कठिन दिन की हौलनाकी और डर से सुरक्षित रखेंगे। उनके चैहरे सफेद होंगे। और ख़ुशी के मारे वह रौशन और दमक रहे होंगे।

रही झुठलाने वालों और मुँह फेर लेने वालों की बात, तो उनका हिसाब बड़ा ही कठिन होगा। और हर छोटी बड़ी चीज़ का उन से बारीक हिसाब लिया जायेगा।

क़्यामत के दिन उन्हें रुसवा और अपमानित करने के लिये उनको, चैहरों के बल घसीटा जायेगा। यह उनके झुठलाने और उनके किये का बदला होगा।

क़्यामत के दिन सब से पहले, मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की उम्मत का हिसाब लिया जायेगा। उन में सत्तर हज़ार लोग ऐसे होंगे जो बिना हिसाब व अजाब के, जन्नत में जायेंगे। क्योंकि उनकी **"तौहीद"** (ऐकेश्वरवाद) हर प्रकार से बिल्कुल पूर्ण होगी।

यह वह लोग हैं जिनका वर्णन इस हदीस में आया हैः

(...لا يَسْتَرْقُوْنَ ولا يَكْتَوُوْنَ ولا يَتَطَيَّرُوْنَ وَعلى ربِّهِم يَتَوَكَّلُوْنَ)

अनुवादः (०००जो झाड़-फूँक नहीं करवाते, और न ही दग़वाते हैं। और न ही बुरा शुगून लेते हैं। तथा केवल अपने रब पर ही भरोसा रखते हैं।)

उन्हीं में से एक सहाबी *उक्काशा बिन मिहसन* (ﷺ) हैं।

अल्लाह तआला का वह हक़ जिसके बारे में बन्दे से सबसे पहले पूछा जायेगा, नमाज़ है।

और बन्दों के हक़ में से सब से पहले खून के बारे में पूछा जायेगा।

۞ (6) - हौज़ (अर्थात घाट और जलाशय)।

हम नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के हौज पर ईमान रखते हैं। वह बहुत बड़ा और अच्छा घाट अथवा जलाशय होगा। उसका पानी, जन्नत में एक **"कौसर"** नामी नहर से आ रहा होगा। और केवल ईमान वाले ही उस पर आ सकेंगे।

❋ इस घाट का वर्णन और बयानः

इस हौज का पानी, दूध से अधिक सफ़ेद, बर्फ़ से अधिक ठंडा, शहद से अधिक मीठा, तथा मुश्क (कस्तूरी की खुशबू) से अधिक खुशबू वाला होगा। वह बहुत लम्बा और चौड़ा होगा। उसकी चौड़ाई, उसकी लम्बाई के बराबर होगी। उसके एक कोने से दूसरे कोने तक पहुँचने में एक महीना लगेगा। उसमें दौ नाले होंगे, जो जन्नत से उसमें पानी पहुँचा रहे होंगे। उसके बर्तन, आसमान के सितारों से भी अधिक होंगे। जो उस से एक बार पी लेगा, वह फिर कभी प्यासा नहीं होगा।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः

(حوضي مسيرة شهر، ماؤه أبيض من اللبن، وريحه أطيب من المسك، وكيزانه كنجوم السماء، من شرب منه فلا يظمأ أبدا) [رواه البخاري]

अनुवादः (मैरे हौज (की लम्बाई और चौड़ाई) एक महीना चलने के बराबर है। उसका पानी दूध से अधिक सफ़ेद, और उसकी खुशबू मुश्क से अधिक अच्छी है। उसके गिलास, आसमान के सितारों की तरह हैं। जो उस से पी लेगा वह फिर कभी प्यासा नहीं होगा।) (बुख़ारी)

۞ (7) - सिफ़ारिशः

जब क़्यामत के दिन लोगों पर परेशानी अति सख़्त हो जायेगी, और उनको खड़े-खड़े बहुत अधिक समय गुज़र जायेगा, तो वह कोशिश करेंगे कि, अल्लाह तआला के पास कोई उनकी सिफ़ारिश करे ताकि उनको महशर की

कठिनाईयों तथा उसकी परेशानियों और हौलनाकियों से छुटकारा मिल जाये।

परन्तु **"ऊलुल अ़ज़्म"** रसूल भी इस से माजरत और याचना कर देंगे। फिर मुआ़मला जनाब हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तक पहुँचेगा। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के अगले पिछले सारे गुनाह माफ़ और क्षमा हैं। आप ही इस के लिये तैयार होंगे। इस पर, सारे अगले पिछले लोग आपकी प्रशंसा कर उठेंगे। इस से आपका ऊँचा और बुलंद पद, लोगों पर जाहिर और प्रकट हो जायेगा। आप जायेंगे और अल्लाह तआ़ला के अर्श (सिंहासन) के नीचे जाकर, सज्दा में गिर जायेंगे। अल्लाह तआ़ला, आप के दिल में प्रशंसा करने के बेमिसाल और अनौखे शब्द डाल देगा। उनके द्वारा आप, अल्लाह की प्रशंसा तथा बुजुर्गी बयान करेंगे। और अपने रब से लोगों के लिये सिफ़ारिश करने की आज्ञा माँगेंगे। अतः आप को यह आज्ञा मिल जायेगी। और लोगों के बीच, सहन से बाहर कठिनाई और परेशानी पहुँच जाने के बाद, फैसला और निर्णय कर दिया जायेगा।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः

(إن الشمس تدنو يوم القيامة حتى يبلغ العرق نصف الأذن، فبينما هم كذلك استغاثوا بآدم ثم بإبراهيم ثم بموسى ثم بعيسى ثم بمحمد ﷺ ، فيشفع ليقضى بين الخلق، فيمشي حتى يأخذ بحلقة الباب، فيومئذ يبعثه الله مقاما محمودا، يحمده أهل الجمع كلهم) [رواه البخاري]

अनुवादः "क़्यामत के दिन सूरज क़रीब हो जायेगा। यहाँ तक कि पसीना आधे कान तक पहुँच जायेगा। इस हाल में लोग हजरत आदम (अलैहिस्सलाम) से सिफ़ारिश करने को कहेंगे। फिर इब्राहीम से, फिर मूसा से, फिर ईसा से, और अन्त में जनाब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से तलब करेंगे।

फिर आप सिफ़ारिश करेंगे, ताकि लोगों के मध्य निर्णय कर दिया जाये। आप जाकर दरवाज़े का कुंडा पकड़ लेंगे। इसी दिन अल्लाह तआला, आप को **"मक़ामे महमूद"** (अर्थात प्रशंसा किया गया मक़ाम व अवसर) प्रदान फ़रमायेंगे। क्योंकि इस पर सारे मैदाने-महशर वाले आपकी प्रशंसा कर उठेंगे।) (बुख़ारी)

यही सब से बड़ी सिफ़ारिश है। अल्लाह तआला ने इसको हमारे नबी जनाब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये ख़ास कर रखा है।

इसके अतिरिक्त कुछ और सिफ़ारिशें भी हैं जिनको आप करेंगे। **उनमें से कुछ निम्नलिखित हैंः**

❁ जन्नत वालों के लिये सिफ़ारिश। ताकि वह जन्नत में दाख़िल हो जायें।

इसका प्रमाण आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का यह फ़रमान हैः

(آتي باب الجنة يوم القيامة فأستفتح، فيقول الخازن: من أنت؟ قال: فأقول: محمد، فيقول: بك أمرت، لا أفتح لأحد قبلك) [رواه مسلم]

अनुवादः (मैं क़्यामत के दिन जन्नत के द्वार पर आऊँगा। और दरवाज़ा खोलने को कहुँगा। तो दारोग़ा कहेगाः आप कोन हैं? मैं उत्तर दुँगा किः मुहम्मद हूँ। तब वह कहेगाः आप ही के लिये दरवाज़ा खोलने का मुझे आदेश दिया गया है। आप से पहले मैं किसी के लिये नहीं खोल सकता।) (मुस्लिम)

❁ ऐसे लोगों के बारे में आपकी सिफ़ारिश जिनकी नेकियाँ और बुराईयाँ बराबर होंगी। उनके लिये आप जन्नत में दाख़िल हो जाने की सिफ़ारिश करेंगे। (यह बात कुछ "उलमा" ने लिखी है। परन्तु इस विषय में कोई सहीह हदीस नहीं है।)

❁ऐसे लोगों के लिये सिफ़ारिश जो नरक के हक़दार हो चुके होंगे। ताकि वह नरक में न जायें।

इसका प्रमाण आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की इस हदीस से मिलता हैः

(شفاعتي لأهل الكبائر من أمتي) [رواه أبو داود]

अनुवादः (मैरी सिफ़ारिश मैरी उम्मत के उन लोगों के लिये है जिन्होंने बड़े बड़े गुनाह किये होंगे।) (अबु दाऊद)

❀ जन्नत वालों के लिये आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सिफ़ारिश। ताकि उनको और ऊँचे पद और मर्तबे मिल जायें। इसका प्रमाण आप का यह फ़रमान हैः

(اللّهمّ اغفر لأبي سلمة وارفع درجته في المهديين) [مسلم]

अनुवादः (ऐ अल्लाह! अबूसलमा को बख़्श दे। और हिदायत पाने वालों में उनका दर्जा और पद ऊँचा कर दे।) (मुस्लिम)

❀ ऐसे लोगों के लिये आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सिफ़ारिश जो जन्नत में बिना हिसाब व अजाब के दाख़िल होंगे।

इसका प्रमाण उक्काशा बिन मिहसन वाली हदीस है। जो उन सत्तर हज़ार लोगों के बारे में है, जो बिना हिसाब व अजाब के जन्नत में दाख़िल होंगे। उन (अर्थातः उक्काशा) के लिये आप ने दुआ की थी किः

(اللّهمّ اجعله منهم) [رواه البخاري ومسلم]

अनुवादः (ऐ अल्लाह! इनको उन्ही में से कर दे।) (बुख़ारी व मुस्लिम)

❀ गुनाह कबीरा (बड़े बड़े गुनाह) करने वाले, जो जहन्नम में जा चुके होंगे, उन के बारे में आपकी सिफ़ारिश, ताकि वह नरक से निकल आयें। इसका प्रमाण आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की यह हदीस हैः

(شفاعتي لأهل الكبائر) [أبو داود]

अनुवादः (मैरी सिफ़ारिश मैरी उम्मत के बड़े बड़े गुनाह करने वालों के लिये होगी।) (अबु दाऊद)

इसी प्रकार आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का यह फरमानः

(يُخْرَجُ قَوْمٌ مِنَ النار بشفاعة مُحَمّد صلى الله عليه وسلّم فيدخلون الجنّة يُسَمَّون الجهنّميين) [رواه البخاري]

अनुवादः (कुछ लोग मैरी सिफ़ारिश से नरक से निकाल कर जन्नत में दाख़िल किये जायेंगे। उनका नाम **"जहन्नमी"** (नरक वाले) होगा।) (बुख़ारी)

❁ कुछ लोगों का अजाब हल्का करने के लिये आप की सिफ़ारिश। जैसे अपने चाचा अब्दुल मुत्तलिब के बारे में आपकी सिफ़ारिश।

इसका प्रमाण आप का यह फ़रमान हैः

(لعله تنفعه شفاعتي يوم القيامة فيجعل في ضحضاح من النار يبلغ كعبيه يغلي منه دماغه) [رواه البخاري ومسلم]

अनुवादः (क़्यामत के दिन शायद, उनको मेरी सिफ़ारिश कुछ लाभदायक हो जाये, और उनको थोड़ी आग में कर दिया जाये। जो उनके टख़्नों तक पहुँच रही होगी। उस से उनका दिमाग़ ख़ोल रहा होगा।) (बुख़ारी व मुस्लिम)

सिफ़ारिश अल्लाह के यहाँ दो शर्त के साथ स्वीकार हो सकती हैः

(क) सिफ़ारिश करने वाले तथा जिनके लिये सिफ़ारिश की जा रही है, दोनों से अल्लाह राजी हो।

(ख) सिफ़ारिश करने वाले के लिये अल्लाह की ओर से आज्ञा मिल जाये। अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿ وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ٱرْتَضَىٰ ...﴾ [الأنبياء، الآية: ٢٨].

अनुवाद : ❝वह उन्हीं के लिये सिफ़ारिश करेंगे जिन के लिये अल्लाह पसँद फ़रमायेगा।❞ (अम्बिाया, आयतः 28)

और फ़रमायाः

﴿...مَن ذَا ٱلَّذِى يَشۡفَعُ عِندَهُۥٓ إِلَّا بِإِذۡنِهِۦۚ.﴾ [البقرة، الآية: ٢٥٥]

अनुवादः ❝उसकी आज्ञा के बिना उसके पास कोन सिफ़ारिश कर सकता है?❞ (बक़रः, आयतः 255)

(8) - मीज़ान (तराज़ू)ः

तराज़ू सत्य है। उस पर ईमान रखना जरूरी है। उसको अल्लाह तआला क़्यामत के दिन गाड़ेगा। ताकि बन्दों के कार्यों का वज़न और भार किया जाये। और उनको उनके कर्मों का बदला दिया जाये।

यह जाहिरी *(अर्थात नजर आने वाली)* तराज़ू होगी। उसमें दौ पलड़े तथा एक ज़बान होगी। उस से कार्यों अथवा उन रजिस्ट्रों का, जिन में वह कार्य दर्ज हैं, अथवा खुद आदमी (जिसके कार्य हैं) का वज़न किया जायेगा। और इन सब का भी वज़न किया जा सकता है। लैकिन हल्का या बोझल होने में ऐतबार (प्रत्यय) स्वयं कार्य का होगा, न कि कर्ता अथवा रजिस्ट्रों का। अल्लाह का फ़रमानहैः

﴿وَنَضَعُ ٱلۡمَوَٰزِينَ ٱلۡقِسۡطَ لِيَوۡمِ ٱلۡقِيَٰمَةِ فَلَا تُظۡلَمُ نَفۡسٞ شَيۡـٔٗاۖ وَإِن كَانَ مِثۡقَالَ حَبَّةٖ مِّنۡ خَرۡدَلٍ أَتَيۡنَا بِهَاۗ وَكَفَىٰ بِنَا حَٰسِبِينَ ٤٧﴾

[الأنبياء، الآية: ٤٧].

अनुवादः ❝और हम प्रलय के दिन उनके मध्य स्वच्छ तौल की तराज़ू ला रखेंगे। फिर किसी पर किसी प्रकार का अत्याचार न किया जायेगा। और यदि एक सरसों के दाने के बराबर भी

(कर्म) होगा उसे भी हम सामने ले आयेंगे। और हम हिसाब करने के लिये काफ़ी हैं।❞ (अम्बिया, आयतः 47)

और फ़रमायाः

﴿ وَٱلْوَزْنُ يَوْمَئِذٍ ٱلْحَقُّ فَمَن ثَقُلَتْ مَوَٰزِينُهُۥ فَأُو۟لَـٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ ۝٨ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَٰزِينُهُۥ فَأُو۟لَـٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ خَسِرُوٓا۟ أَنفُسَهُم بِمَا كَانُوا۟ بِـَٔايَـٰتِنَا يَظْلِمُونَ ۝٩ ﴾ [الأعراف، الآيتان:٨،٩]

अनुवादः ❝और उस दिन सत्य तुलना होगी। फिर जिसका पलड़ा भारी होगा वही सफ़ल होगा। और जिसका पलड़ा हल्का होगा तो यह वह लोग होंगे जिन्होंने अपनी हानि स्वयं की होगी। इस प्रकार कि वह हमारी निशानियों का हनन करते रहे थे।❞ (आराफ, आयतः 8-9)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का फ़रमान हैः

(الطهور شطر الإيمان، والحمد لله تملأ الميزان) [رواه مسلم]

अनुवादः (सफ़ाई आधा ईमान है, और "الحمد لله" (अल्हम्दुलिल्लाह) कहना (क़्यामत के दिन) तराज़ू को भर देगा।) (मुस्लिम)

और फ़रमायाः

(يوضع الميزان يوم القيامة فلو وزن فيه السماوات والأرض لوسعت)
[رواه الحاكم]

अनुवादः (क़्यामत के दिन तराज़ू लगााई जायेगी, उसमें यदि आकाश और ज़मीन को भी रख दिया जोये, तो वह भी उसमें आ जायेंगे।) (हाकिम)

۞ (9) - सिरात़ः

हम "सिरात" पर भी ईमान रखते हैं। "सिरात" एक पुल का नाम है। जो नरक के ऊपर लगा हुआ है। वह बड़ा

ख़तरनाक और ख़ौफ़नाक रास्ता है। सारे लोग उस पर से गुज़र कर जन्नत में जायेंगे। कुछ लोग पलक झपकने के बराबर गुज़र जायेंगे। कुछ बिजली के समान, कुछ हवा के समान, कुछ परिन्दों की तरह, कुछ घोड़ों के समान, और कुछ दोड़कर तथा कुछ ऐसे भी होंगे जो घिसट कर गुज़र रहे होंगे। अर्थात सब लोग अपने अपने कर्मों के हिसाब से गुज़रेंगे। वह आदमी भी गुज़रेगा जिसका नूर उसके पैर के अँगूठे के समान होगा।

इन लोगों में से कुछ उचक लिये जायेंगे, और नरक में गिर जायेंगे। और जो इस पुल को पार कर जायेंगे, वह जन्नत में दाख़िल हो जायेंगे।

इस पर सब से पहले हमारे नबी और आप की उम्मत गुज़रेगी। उस दिन, रसूलों के अतिरिक्त कोई बात नहीं करेगा। सब रसूलों की दुआ उस दिन (اللهم سلم سلم) होगी। अर्थातः ऐ अल्लाह! बचा, बचा।

इस पुल के दोनों ओर आँकड़े होंगे। उनकी सँख्या अल्लाह ही जानता है। वह जिसको चाहेंगे, अल्लाह के आदेशनुसार, उसको खींच लेंगे।

➢ यह पुल कैसा होगा?

यह पुल तलवार से अधिक तेज़ तथा बाल से अधिक बारीक होगा। वह फिसलने की जगह है। उस पर उसी के पैर जम सकेंगे, जिसको अल्लाह चाहेगा। इसी प्रकार वह अंधेरे में भी होगा। **"अमानत"** (अर्थात धरोहर) और **"रह्म"** (रिश्तेदारियाँ) आकर पुल के दोनों ओर खड़ी हो जायेंगी। ताकि जिन्होंने उनकी हिफ़ाजत की, या उनको बरबाद किया, उन पर गवाही दें। अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ وَإِن مِّنكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿٧١﴾ ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوا وَّنَذَرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾ ﴾

[مريم، الآيتان: ٧١، ٧٢].

अनुवादः ❝तुम में से प्रत्येक को उस पर से गुज़रना है। यह तुम्हारे रब पर निश्चित फैसला है। हम सदाचारियों और परहैज़गारों को बचा लेंगे। और अवज्ञा करने वालों को उसी में घुटनों के बल गिरा हुआ छोड़ देंगे।❞ (मर्यम, आयतः 71-72)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

(ويضرب الصراط بين ظهراني جهنم فأكون أنا وأمتي أول من يجيزه) [رواه مسلم]

अनुवादः (पुल को जहन्नम की पीठ पर लगाया जायेगा, सब से पहले उस पर मैं और मेरी उम्मत गुज़रेगी।) (मुस्लिम)

और फ़रमायाः

(ويضرب جسر جهنم، فأكون أول من يجيز، ودعاء الرسل يومئذ: اللهم سلم سلم) [رواه البخاري ومسلم]

अनुवादः (नरक पर पुल लगाया जायेगा। उस को सब से पहले मैं पार करुँगा। उस दिन रसूलों की दुआ यह होगीः ऐ अल्लाह! बचा, बचा।) (बुख़ारी व मुस्लिम)

हजरत *अबु सईद ख़ुदरी* (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं:

(بلغني أن الجسر أدق من الشعر وأحدّ من السيف) [مسلم]

अनुवादः मुझे यह बात पहुँची है कि वह पुल बाल से बारीक और तलवार से तेज़ होगा।) (मुस्लिम)

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः

अनुवादः ("अमानत" (अर्थातः धरोहर), और "रह्म" (अर्थातः रिश्तेदारियाँ), आकर पुल के दोनों ओर खड़ी हो जायेंगी। तुम में सब से पहले वाला बिजली की तरह गुज़र जायेगा। फिर

हवा के समान, फिर परिन्दों की तरह, उनके बाद दोड़ कर। वह अपने अपने कार्यों के हिसाब से दोड़ रहे होंगे। तुम्हारे नबी पुल पर खड़े होकर कह रहे होंगेः ऐ अल्लाह! बचा, बचा! यहाँ तक कि बन्दों के कार्य विवस हो जायें। फिर आख़िर में वह आदमी आयेगा जो घिसट कर चल रहा होगा।

(आप आगे फ़रमाते हैं) पुल के किनारों पर आँकड़े लटके हुऐ होंगे। जिनका आदेश मिलेगा, उन्हें वह जकड़ लेंगे। और कुछ को नोच कर छोड़ देंगे, और वह बच जायेंगे। और कुछ को नरक में खींच कर डाल देंगे।) [मुस्लिम]

(10) - क़न्तराः

हमारा ईमान है कि जब मुमिन पुल से गुज़र जायेंगे तो उनको "क़न्तरा" पर रोका जोयेगा।

"क़न्तरा" एक जगह क नाम है, जो जन्नत और जहन्नम के बीच है। इस में वह मुमिन ठहरेंगे जो पुल को पार कर जायेंगे और नरक से बच जायेंगे। ताकि जन्नत में दाख़िल होने से पहले, उनके लिये आपस में एक दूसरे से बदला ले लिया जाये। जब वह बिल्कुल पाक साफ़ हो जायेंगे, तो वह जन्नत में दाख़िल हो जायेंगे।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः

(يخلص المؤمنون من النار، فيحبسون على قنطرة بين الجنة والنار، فيقتص لبعضهم من بعض، مظالم كانت بينهم في الدنيا، حتى إذا هذبوا ونقوا أذن لهم في دخول الجنة، فوالذي نفس محمد بيده ! لأحدهم أهدى بمنزله في الجنة منه بمنزله كان في الدنيا) [رواه البخاري]

अनुवादः (मुमिन नरक से बच जायेंगे, तो उनको "क़न्तरा" में रोका जायेगा। वहाँ उन से एक दूसरे पर किये गये अत्याचारों का बदला लिया जायेगा। जब वह पूरे प्रकार से पाक साफ़ हो जायेंगे, तो उनको जन्नत में दाख़िले की आज्ञा मिल जायेगी। क़सम है उस जात की जिसके हाथ में मेरी जान है! जन्नत के

अन्दर, सब लोग अपने अपने घरों के रास्तों को, दुनिया में अपने घरों के रास्तों से अधिक जानते होंगे।) (बुख़ारी)

(11) - जन्नत और जहन्नम।

हम जन्नत और जहन्नम के हक़ और सत्य होने पर भी ईमान रखते हैं। वह अब भी मौजूद हैं। और सदैव मौजूद रहेंगी। उनका कभी अन्त नहीं होगा। जन्नत वालों का आराम कभी ख़त्म नहीं होगा। इसी प्रकार वह नरक वाले जो सदैव उस में रहेंगे, उनका अजाब और यातना भी कभी ख़त्म नहीं होगी। जो **तौहीद** वाले नरक में चले जायेंगे,तो वह सिफ़ारिश वालों की सिफ़ारिश से, जहन्नम से निकाल लिये जायेंगे।

➢ जन्नत क्या है?

जन्नत, वह आदर, मान तथा इज़्ज़त का घर है जिसको अल्लाह तआला ने अपने मुमिन बन्दों के लिये तैयार कर रखा है। उसमें नहरें और सरितायें हैं। ऊँचे ऊँचे मकान और महल हैं। अच्छी अच्छी और खूबसूरत **"हूर"** (पत्नियाँ) हैं। उस में हर वह चीज़ मौजूद है जो आत्मा तथा आँखों को भा सकती है। उनको किसी आँख ने देखा, न किसी कान ने सुना, और न ही किसी के दिल में उनका ख़्याल गुज़रा होगा। उसके आराम कभी ख़त्म नहीं होंगे। उस के अन्दर एक कोड़े के बराबर जगह, दुनिया और दुनिया की सारी चीज़ों से अच्छी है। उसकी खुशबू चालीस साल चलने की दूरी से आती है। उसमें सब से बड़ी निअमत अल्लाह तआला को आँखों से देखना है।

और काफ़िर लोग, अपने रब को देखने से महरूम और वंचित कर दिये जायेंगे।

इस से ज्ञात होता है कि जो व्यक्ति यह कहता है कि, मुमिन लोग क़्यामत के दिन अपने रब को नहीं देखेंगे, तो एक प्रकार से वह मुमिनों को काफ़िरों के बराबर कर रहा है।

जन्नत के अन्दर सौ दर्जे और श्रेणियाँ हैं। प्रत्येक श्रेणी के बीच इतना फ़ासला और दूरी है जितनी ज़मीन और आकाश के बीच दूरी है।

सब से ऊँची श्रेणी का नाम **"फ़िरदौस"** है। उसकी छत अल्लाह तआला का अर्श (सिंहासन) है। जन्नत में आठ द्वार हैं। प्रत्येक द्वार के बीच इतनी दूरी है, जितनी **मक्का** शरीफ़ और **हज्र** *(यमन देश में एक गाँव)* के बीच दूरी है। एक दिन यह सब भी भीड़ से भर जायेंगे। जन्नत में सब से नीची श्रेणी वाला वह व्यक्ति होगा, जिसके पास दुनिया और उसके दस गुना अधिक सम्पत्ति होगी। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ ﴿١٣٣﴾ ﴾ [آل عمران، الآية: ١٣٣].

अनुवादः "जन्नत, अल्लाह से डरने वालों के लिये बनाई गयी है।" (आले इमरान, आयतः 133)

जन्नत सदैव रहेगी। और जन्नती भी उसमें सदैव रहेंगे। इस बारे में अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ جَزَآؤُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّـٰتُ عَدْنٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَـٰرُ خَـٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًا ۖ رَّضِىَ ٱللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا۟ عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِىَ رَبَّهُۥ ﴿٨﴾ ﴾ [البينة، الآية: ٨]

अनुवादः "उनका बदला, उनके रब के पास ऐसी हमैशा रहने वाली जन्नतें होंगी, जिनके नीचे से नहरें बह रही होंगी। वह उन में हमैशा रहेंगे। अल्लाह उन से प्रसन्न। और वह अल्लाह से प्रसन्न। यह उनके लिये होगा जो अपने रब से डरते हैं।" (बय्यिनः, आयतः 8)

➢ जहन्नम क्या है?

जहन्नम अथवा नरक, यातना और अजाब का घर है। उसको अल्लाह तआला ने काफ़िरों और नाफ़रमानों के लिये तैयार किया है। उसमें अत्यन्त सख़्त अजाब और तरह तरह की सज़ायें हैं। उसके संतरी और दारोग़ा कठोर और सख़्त दिल फ़रिश्ते हैं। काफ़िर उसमें सदैव रहेंगे। उसमें उनका खाना **"ज़क़्क़ूम"** (थोहड़ का पौधा), और पीना, **"हमीम"** (खोलता हुआ पानी) होगा।

नरक की आग इस दुनिया की आग से सत्तर गुना तैज़ होगी। जहन्नम का पेट कभी नहीं भरेगा। वह यही कहती रहेगीः और हों तो लाओ। जहन्नम के सात द्वार होंगे। प्रत्येक द्वार से एक ख़ास गिरोह गुज़रेग। इस जहन्नम के बारे में अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ أُعِدَّتۡ لِلۡكَٰفِرِينَ ١٣١ ﴾ [آل عمران، الآية: ١٣١].

अनुवादः ❛❛यह नरक काफ़िरों के लिये तैयार की गयी है।❜❜
(आले इमरान, आयतः 131)

और नरक वाले सदैव उसमें रहेंगे। इस बारे में अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ إِنَّ ٱللَّهَ لَعَنَ ٱلۡكَٰفِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمۡ سَعِيرًا ٦٤ خَٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًاۖ ...﴾

[الأحزاب، الآيتان: ٦٤، ٦٥].

अनुवादः ❛❛काफ़िरों पर, अल्लाह तआला की धिक्कार है। और उनके लिये भड़कती हुई अग्नि तैयार कर रखी गयी है। उसमें वह सदैव रहेंगे।❜❜ (अहज़ाब, आयतः 64-65)

(3)
अन्तिम दिन पर ईमान के फल।

अन्तिम दिन पर ईमान रखने के बहुत अधिक फल हैं। उन में से कुछ निम्नलिखित हैंः

❀ इस से, स्वाब और पुण्य की आशा में, फ़रमाँबरदारी के काम करने में रुची और आंकांक्षा तथा लगन पैदा होती है।

❀ इस दिन के भय के कारण, बुराई के काम करने और उनको पसँद करने से, ख़ौफ़ और डर पैदा होता है।

❀ मुमिन को आख़िरत में जिस पुण्य और आराम की आशा और उम्मीद है, इस के द्वारा वह इस दुनिया का (कुछ सामान) छूट जाने से तसल्ली हासिल करता है।

❀ दौबारा ज़िन्दा किये जाने पर ईमान रखना, मनुष्य और समाज के लिये शुभःता और नैकबख़्ती की बुनियाद और जड़ है।

क्योंकि जब मनुष्य यह ईमान और विश्वास रखेगा कि, अल्लाह तआला सारे इन्सानों को मरने के बाद दौबारा जीवित करेगा, उनका हिसाब लेगा, और उनके किये का उनको बदला देगा, तथा अत्याचारी से उस के अत्याचार का बदला लेगा -चाहे वह जानवर ही क्यों न हों-, तो वह अल्लाह तआला की फ़रमाँबरदारी में लग जायेंगे, और बुराई की जड़ कट जायेगी, समाज में अच्छाई का राज होगा और फिर चारों ओर खुशहाली ही खुशहाली नजर आयेगी।

❀

ईमान का छठा रुक्न

तक़्दीर पर ईमान

(1)

तक़्दीर की परिभाषा और उस पर ईमान रखने की मूल्यता तथा महत्व।

तक़्दीर (भाग्य) का अर्थः अल्लाह तआला का, अपने ज्ञान व हिक्मत के अनुसार, होने वाली तमाम चीज़ों का अनुमान लगा लेना है।

यह अल्लाह तआला की कमाल शक्ति का प्रमाण है। इसी प्रकार यह इस बात का भी प्रमाण है कि वह हर चीज़ पर शक्ति रखता है, और जो चाहता है वही करता है।

तक़्दीर पर ईमान लाना, अल्लाह तआला की **"रुबूबिय्यत"** *(अर्थात सब का रब व मालिक होना)* पर ईमान रखने का एक हिस्सा है। तथा यह ईमान का एक रुक्न और सतम्भ है। जिस के बिना ईमान पूरा नहीं हो सकता। अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾ ﴾ [القمر، الآية: ٤٩].

अनुवादः "हम ने हर चीज़ को एक ख़ास (विशेष) अनुमान से रचा है।" (क़मर, आयत : 49)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का फ़रमान हैः

(كلّ شيء بقدر حتى العجز والكيس أو الكيس والعجز) [رواه مسلم]

अनुवादः (प्रत्येक चीज़ तक़्दीर से होती है। यहाँ तक कि आजिज़ (विवस) और हौशियार होना, अथवा हौशियार और आजिज़, होना भी (क़िस्मत से होता है।) (सहीह मुस्लिम)

(2)
तक़्दीर की श्रेणियाँ।

तक़्दीर की चार श्रेणियाँ हैं। इनको पूरा किये बिना तक़्दीर पर ईमान पूरा नहीं हो सकता। इनकी व्याख्या नीचे है :-

(1) अल्लाह तआला के **"अज़ली ज्ञान"** (अर्थात हमैशा से रहने वाला ज्ञान) पर ईमान रखना, जो हर वस्तु को शामिल है।

अल्लाह तआला का इरशाद है:

﴿ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ ٱللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِى ٱلسَّمَآءِ وَٱلْأَرْضِ ۗ إِنَّ ذَٰلِكَ فِى كِتَـٰبٍ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى ٱللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٧٠﴾ ﴾ [الحج، الآية: ٧٠].

अनुवादः ❝क्या आप को नहीं ज्ञान कि अल्लाह तआला, जो कुछ ज़मीन व आसमान में है, सब को जानता है? यह बात**"किताब"** (अर्थातः लोहे महफूज) में मौजूद है। और यह अल्लाह के लिये बहुत सरल है।❞ (हज्ज, आयत : 70)

(2) यह ईमान रखना कि अल्लाह तआला ने सारी चीज़ों की "तक़्दीर" को "लोहे महफूज" में लिख रखा है। अल्लाह तआला का फ़रमान है:

﴿ مَّا فَرَّطْنَا فِى ٱلْكِتَـٰبِ مِن شَىْءٍ ۚ ...﴾ [الأنعام، الآية: ٣٨].

अनुवादः ❝हम ने **"किताब"** (लोहे महफूज) में बिना लिखे कोई चीज़ नहीं छोड़ी।❞ (अनआम, आयत : 38)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः

(كتب الله مقادير الخلائق قبل أن يخلق السماوات والأرض بخمسين ألف سنة) [رواه مسلم]

अनुवादः (अल्लाह तआला ने सारी चीज़ों की तक़्दीर, ज़मीन व आसमान रचने से पचास हज़ार साल पहले लिख ली थी।)

(सहीह मुस्लिम)

(3) अल्लाह तआला की **"मन्शा और चाहत"** *-जो होकर रहती है* -, तथा उसकी **"शक्ति"** - *जो हर चीज़ पर चलती है*- उन पर ईमान रखना। अल्लाह ने फ़रमायाः

﴿ وَمَا تَشَآءُونَ إِلَّآ أَن يَشَآءَ ٱللَّهُ رَبُّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٢٩﴾ ﴾

[التكوير، الآية: ٢٩].

अनुवादः ❝अल्लाह तआला, जो दोनों जहानों का पालनहार है, के बिना तुम कुछ नहीं चाह सकते।❞ (तकवीर, आयतः 29)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उस व्यक्ति के लिये, जिस ने कहा थाः "जो आप और अल्लाह चाहें" फ़रमायाः

(**أجعلتني لله نِدّاً؟** بل ما شاء الله وحده) [رواه أحمد]

अनुवादः (क्या तुम ने मुझे अल्लाह के समान बना दिया? बल्कि यह कहोः जो केवल अल्लाह चाहे।) (मुसनद अहमद)

(4) यह ईमान रखना कि अल्लाह तआला ही प्रत्येक चीज़ का पैदा करने वाला है। अल्लाह ने फ़रमायाः

﴿ ٱللَّهُ خَٰلِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿٦٢﴾ ﴾

[الزمر، الآية: ٦٢].

अनुवादः ❝अल्लाह ही प्रत्येक चीज़ का पैदा करने वाला है। तथा वही हर चीज़ का सुरक्षक है।❞ (ज़ुमर, आयतः 62)

और फ़रमायाः

﴿ وَٱللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾ ﴾ [الصافات، الآية: ٩٦].

अनुवादः ❝अल्लाह ही ने तुम को तथा जो कुछ तुम करते हो, उस को पैदा किया है।❞ (साफ़्फ़ात, आयतः96)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः

(إنّ الله يصنع كلّ صانع وصنعته) [رواه البخاري]

अनुवादः (अल्लाह ही प्रत्येक बनाने वाले को, तथा जो वह बनाता है, उसको बनाने वाला है।) (बुख़ारी शरीफ़)

(3)
तक़्दीर के भागः

क- सामान्य तक़्दीर। जो सारी कायनात के लिये है। यही वह तक़्दीर है जिसको अल्लाह तआला ने ज़मीन व आकाश को पैदा करने से पचास हज़ार साल पहले **"लोहे महफूज"** में लिख लिया था।

ख- आयु वाली तक़्दीर।

अर्थातः मनुष्य में जान डालने से लेकर उसकी मृत्यु तक, जो कुछ उस के साथ होना है, उसकी तक़्दीर लिखना।

ग- वर्षीय तक़्दीर।

अर्थातः प्रत्येक वर्ष जो कुछ होता है, उसकी तक़्दीर लिखना। और यह तक़्दीर, प्रत्येक वर्ष (रमजान के महीना में) **"लैलतुल क़द्र"** (अर्थातः मान व इज़्ज़त और क़द्र वाली रात) में लिखी जाती है।

घ- प्रतिदिन वाली तक़्दीर।

अर्थातः रोज़ाना जो कुछ होता है, उसकी तक़्दीर लिखना। जैसेः इज़्ज़त अथवा जिल्लत देना, प्रदान करना, या न करना, और मारना तथा जिलाना आदि। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

[يَسْـَٔلُهُۥ مَن فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۚ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِى شَأْنٍ ﴿٢٩﴾]

الرحمن، الآية: ٢٩]

अनुवादः "आकाश एवं ज़मीन वाले, सब उसी से माँगते हैं। वह प्रत्येक दिन एक नये कार्य में है।" (रहमान, आयतः29)

(4)
तक़्दीर में "सलफ़" (अर्थातः सहाबा आदि) का अक़ीदा।

उनका अक़ीदा यह था कि अल्लाह तआला ही हर चीज़ का पैदा करने वाला है। वही उन का मालिक और पालनहार है। सारी मख़्लूक़ और सृष्टि को पैदा करने से पहले ही उस ने उनकी तक़्दीर लिख दी है। उनकी आयु, उनकी रोज़ी और उनके कर्म तथा उनकी नैकबख़्ती या बदबख़्ती और भाग्यशीलता या दुर्भाग्यशीलता, सब लिख रखी हैं। ***लोहे महफूज*** में हर चीज़ मौजूद है। वह जो चाहता है होता है। तथा जिसको नहीं चाहता वह नहीं होता। जो हुआ, जो होने वाला है, तथा जो नहीं हुआ, और यदि वह होता तो कैसे होता, इन सब को अल्लाह जानता है। हर चीज़ पर उस की कुदरत और शक्ति है। जिसको चाहता है सीधा मार्ग दिखाता है। और जिसको न चाहे नहीं दिखाता।

इसी प्रकार यह कि बन्दों के पास भी **"चाहत"** और **"शक्ति"** है। जिनके द्वारा वह, वह काम करते हैं जिन पर अल्लाह ने उनको शक्ति दी है। साथ ही यह भी यक़ीन रखते हैं कि बन्दे, अल्लाह की **"चाहत"** के बिना कुछ नहीं चाह सकते। अल्लाह ने फ़रमायाः

﴿ وَٱلَّذِينَ جَـٰهَدُواْ فِينَا لَنَهۡدِيَنَّهُمۡ سُبُلَنَا ۚ ﴾ [العنكبوت، الآية: ٦٩]

अनुवादः "और जो लोग हमारे लिये महनत और परिश्रम करते हैं, हम उन के लिये अपने मार्ग अवश्य दिखा देंगे।"

(अनकबूत, आयतः 69)

इसी तरह उनका अक़ीदा यह भी था कि अल्लाह तआला ही बन्दों और उनके कार्यों का पैदा करने वाला है। लेकिन उन कामों को वास्तव में बन्दे ही करते हैं।

अतः यदि कोई बन्दा, वाजिब काम को छोड़ रहा है, या हराम काम कर रहा है, तो इसमें वह अल्लाह तआला पर हुज्जत और तर्क नहीं पकड़ सकता। (अर्थात यह नहीं कह सकता कि मैं ने यह काम अल्लाह तआला की चाहत ही से किया है। अगर वह न चाहता तो न करता।) बल्कि हुज्जतबाज़ी केवल अल्लाह का हक़ है। तक़्दीर से, परेशानी और मुसीबतों पर तो हुज्जत और दलील पकड़ सकते हैं, लैकिन पापों और गुनाहों पर नहीं पकड़ सकते। जैसा कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने, हजरत मूसा के, हजरत आदम (अलैहिमस्सलाम) पर हुज्जत बाज़ी के बारे में फ़रमायाः

(حاجّ آدم وموسى، فقال موسى: أنت آدم الذي أخرجتك خطيئتك من الجنة، فقال له آدم : أنت موسى الذي اصطفاك الله برسالاته وبكلامه، ثم تلومني على أمر قد قدر علي قبل أن أخلق؟ فحجّ آدمُ موسى) [رواه مسلم]

अनुवादः "आदम और मूसा के बीच हुज्जत बाज़ी हुई। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहाः आप ही तो आदम हैं जिनको, उनकी ग़लती ने जन्नत से निकाल दिया। आदम (अलैहिस्सलाम) ने कहाः आप ही तो मूसा हो जिनका, अल्लाह तआला ने अपने "पैग़ाम" और "बात करने के लिये" चयन किया, फिर आप मुझे ऐसी बात पर मलामत कर रहे हो जो, मेरे पैदा होने से

पहले ही मुझ पर लिख दी गयी थी? अतः आदम (अलैहिस्सलाम) मूसा (अलैहिस्सलाम) पर ग़ालिब आ गये।)

(मुस्लिम शरीफ़)

(5)

बन्दों के कार्यः

इस संसार में, अल्लाह तआला जो कार्य पैदा फ़रमाता है, उनके दौ प्रकार हैं:

(1) अल्लाह तआला के वह कार्य जिनको वह अपनी मख़्लूक़ और सृष्टि के अन्दर जारी करता है।

इन कार्यों में किसी की चाहत और चयन व अख़्तियार को कोई दख़ल नहीं होता। इनमें केवल अल्लाह तआला की "चाहत" ही चलती है। जैसेः मारना, जिलाना, और बीमारी अथवा तन्दरुस्ती आदि देना। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ وَٱللَّهُ خَلَقَكُمۡ وَمَا تَعۡمَلُونَ ﴾ [الصافات، الآية: ٩٦].

अनुवादः ❝अल्लाह ही ने तुम को और जो कुछ तुम करते हो, उसको पैदा किया है।❞ (साफ़्फ़ात, आयतः 96)

और फ़रमायाः

﴿ ٱلَّذِي خَلَقَ ٱلۡمَوۡتَ وَٱلۡحَيَوٰةَ لِيَبۡلُوَكُمۡ أَيُّكُمۡ أَحۡسَنُ عَمَلٗا ﴾

[الملك، الآية: ٢].

अनुवादः ❝जिस ने मौत और ज़िन्दगी पैदा की, ताकि तुम्हें आज़माये कि किस के कार्य तुम में से अधिक अच्छे हैं।❞

(मुल्क, आयतः 2)

(2) वह कार्य जिनको इरादा और निश्चय रखने वाली सारी मख़्लूक़ करती हैं।

यह कार्य उनके चयन और निश्चय से होते हैं। क्योंकि अल्लाह तआला ने उनको यह शक्ति प्रदान कर रखी है।

अल्लाह का इरशाद हैः

﴿ لِمَن شَآءَ مِنكُمۡ أَن يَسۡتَقِيمَ ٢٨ ﴾ [التكوير، الآية: ٢٨].

अनुवादः "(विशेष रूप से) उस के लिये जो तुम में से सीधे मार्ग पर चलना चाहे।" (तकवीर, आयतः 28)

और फ़रमायाः

﴿ ...فَمَن شَآءَ فَلۡيُؤۡمِن وَمَن شَآءَ فَلۡيَكۡفُرۡۚ ﴾ [الكهف، الآية: ٢٩]

अनुवादः "तो जो चाहे इमान ले आये, और जो चाहे कुफ्र करे।" (कहफ, आयतः 29)

अतः जो काम अच्छे हैं, उनके करने पर उनकी प्रशंसा की जायेगी। और जो बुरे हैं, उनके करने पर उनकी निंदा और बुराई की जायेगी। तथा अल्लाह तआला, बन्दों को उन्ही कामों पर सज़ा देगा जिनमें उनके लिये अख़्तियार और चयन था। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

﴿ ...وَمَآ أَنَا۠ بِظَلَّٰمٖ لِّلۡعَبِيدِ ٢٩ ﴾ [ق، الآية: ٢٩].

अनुवादः "और मैं बन्दों पर कदापि जुल्म व अत्याचार नहीं करता।" (क़ाफ, आयतः 29)

और मनुष्य अख़्तियार और लाचारी में अन्तर जानता है। अतः यदि कोई व्यक्ति सीढ़ी के द्वारा छत से उतरता है, तो यह उतरना अख़्तियारी है। लैकिन यह भी हो सकता है कि उसे कोई दूसरा आदमी छत से गिरा दे, (और इस प्रकार वह नीचे आ जाये), लैकिन पहला उतरना अख़्तियारी, तथा दूसरा मजबूरी और लाचारी वाला है।

(6)
अल्लाह के "पैदा करने" और "बन्दे के करने" के बीच समानताः

अल्लाह तआला ही ने बन्दे और उसके कार्यों को पैदा फ़रमाया है। लैकिन अल्लाह ने उसके लिये इरादा और निश्चय तथा शक्ति भी प्रदान की है। इसलिये कार्य करने वाला वास्तव में बन्दा ही होता है। क्योंकि उस के पास इरादा और शक्ति मौजूद हैं। अतः वह जब ईमान लाता है तो अपने इरादे और निश्चय से। और यदि कुफ्र करता है तो भी अपने सम्पूर्ण इरादे और निश्चय से।

उदाहरण के तौर पर जैसे हम यह कहें किः यह फल इस पैड़ का है। और यह फ़सल इस ज़मीन की है। तो इसका अर्थ यह है कि वह इन से पैदा हुये हैं।

(और जब यह कहें कि) यह अल्लाह के हैं, तो इसका अर्थ यह है कि अल्लाह तआला ने इनको उन से पैदा किया है। इस प्रकार इन दोनों बातों में कोई टकराव नहीं है। और अल्लाह की "शरीअत" और "तक़्दीर" दोनों इकट्ठा हो जाती हैं। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ وَٱللَّهُ خَلَقَكُمۡ وَمَا تَعۡمَلُونَ ﴿٩٦﴾ ﴾ [الصافات، الآية: ٩٦].

अनुवादः «अल्लाह ही ने तुम को और तुम्हारे कार्यों को पैदा किया है।» (साफ़्फ़ात, आयतः 96)

और फ़रमायाः

﴿ فَأَمَّا مَنۡ أَعۡطَىٰ وَٱتَّقَىٰ ۝٥ وَصَدَّقَ بِٱلۡحُسۡنَىٰ ۝٦ فَسَنُيَسِّرُهُۥ لِلۡيُسۡرَىٰ ۝٧ وَأَمَّا مَنۢ بَخِلَ وَٱسۡتَغۡنَىٰ ۝٨ وَكَذَّبَ بِٱلۡحُسۡنَىٰ ۝٩ فَسَنُيَسِّرُهُۥ لِلۡعُسۡرَىٰ ۝١٠ ﴾ [الليل، الآيات: ٥-١٠].

अनुवादः “तो जो व्यक्ति (सदक़ा ख़ैरात आदि) देता रहा, और अल्लाह से डरता रहा, तथा अच्छाई अथवा जन्नत की पुष्टि करता रहा, तो हम भी उसके लिये सरलता उत्पन्न कर देंगे। परन्तु जिस ने कंजूसी की और बेनियाज़ी और निश्चिन्तता व्यक्त किया, तथा पुण्यकारी बातों को झुठलाया तो हम भी उसे कठिनाई का साधन उपलब्ध करा देंगे।”

(लैल, आयातः 5-10)

(7)
तक़्दीर के बारे में बन्दे पर क्या जरूरी है?

तक़्दीर के बारे में बन्दे पर दौ चीज़ें जरूरी हैं:

➢ जिस चीज़ को अल्लाह ने लिख दिया है, उसको अल्लाह तआला से सहायता माँगते हुऐ, करे। और जिस से बचने के लिये कहा गया है उस से बचे।

अल्लाह से यह भी दुआ करे कि उसे आसान और सरल काम की ओर राहप्रदर्शन करे। और कठिन काम से बचाये। उसी पर भरोसा करे। उसी से पनाह और शरण माँगे। भलाई और नैकी हासिल करने, और बुराई से बचने में उसी का मुहताज और गदागर हो। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः

(احرص على ما ينفعك، واستعن بالله ولا تعجز، وإن أصابك شيء فلا تقل: لو أني فعلت كذا لكان كذا، ولكن قل: قدر الله وما شاء فعل، فإن "لو" تفتح عمل الشيطان) [رواه مسلم]

अनुवादः (अपने लिये लाभदायक चीज़ पर लालस और आंकांक्षा रखो, और अल्लाह से सहायता माँगो, आजिज़ एवं लाचार न बनो। यदि कोई हानि पहुँच जाये तो यह न कहो कि यदि मैं ऐसा करता तो ऐसा होता। बल्कि यह कहो किः अल्लाह ने ऐसा ही लिखा था। वह जो चाहता है करता है। क्योंकि "अगर-मगर" करना शैतान के काम के लिये रास्ता खोल देता है।) (मुस्लिम शरीफ़)

➢ मनुष्य को चाहिये कि लिखे पर सब्र और धैर्य करे। घबराये नहीं। और यह जान ले कि यह सब अल्लाह की ओर से है। इसलिये प्रसन्न और खुश रहे। और सब कुछ अल्लाह तआला पर छोड़ दे। तथा यह भी जान रखे कि जो उसे मिल गया, वह उस से बचकर जा नहीं सकता था। और जो उस से बचकर चला गया, वह उसे मिल नहीं सकता था। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः

(واعلم أن ما أصابك لم يكن ليخطئك، وأن ما أخطأك لم يكن ليصيبك)

अनुवादः (यह ज्ञान रखो कि जो तुम्हें मिल गया, वह तुम से बचकर जा नहीं सकता था। और जो तुम से बचकर चला गया, वह तुम्हें मिल नहीं सकता था।)

(8)
तक़्दीर और निर्णय पर प्रसन्न रहना।

भाग्य पर प्रसन्न रहना चाहिये। क्योंकि इस के द्वारा *"अल्लाह की रुबूबिय्यत पर खुश रहना"* पूरा होता है। इसलिये प्रत्येक मुमिन को चाहिये कि वह अल्लाह के फैसले और

निर्णय पर प्रसन्न रहे। क्योंकि अल्लाह तआला का कार्य और निर्णय सब अच्छा ही अच्छा, तथा सरापा इन्साफ़ और हिक्मत होता है।

अतः जिस व्यक्ति का दिल इस पर राजी हो जाये कि जो उसे मिला, वह टल नहीं सकता था, और जो टल गया, वह मिल नहीं सकता था, तो हैरानी और चिन्ता ऐसे व्यक्ति की आत्मा के समीप भी नहीं आ सकती। तथा उसकी ज़िन्दगी परेशानी और दुःख से आज़ाद हो जाती है। फिर उस से जो छूट जाये उस पर वह अफसोस और ग़म नहीं करता। और अपने भविष्य से भय नहीं खाता।

इस प्रकार उसका हाल सब से शुभः, उसकी आत्मा सब से अच्छी और उसका मिज़ाज सब से अधिक नरम और ख़ामोश बन जाता है।

क्योंकि जो जानता है कि उसकी आयु और रोज़ी गिनी चुनी है, और डर व बुज़दिली उस की आयु को नहीं बढ़ा सकती, तथा न ही बख़ीली और कंजूसी उसकी रोज़ी को बढ़ा सकती है- क्योंकि हर चीज़ लिखी हुई है- तो ऐसा व्यक्ति परेशानियों पर धैर्य रखता है। और अपने पाप और गुनाहों की अल्लाह से क्षमा माँगता है। तथा अल्लाह की तक़्दीर पर प्रसन्न और खुश रहता है। इस प्रकार वह एक ही समय में अल्लाह की आज्ञाकारी और उसकी फ़रमाँबरदारी भी कर लेता है। तथा कठिनाईयों और परेशानियों पर सब्र और धैर्य भी कर लेता है। अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

﴿ مَآ أَصَابَ مِن مُّصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ ٱللَّهِ ۗ وَمَن يُؤْمِنۢ بِٱللَّهِ يَهْدِ قَلْبَهُۥ ۚ وَٱللَّهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ ﴿١١﴾ ﴾ [التغابن، الآية: ١١]

अनुवादः ❝जो भी मुसीबत और कठिनाई आती है, वह अल्लाह ही के आदेश से आती है। और जो अल्लाह पर ईमान लाना चाहता है, तो अल्लाह उसके दिल को हिदायत दे देता है। और अल्लाह तआला प्रत्येक चीज़ को जानता है।❞ (तग़ाबुन, आयतः 11)

और फ़रमायाः

﴿ فَٱصۡبِرۡ إِنَّ وَعۡدَ ٱللَّهِ حَقّٞ وَٱسۡتَغۡفِرۡ لِذَنۢبِكَ ﴾ [غافر، الآية: ٥٥]

अनुवादः ❝(तो ऐ नबी!) आप धैर्य रखो। अल्लाह का वचन सत्य है। और अपने गुनाहों की क्षमा माँगते रहो।❞ (ग़ाफिर, आयतः 55)

(9)
हिदायत (मार्गदर्शन) की क़िस्में।

हिदायत की दौ क़िस्म हैंः

1- हक़ और सत्य बात की तरफ़ *रहनुमाई और संकेत* कर देना। यह क़िस्म सारी मख़्लूक़ के लिये सम्भव है। रसूल और उनके मानने वाले भी यही कर सकते हैं। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ وَإِنَّكَ لَتَهۡدِيٓ إِلَىٰ صِرَٰطٖ مُّسۡتَقِيمٖ ﴿٥٢﴾ ﴾ [الشورى، الآية: ٥٢]

अनुवादः ❝निःसंदेह आप सीधे मार्ग की ओर रहनुमाई कर रहे हैं।❞ (शूरा, आयतः 52)

2- अल्लाह तआला की ओर से *तौफीक़* तथा *साबित क़द्मी* की हिदायत। यह अल्लाह तआला की ओर से अपने बन्दों पर बहुत बड़ी कृपा और करम है। किन्तु यह हिदायत केवल अल्लाह के हाथ में है। अल्लाह का इरशाद हैः

﴿ إِنَّكَ لَا تَهۡدِي مَنۡ أَحۡبَبۡتَ وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ يَهۡدِي مَن يَشَآءُۚ ﴾

[القصص، الآية: ٥٦].

अनुवादः ❝तुम जिसको चाहो हिदायत नहीं दे सकते। (अर्थातः उसके दिल को नहीं फैर सकते) लैकिन अल्लाह जिस को चाहे हिदायत देता है।❞ (क़सस, आयतः 56)

(10)

कुरआन शरीफ़ में इरादा की दो क़िस्म हैं:

1- संसार व तक़्दीर से सम्बन्धित इरादा।

इस से अभिप्राय अल्लाह तआला की वह **"मन्शा और चाहत"** है जो सारी चीज़ों को शामिल है। अतः जो, अल्लाह चाहे वह होता है, और जो न चाहे वह नहीं होता।

इस *"इरादा"* से लाज़िम आता है कि जिसको अल्लाह चाहे वह हो जाये, लैकिन यह लाज़िम नहीं आता कि वह, अल्लाह तआला को महबूब और पसँद भी हो। सिवाय यह कि उसके साथ शरीअत वाला इरादा भी सम्बन्धित हो जाये, (तब उसका हो जाना जरूरी है।) अल्लाह का फ़रमान है:

﴿فَمَن يُرِدِ ٱللَّهُ أَن يَهۡدِيَهُۥ يَشۡرَحۡ صَدۡرَهُۥ لِلۡإِسۡلَٰمِۖ﴾ [الأنعام، الآية: ١٢٥]

अनुवादः ❝अल्लाह तआला जिसको हिदायत देना चाहता है, उसके दिल को इस्लाम के लिये खोल देता है।❞

(अनआम, आयतः 125)

2- दीन और शरीअत से सम्बन्धित इरादाः

इसका अर्थः चाही हुई चीज़, और उसके करने वालों से प्रेम करना, तथा उन से प्रसन्न रहना है। इस *इरादा* से यह लाज़िम नहीं आता कि जिस चीज़ का अल्लाह इरादा करता है, वह हो ही जाये। हाँ यदि उस के साथ संसार वाला इरादा मिल जाये तब उसका हो जाना जरूरी हो जाता है। अल्लाह तआला का फ़रमान है:

ا يُرِيدُ ٱللَّهُ بِكُمُ ٱلْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ ٱلْعُسْرَ ﴾ [البقرة، الآية: ١٨٥]

अनुवादः "अल्लाह तआला तुम्हारे साथ आसानी चाहता है। और वह तुम्हारे साथ तन्गी नहीं चाहता।" (बक़रः, आयतः 185)

संसार वाला *इरादा* बिलकुल आम और सामान्य है। क्योंकि हर वह होने वाली चीज़ जो शरीअत में चाही गयी हो, जरूरी है कि वह संसार के लिये भी चाही गयी हो।

लैकिन हर वह होने वाली चीज़ जो संसार के लिये चाही गयी हो, जरूरी नहीं कि वह शरीअत में भी चाही गयी हो।

अतः हजरत *अबु बक्र* (ﷺ) के ईमान लाने में दोनों *इरादे* मौजूद हैं।

और जिस में केवल *संसारित इरादा* है, उसकी मिसाल यह है किः अबु जह्ल, कुफ्र करता रहे।

और जिस में *संसारित इरादा* नहीं पाया जाता, यद्धपि वह शरीअत में मतलूब और चाहा गया हो, उसकी मिसाल यह है किः अबु जह्ल ईमान ले आये।

अतः अल्लाह तआला, यद्धपि बुराईयों को **"तक़्दीर"** और **"संसार"** के प्रत्यय और ऐतबार से चाहता है, पर दीन के प्रत्यय से उनको पसँद नहीं करता। न ही उन से प्रेम और मुहब्बत करता है। और न ही उनका आदेश देता है। बल्कि उनको नापसँद करता है। उन से घृणा करता है। और उन से रोकता है। तथा उन के करने वाले को (यातना की) धमकी देता है। यह सब अल्लाह तआला की (लिखी हुई) तक़्दीर है।

रही फरमाँबरदारी, आज्ञाकारी और ईमान, तो अल्लाह तआला उन से मुहब्बत और प्रेम करता है। उनका आदेश देता है। तथा उनके करने वाले को पुण्य और अच्छे बदले का वचन देता है।

अतः अल्लाह तआला की नाफ़रमानी उसके इरादे के बिना नहीं हो सकती। और न ही कोई चीज़ उसके इरादे के बिना हो सकती है। अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

ا وَلَا يَرْضَىٰ لِعِبَادِهِ ٱلْكُفْرَ ...﴾ [الزمر، الآية: ٧].

अनुवादः "परन्तु वह अपने बन्दों के लिये कुफ्र को पसँद नही करता।" (ज़ुमर, आयतः 7)

और फ़रमायाः

ا وَٱللَّهُ لَا يُحِبُّ ٱلْفَسَادَ ﴿٢٠٥﴾ ﴾ [البقرة، الآية: ٢٠٥].

अनुवादः "अल्लाह तआला फसाद और उपद्रव को पसँद नही करता।" (बक़रः, आयतः 205)

(11)
तक़्दीर को बदल देने वाली चीज़ें।

अल्लाह तआला ने तक़्दीर को फैर देने के लिये कुछ कारण पैदा किये हैं। उन में से कुछ यह हैंः

- दुआ करना,
- ख़ैरात और सदक़ा करना,
- दवा प्रयोग करना,
- सावधानी और हौशियारी से रहना,

क्योंकि प्रत्येक चीज, यहाँ तक कि आजिज़ी अथवा विवसता, तथा हौशियारी और चालाकी भी क़िस्मत द्वारा ही मिलती हैं।

(12)
तक़्दीर, सृष्टि में अल्लाह का एक भेद।

तक़्दीर को, मख़्लूक़ और सृष्टि में, अल्लाह का राज़ और भेद कहना, तक़्दीर के पौशीदा भाग के साथ ख़ास है। क्योंकि चीज़ों की हक़ीक़त को केवल अल्लाह ही जानता है। इन्सान उस हक़ीक़त तक नहीं पहुँच सकता।

उदाहरण के तौर पर जैसेः अल्लाह तआला का किसी को हिदायत देना, और गुमराह करना, मारना और जिलाना, प्रदान करना और रोक लेना आदि। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः

(إذا ذكر القدر فأمسكوا) [رواه مسلم]

अनुवादः (जब तक़्दीर के बारे में चर्चा होने लगे, तो रुक जाओ। (अर्थात उस में बात न करो।) (सहीह मुस्लिम)

लैकिन तक़्दीर के दूसरे जानिब और भाग, और उसकी बड़ी-बड़ी हिक्मतें, उसकी श्रेणियाँ और दर्जे, तथा उसके फल और प्रभाव, आदि को जानना और उन को लोगों के लिये बताना जायज़ है। क्योंकि "तक़्दीर" ईमान का एक "रुक्न" अथवा स्तम्भ है। जिसका सीखना और जानना जरूरी है।

जैसा कि जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने, जिब्रील (अलैहिस्सलाम) के लिये ईमान के अरकान अथवा स्तम्भ बयान किये तो फ़रमायाः

(هذا جبريل أتاكم يعلمكم دينكم) [رواه مسلم]

अनुवादः (यह जिब्रील थे, तुम्हें तुम्हारा दीन सिखाने आये थे।)
(सहीह मुस्लिम)

(13)
तक़्दीर से दलील पकड़ना।

अल्लाह तआला का, होने वाली प्रत्येक चीज़ के बारे में पहले ही से जान लेना, एक ग़ैब और परोक्ष है। वही इस ग़ैब को जानता है। शेष लोग इस से अज्ञान हैं। इसलिये इस से कोई हुज्जत और तर्क नहीं पकड़ सकता। और न ही किसी के लिये यह जायज़ है कि वह तक़्दीर पर भरोसा और निर्भर करके अमल और कार्य करना छोड़ दे। क्योंकि तक़्दीर, अल्लाह तआला पर, इसी प्रकार उस की मख़्लूक़ पर, किसी के लिये तर्क और हुज्जत नहीं बन सकती।

यदि किसी को अपने गुनाहों पर तक़्दीर से दलील पकड़ना जायज़ होता, तो किसी अत्याचारी को कभी सज़ा न मिलती। और किसी शिर्क करने वाले की कभी हत्या न की जाती। कोई **"हद्द"** (*अर्थात किसी गुनाह की सज़ा*) क़ायम न होती। और न ही कोई इन्सान, जुल्म व अत्याचार से रुकता।

फिर इसके कारण दीन व दुनिया में जो फ़साद और उपद्रव होता उस से होने वाले नुक़्सान और हानि को बताने की जरूरत नहीं है।

जो व्यक्ति तक़्दीर से दलील पकड़ता है, हम उस से कहेंगे कि आप के पास इस बारे में कोई सत्य ज्ञान नहीं है कि आप जन्नत में जायेंगे अथवा जहन्नम में...। हाँ यदि आप के पास इस बारे में कोई ज्ञान होता तो हम आप को न कोई आदेश देते, और न ही किसी चीज़ से मना करते। लैकिन कार्य करते रहें, शायद अल्लाह तआला की तौफीक़ हो जाये, और आप जन्नत वालों में से हो जायें!

एक सहाबी (ﷺ) ने जब तक़्दीर वाली हदीस सुनी, तो फ़रमायाः अब मैं और अधिक कोशिश और परिश्रम करूँगा।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से जब तक़्दीर से हुज्जत पकड़ने के बारे में प्रश्न किया गया, तो आप ने फ़रमायाः (कर्म करते जाओ, प्रत्येक के लिये वही चीज़ आसान की जायेगी जिस के लिये उसे पैदा किया गया है।)

अतः जो भाग्यशाली है उसको भाग्यशाली लोगों वाले कर्म आसान कर दिये जायेंगे। तथा जो दुर्भाग्यशाली है उसको दुर्भाग्यशाली लोगों वाले कर्म आसान कर दिये जायेंगे। फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह आयतें पढ़ीं:

﴿ فَأَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ وَٱتَّقَىٰ ۝٥ وَصَدَّقَ بِٱلْحُسْنَىٰ ۝٦ فَسَنُيَسِّرُهُۥ لِلْيُسْرَىٰ ۝٧ وَأَمَّا مَنۢ بَخِلَ وَٱسْتَغْنَىٰ ۝٨ وَكَذَّبَ بِٱلْحُسْنَىٰ ۝٩ فَسَنُيَسِّرُهُۥ لِلْعُسْرَىٰ ۝١٠ ﴾ [الليل، الآيات: ٥-١٠].

अनुवादः "तो जो व्यक्ति (सदक़ा ख़ैरात आदि) देता रहा, तथा अल्लाह से डरता रहा, और अच्छाई अथवा जन्नत की पुष्टि करता रहा, तो हम भी उसके लिये सरलता उत्पन्न कर देंगे। परन्तु जिस ने कंजूसी की और बेनियाज़ी और निश्चिन्तता व्यक्त किया, तथा पुण्यकारी बातों को झुठलाया तो हम भी उसे कठिनाई का साधन उपलब्ध करा देंगे।" (लैल, आयातः 5-10)

(14)
साधनों को अपनाना।

मनुष्य इस दुनिया में दौ प्रकार की चीज़ों का सामना करता हैः

➢ वह चीज़ जिस में उस के पास कोई उपाय और तदबीर मौजूद है। अतः ऐसी चीज़ से उसे आजिज़ और विवस नहीं होना चाहिये। (बल्कि तदबीर अपनानी चाहिये।)

➢ वह चीज़ जिस के बारे में उस के पास कोई उपाय नहीं है। अतः ऐसी चीज़ से उसे घबराना नहीं चाहिये। क्योंकि अल्लाह तआला, परेशानियों को उन के आने से पहले ही जानता है।

लैकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि इन परेशानियों के बारे में अल्लाह के जानने और ज्ञान रखने, ने ही उस मनुष्य को परेशानी में डाला है। बल्कि यह परेशानी उन कारणों के सबब से आई है जो उसके आने पर पैदा हुये हैं।

अतः यदि वह परेशानी व्यक्ति की अपनी ग़लती और कौताही से आयी है, अर्थात उस ने उन कारणों को छोड़ दिया था जो उस को इस परेशानी में पड़ने से रोक सकते थे, और उन कारणों को प्रयोग करने से उसका दीन भी नहीं रोकता था, तो ऐसा व्यक्ति स्वयं मलामत और निंदा का हक़दार है। क्योंकि उस ने अपने आप को नहीं बचाया। और न ही वह प्राकृतिक कारण सेवन किये जो उसको बचा सकते थे।

और यदि उसके पास इस परेशानी को दूर करने की कोई शक्ति और ताक़त ही नहीं थी तो फिर वह उज्र और याचना वाला, अर्थात माज़ूर समझा जायेगा।

अतः साधन अथवा कारणों का प्रयोग तक़्दीर अथवा भरोसे के विरुद्ध या विपरीत कदापि नहीं है। बल्कि कारणों का उपयोग भरोसा का ही एक भाग है।

परन्तु जब तक़्दीर का लिखा हुआ हो ही जाये तो उस को मान लेना, और उस पर प्रसन्न रहना भी जरूरी है। ऐसी दशा में जनाब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इस फ़रमान

का सहारा लेना चाहिये : (قدر الله، وما شاء فعل) (अर्थातः अल्लाह ने ऐसा ही लिखा था, और उस ने जो चाहा वही किया।)

लैकिन जब तक तक़्दीर का लिखा आ न जाये, तब तक आदमी पर जरूरी है कि जायज़ उपाय अपनाता रहे। और तक़्दीर को तक़्दीर ही के द्वारा फेरने की कोशिश करता रहे। क्योंकि नबियों और रसूलों ने भी वह उपाय और तरीक़े अपनाये हैं जो उनको उनके शत्रुओं से बचा सकते थे। हालाँकि उनको **"वह्यी"**, प्रकाशना, और अल्लाह तआला की तरफ़ से हिफ़ाजत किये जाने के द्वारा, अल्लाह का समर्थन प्राप्त और हासिल था। स्वयं हमारे नबी जनाब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अस्बाब और कारण अपनाये हैं। हालाँकि आप से अधिक भरोसा करने वाला कोन हो सकता है।? आप का भरोसा अल्लाह तआला पर अत्यन्त शक्तिशाली था। अल्लाह पाक का फ़रमान हैः

﴿ وَأَعِدُّواْ لَهُم مَّا ٱسْتَطَعْتُم مِّن قُوَّةٍ وَمِن رِّبَاطِ ٱلْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِۦ عَدُوَّ ٱللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ ﴾ [الأنفال، الآية: ٦٠].

अनुवादः "और उनके लिये, जितना हो सके उतनी शक्ति तैयार कर लो। तथा घोड़े तैयार रखने की भी। ताकि उस से तुम, अल्लाह के शत्रु तथा अपने शत्रु को भयभीत कर सको।"

(अनफाल, आयतः 60)

और फ़रमायाः

﴿ هُوَ ٱلَّذِى جَعَلَ لَكُمُ ٱلْأَرْضَ ذَلُولًا فَٱمْشُواْ فِى مَنَاكِبِهَا وَكُلُواْ مِن رِّزْقِهِۦ ۖ وَإِلَيْهِ ٱلنُّشُورُ ﴿١٥﴾ ﴾ [الملك، الآية: ١٥].

अनुवादः “उसी ने तुम्हारे लिये धरती को अधीन बनाया, ताकि तुम उसके मार्गों पर आवागमन करते रहो। और उसकी प्रदान की हुई रोज़ी को खाओ-पिओ। फिर उसी की ओर उठकर जाना है।” (मुल्क, आयतः 15)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः

(المؤمن القوي خير وأحب إلى الله من المؤمن الضعيف، وفي كل خير، احرص على ما ينفعك واستعن بالله ولا تعجز، وإن أصابك شيء فلا تقل: لو أني فعلت كذا لكان كذا وكذا، ولكن قل: قدر الله، وما شاء فعل، فإن لو تفتح عمل الشيطان) [رواه مسلم]

अनुवादः (अल्लाह के समीप, शक्तिशाली मुमिन, कमज़ोर मुमिन से अधिक अच्छा और प्रिय है। वैसे दोनों में ही भलाई है। अपने लिये लाभदायक चीज़ पर लालसी रहो। और अल्लाह से सहायता माँगो। तथा विवस न बन जाओ। यदि कोई हानि पहुँच जाये तो यह न कहोः यदि मैं ऐसा करता तो ऐस-ऐसा हो जाता। बल्कि यह कहोः अल्लाह ने ऐसा ही लिखा था, उस ने जो चाहा वही किया। क्योंकि "अगर-मगर" और "यदि" का शब्द, शैतान का काम आरम्भ कर देता है।) (सहीह मुस्लिम)

(15)
तक़्दीर का इनकार करने वाले का हुक्म।

जो तक़्दीर का इनकार करता है, मानो वह शरीअत के एक सिद्धान्त का इनकार करता है।

सलफ़ *(अर्थातः पिछले नैक लोग)* में से किसी ने फ़रमाया किः जो तक़्दीर का इनकार करते हैं, उन से अल्लाह के ***ज्ञान*** के द्वारा मुनाजरा (प्रयालोचन) किया जाये। यदि वह ज्ञान को नहीं मानते और स्वीकार नहीं करते हैं, तो वह काफ़िर और

नास्तिक हैं। और यदि वह उसको मान लेते हैं, तो उनके पास कोई हुज्जत व तर्क ही बाक़ी नहीं रह जाती है।

(16)
तक़्दीर पर ईमान रखने के फल और लाभ।

तक़्दीर व निर्णय पर ईमान रखने के अच्छे अच्छे फल और लाभ हैं। वह उम्मत तथा मनुष्य के अन्दर अच्छाई और भलाई पैदा करते हैं। इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं:

क- इसके फलस्वरूप अच्छी इबादतें तथा अच्छे स्वभाव और आदतें पैदा होती हैं।

जैसे: अल्लाह के लिये "इख़्लास" और निर्मलता, केवल उसी पर भरोसा, उस से डर, आशा, उसके बारे में अच्छा गुमान और नैक भर्म, धैर्य, निराशा और नाउम्मीदी से मुक़ाबला, अल्लाह से प्रसन्नता, उसका शुक्र और धन्यवाद, उसकी रहमत से खुशी, नम्रता, तथा घमँड न करना।

इसी प्रकार, अल्लाह पर भरोसा करते हुये, अच्छाई के रास्तों में ख़र्च करना, बहादुरी, खुद्दारी, "क़नाअ़त" और निस्पृहता, ऊँचा साहस, हौशियारी, महनत व परिश्रम, खुशी और ग़मी में मियाना रवी, हसद व घृणा से सलामती, झूठी और मनघड़त बातों से बुद्धि को मुक्ति और आज़ादी, तथा आत्मा का आराम व सुकून और दिल का चैन आदि ।

ख- तक़्दीर पर ईमान रखने वाला सीधे रास्ते पर चलता है। वह किसी निअ़मत पर इतराता नहीं। और परेशानी से निराश नहीं होता। उसका यह यक़ीन होता है कि जो परेशानी उस पर आयी है वह अल्लाह तआ़ला की ओर से उस के लिये परीक्षा और इम्तिहान है। इसलिये वह घबराता नहीं। बल्कि

उस पर सब्र और धैर्य रखता है। तथा यह आशा रखता है कि अल्लाह तआला इसका बदला आख़िरत में उसको जरूर देगा।

ग- यह, गुमराही के कारणों और बुरे अन्त से बचाता है। क्योंकि यह मनुष्य के अन्दर, सहीह रास्ते पर लगे रहने, अधिक से अधिक नैकियाँ और भलाईयाँ करते रहने तथा बुराईयों से बचते रहने की धुन और लगन पैदा कर देता है।

घ- यह मुमिनों को, परेशानियों और कठिनाईयों का, मजबूत दिल तथा -अस्बाब प्रयोग करने के साथ साथ-, पूर्ण यक़ीन व विश्वास के द्वारा, मुक़ाबला करना सिखाता है।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रमाते हैं:

(عجبًا لأمر المؤمن! إن أمره كله خير، وليس ذلك إلا للمؤمن، إن أصابته سرّاء شكر، فكان خيرا له، وإن أصابته ضرّاء صبر، فكان خيرا له)
[رواه مسلم]

अनुवादः (मुमिन के हाल पर आश्चर्य है! उसका सारा ही मुआमला अच्छा है। और यह केवल मुमिन के साथ विशेष है। यदि उसे कोई ख़ुशी प्राप्त होती है, तो अल्लाह का शुक्र अदा करता है। तो यह चीज़ उसके लिये अच्छी होती है।

और यदि उसे कोई परेशानी पहुँचती है, तो सब्र से काम लेता है। और यह चीज़ भी उसके लिये अच्छी ही होती है।)

(सहीह मुस्लिम)

विषय सूची

विषय पृष्ठ

Musharrafi/1/424 H./4/003A.
Madina